अग्रोहा तीर्थ

सामाजिक चेतना का प्रगतिशील हिन्दी मासिक

स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल स्मृति विशेषांक

वर्ष १६ | जून-जौलाई १९८४ | अंक ६-७

स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल
जन्म १० जून, १९०० ★ अवसान ३ दिसम्बर, १९८३

अग्रवाल समाज की महान विभूति
कर्मठ समाज सेवी
अग्रवाल रत्न

अच्छा बुरा बस नाम ही
रहता सदा इस लोक में।
वह धन्य हैं जिसके लिये
हों लीन सज्जन शोक में॥

卐

शुभ
कामनाओं
सहित

आज की बचत *भविष्य की आवश्यकता*

विश्वसनीय एवं सुरक्षित
बचत का माध्यम

दूरभाष : ७७३१०४

मानव चिट फण्ड (प्रा.) लि.

१८, न्यू कालोनी, माडल बस्ती, नई दिल्ली-११०००५

अग्रोहा तीर्थ

वैश्य अग्रवाल समाज की

सामाजिक चेतना का प्रगतिशील हिन्दी मासिक

संस्थापक

स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल

● संरक्षक

लाला राजेन्द्रलाल जी

श्री बनारसी दास गुप्त

लाला केदार नाथ मोदी

श्री गौर हरि सिंधानियां

श्री बिशन स्वरुप गुप्ता

श्री राधाकृष्ण गुप्ता चश्मे वाले

श्री गिरी लाल गुप्ता

● परामर्शक

घनश्यामदास गुप्ता

२३ बेनजीर क्वाटर, परिबाजार, भोपाल

इन्द्रराज सिंह अग्रवाल

४८ माडल बस्ती, नई दिल्ली-५

● परामर्शक सम्पादक

सुदर्शन कुमार सवारा

ए-२/१०० सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली

फोन : ६०८३५८

● अतिथि सम्पादक

विष्णुचन्द्र गुप्त

१५९२/११३ त्रिनगर, दिल्ली-३५

फोन : ७१२५२६७

● संचालक व सम्पादक

चन्द्रमोहन गुप्ता

४४२१ नई सड़क, दिल्ली-११०००६

दूरभाष : ७१२७९२४

● सहयोगी

गोविन्द प्रसाद

● आजीवन शुल्क रु० १२१/-

● वार्षिक शुल्क रु० १५/-

● एक प्रति रु० १/५०

स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल में स्मृति विशेषांक

● सन्देश

● स्व० मास्टर जी के सम्बन्ध में विचार

- संस्मरण
- श्रद्धाँजलियाँ

● सचित्र गतिविधियाँ

● वंशावली (मास्टर जी)

● कवितायें

एवं

समस्त स्तम्भ पूर्ववत

- अग्रोहा का प्राचीन वैभव
- महाराजा अग्रसेन के शिलालेख व ताम्रपत्र
- शुभकामना एवं बधाई
- समाचार जगत
- जल्ती दुल्हन—नौवी किश्त (धारावाहिक)
- मनोरंजन
- स्वास्थ्य चर्चा
- व्यक्ति परिचय
- संस्था समाचार (चुनाव)
- विवाह योग्य लड़के-लड़कियाँ

अगला अंक

अगस्त अंक के लिए राष्ट्रीय रचनायें (कविता, लेख) यथाशीघ्र भेजियेगा।

—सम्पादक

Phone : 712—1361

STUDIO

BANGA

25—1/9, SHAKTI NAGAR, DELHI-110007

For Video Recording
and
Colonr Printing

With best compliments from :

B. L. & SONS

44, 1st Floor, Raghushri,
Ajmeri Gate, DELHI-110006

Manufacturers of :

P. V. C. Compound & Power Cables

Tele : 266275, 262845

सम्पादकीय

कार्य स्थल को वे कभी नहीं पूछते वह है कहाँ ?
कर दिखाते है असम्भव को वही सम्भव यहाँ ।।

स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल जी ने जब समाज सेवा का बीड़ा उठाया तो कौन जानता था कि उनके द्वारा आरोपित सामाजिक चेतना के बीज एक ऐसे विशाल वट-वृक्ष का रूप ले लेंगे, जो भविष्य में सामाजिक सुरक्षा, प्रेम सहयोग एवं संगठन का सम्बल बनेंगे । अग्रोहा का विकास जयन्तियों का संक्षिप्त आयोजन, वैश्य बैंक का छोटा सा संगठन, एक अग्रवाल भवन के निर्माण की प्रेरणा, हरिद्वार में आश्रम, सहायता शिविर, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन बीज रूप में प्रारम्भ होकर आज विशालत्तम रूप प्राप्त कर चुके हैं ।

किसी कार्य को कैसे, कब और क्यों करना है उसके अनुरुप साथियों एवं स्थान का चयन, आने वाली बाधाओं का निराकरण कर असम्भव को सम्भव बनाना मास्टर जी की अपनी विशेषता थी ।

सन् १९६८ से अग्रोहा तीर्थ मासिक का प्रकाशन कर मास्टर जी ने सामाजिक संगठन, कुरीति निवारण एवं पारस्परिक सहयोग के लिए अग्रवाल समाज को प्रेरित किया ।

अग्रोहा तीर्थ मासिक का यह स्मृति विशेषांक उनके द्वारा की गई समाज सेवा एवं उनके सामाजिक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालता है । मास्टर जी ने जिन महानुभावों के साथ समाज कार्य किया है अथवा जिन्होंने उनके कार्यों का निकट से मूल्यांकन किया है उनके द्वारा विचारणीय एवं प्रेरक सामग्री इस अंक में देने का प्रयत्न किया गया है । यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि यह प्रकाशन सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के लिये प्रेरक व दिशा निर्देशक होगा ।

अन्त में मैं उन सभी महानुभावों का आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने इस अंक के प्रकाशन में विज्ञापन के माध्यम से आर्थिक सहयोग दिया तथा लेखों एवं विचारों के माध्यम से मास्टर जी के व्यक्तित्व को उजागर किया है । अत्यन्त अल्प समय और साधनों के अभाव में इस अंक के प्रकाशन में त्रुटियाँ रह जाना स्वाभाविक है । कृपालु पाठकों से निवेदन है कि इस अंक के प्रति अपनी सम्मति एवं सुझाव भेजने की कृपा करें । ●

चन्द्रमोहन गोयल

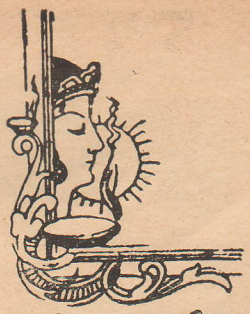

with Best Compliments
from:-

DEEPAK AGENCIES — Cycle & Cycle Parts Dealer
477-Esplanade Road,
Delhi-110006
Phone : 270334

JINDAL ENTERPRISES — AMBAY CYCLE LOCKS
DELHI-110006 — SOLE DISTRIBUTORS OF INDIA

JHANKAR VIDEO CENTRE — VIDEO CASSETE LIBRARY
24/26-Shakti Nagar, DELHI-110007
Phone : 7114665

SWASTIK LOTTERY AGENCIES — Lottery Organisers
DELHI-110007
Phone : 7114665

JASMINE & CO. — Lottery Organisers
Regal Building, Connaught Place
New Delhi-110001
Phone : 311208

Satya Narain Jindal (Sattu Babu)

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन

शोक प्रस्ताव

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन का कलकत्ता में आयोजित यह अष्टम अधिवेशन व्योवृद्ध समाज सेवी मास्टर लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल, दिल्ली के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता है।

परम-पिता-परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करें और परिवार के सदस्यों को यह विछोह सहन करने की शक्ति प्रदान करें। ●

रामेश्वर दास गुप्ता
महामन्त्री

दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन

शोक प्रस्ताव

दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाज सम्मेलन की अतरंग समिति सुविख्यात समाज सेवी मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल के देहावसान पर गहरा शोक व्यक्त करती है और परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करती हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवार एवं इष्ट मित्रों को शान्ति दें ताकि वे इस सामाजिक क्षति को धैर्यपूर्वक सहन कर सकें।

मास्टर लक्ष्मी नारायण जी का समस्त जीवन समाज हित के लिये समर्पित रहा है। उन्होंने समाज की जो सेवा की है, उसके लिये हम सदैव उनके ऋणी रहेंगे

शिव प्रकाश गुप्ता
मन्त्री

बंसल गोत्रीय स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल

वंशावली

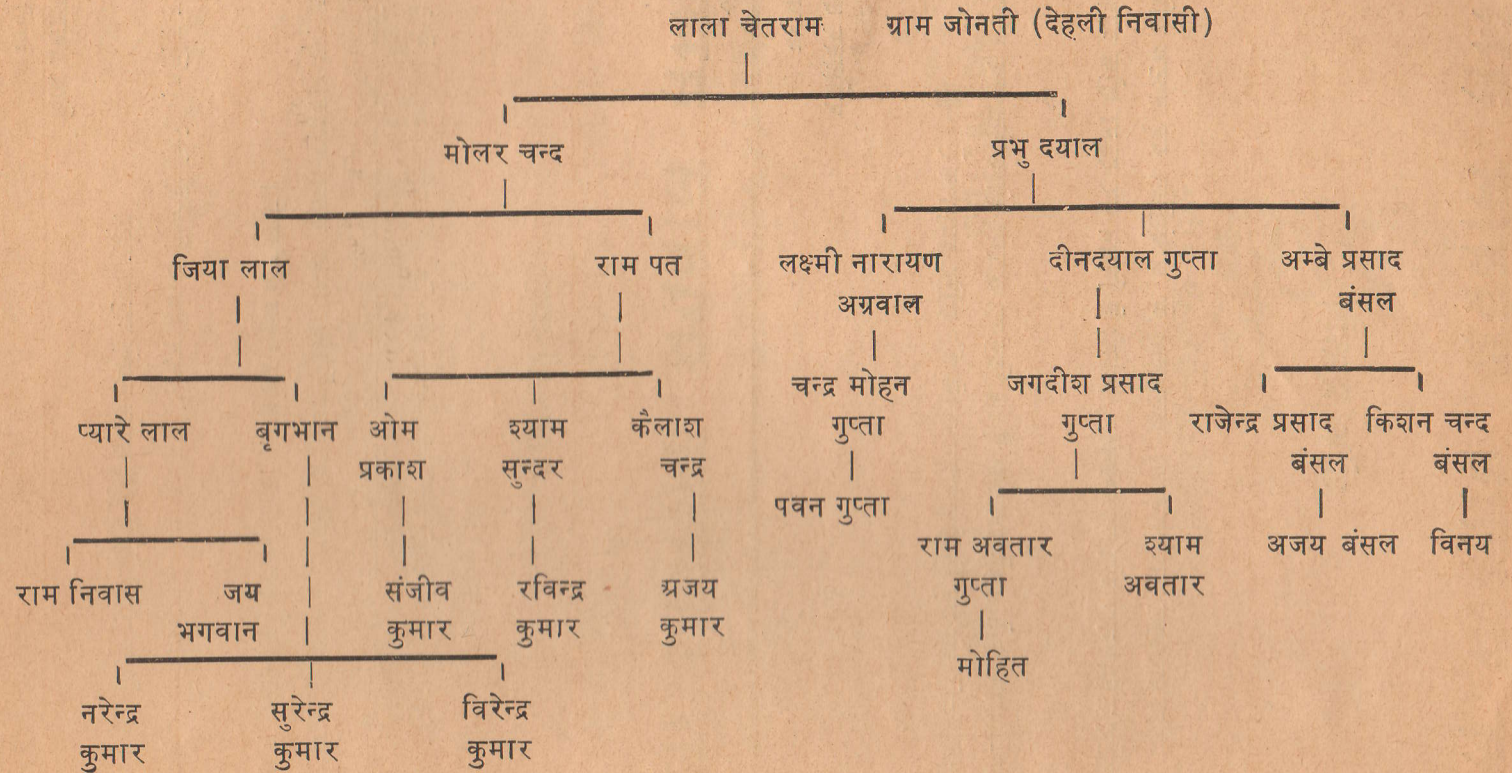

KEDAR NATH MODI
CHAIRMAN
MODI ENTERPRISES
Modi Nagar, U.p.

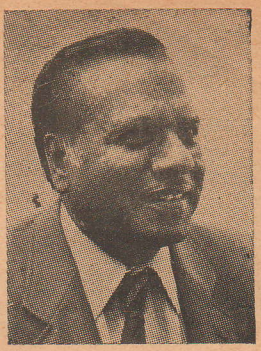

Message

I am happy to note that Agroha Tirath is bringnig out a Special Memorial Issue on the occasion of 85th Birth Anniversary of Master Laxmi-Narain Agarwal.

Shri Agarwal was a great social worker and was instrumental in establishing a number of educational institutions, Ashrams and Cooperative Societies for the welfare of Society.

I wish the Journal all success.

Sd/- K. N. MODI

बिशन स्वरुप गुप्ता
संरक्षक, अग्रोहा तीर्थ, (मासिक)
२६/१०६, शक्ति नगर, दिल्ली-७

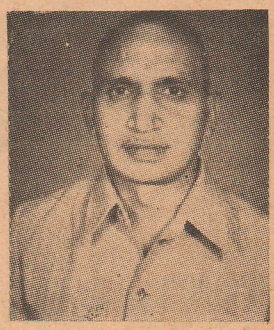

संदेश

स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल से मेरा परिचय बचपन से ही हो गया था। उन्होंने ऐसे समय में समाज कार्य प्रारम्भ किया जब लोग इसकी ओर ध्यान नहीं देते थे। वे दूरदर्शी एवं कर्मठ समाज सेवी थे। जिस कार्य को हाथ में लेते थे उसे तन, मन, धन से पूरी शक्ति लगाकर पूरा करते थे। पाँच- सात लोगों को लेकर अग्रसेन जयन्ती को मनाना प्रारम्भ किया जिसका आज देश भर में विस्तार हो गया। १४ सदस्यों से वैश्य को-आपरेटिव बैंक की स्थापना की जिमकी संख्या आज बढ़ कर २६०० हो गई। शक्ति नगर में अग्रवाल भवन का निर्माण किया और आज अकेले दिल्ली में १५ से ज्यादा अग्रवाल भवन बन गये। अग्रोहा तीर्थ मासिक का प्रकाशन किया तो आज सैकड़ों अग्रवाल पत्र-पत्रिकाऐं अग्रवाल संगठन को बल प्रदान करने लगी। इसी प्रकार स्व० मास्टर जी अग्रवाल समाज के मार्ग-दर्शक, प्रेरक और महान नेता के रूप में सदैव स्मरण किये जाते रहेंगे।

असहायों की सहायता, विधवा सहायता, रोजगार सहायता, निर्धन कन्या विवाह, वैवाहिक सूचना केन्द्र, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजनों में दानी महानुभावों का भरपूर सहयोग मिलना अग्रवाल समाज के सम्पन्न लोगों में उनकी विश्वसनीयता का प्रतीक है। ईश्वर हमें प्रेरणा दें कि हम समाज कायों में संलग्न रहें। ●

ह० बिशन स्वरुप गुप्ता

गिरी लाल गुप्ता
संरक्षक—अग्रोहा तीर्थ, (मासिक)
त्रिनगर, दिल्ली-३५

संदेश

स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल का नाम वर्तमान पीढ़ी के अग्रवाल सामाजिक कार्य-कर्त्ताओं में विशेष रूप से चर्चित है। उन्होंने युवावस्था से लेकर अन्तिम सांस तक अपना जीवन अग्रवाल समाज के लिए समर्पित कर दिया। वे अग्रवाल समाज के मिश्नरी थे। जहाँ कहीं आते जाते, जिस किसी से भी मिलते अग्रवाल समाज का हित संगठन, सहयोग लेना और दिलाना आदि विषयों पर वे चर्चा अवश्य करते थे। उनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा प्रभाव था कि लोग उनकी दिशा-निर्देशानुसार दान तथा अन्य सहयोग प्रदान करने के लिये तुरन्त तैयार हो जाते थे। इसका कारण उनकी निःस्वार्थ समाज सेवा की भावना ही था। अग्रोहा तीर्थ मासिक का प्रकाशन भी उन्होंने सामाजिक चेतना, पारस्परिक सहयोग एवं संगठन, कुरीति निवारण आदि भावनाओं से प्रेरित होकर ही किया था। अग्रोहा तीर्थ मासिक उनकी भावनाओं के अनुसार सशक्त और प्रभावी रूप में प्रकाशित होता रहे यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाँजली होगी। ●

ह० गिरी लाल गुप्ता

राधाकृष्ण गुप्ता
संरक्षक, अग्रोहा तीर्थ, (मासिक)
१११- माडल बस्ती, नई दिल्ली-५
दूरभाष : ७७०७७५. ७७३२५१

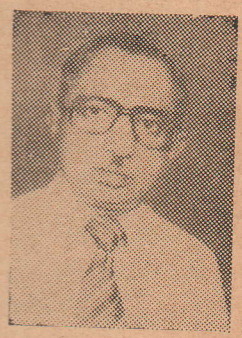

संदेश

मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल को गणना अग्रवाल समाज के महान सेनानियों में सदैव की जातीरहेगी। उन्होंने अग्रवाल समाज को संगठित कर जाति के प्रति स्वाभिमान जागृत करने का महान कार्य किया। अग्रवाल समाज के दानी महानुभावों को विभिन्न प्रकार से समाज हित कार्यक्रमों में दान देने के लिये प्रोत्साहित किया। जैसे अग्रवाल भवनों का निर्माण, अग्रवाल औषधालय, निर्धन छात्र सहायता, निर्धन कन्याओं के विवाह एवं असहाय बन्धुओं की सहायता और रोजगार की व्यवस्था आदि अनेक कार्य सम्मिलित किये जा सकते है। किसी भी कार्य को प्रारम्भ करना, उसके लिए भावना जागृत करना, दिशा व मार्ग दर्शन देना बहुत महत्व का कार्य है। स्वर्गीय मास्टर जी ने अपने कार्य क्रमों में अग्रवाल समाज की सेवार्थ दिशानिर्देशन का कार्य किया है। अतः उनकी स्मृति समाज के लिये सदैव बनी रहेंगी। उनके द्वारा किये गए कार्यों से हम प्रेरणा लें यही उनके प्रति श्रद्धाँजलि होगी। ●

ह० राधाकृष्ण गुप्ता

पुरुषोत्तम गोयल
अध्यक्ष, महानगर परिषद्, दिल्ली

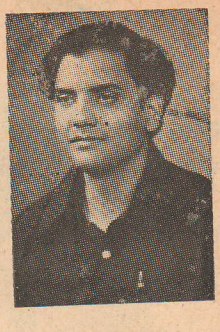

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि अग्रोहा तीर्थ मासिक पत्रिका की ओर से स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल जी की स्मृति में उनके ८५वें जन्म दिवस के अवसर पर एक विशेषांक प्रकाशित करने का आयोजन किया जा रहा हैं।

श्री लक्ष्मी नारायण अग्रवाल न केवल वैश्य समाज की प्रगति के लिए आजीवन सक्रिय रहे बल्कि उन्होंने विविध संस्थाओं आदि की स्थापना करते हुए सामाजिक चेतना के विकास में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। निश्चय ही ऐसे यशस्वी व्यक्ति जो अपने आदर्शों के प्रति हमेशा निष्ठापूर्वक समर्पित रहे, की स्मृति में विशेषांक का प्रकाशन उनके प्रति सराहनीय प्रयास है।

मैं इस अवसर पर अपनी समस्त शुभकामनाएँ अर्पित करता हूँ। ●

भवदीय
ह० पुरुषोत्तम गोयल

चन्द्रमोहन गुप्ता
सम्पादक, अग्रोहा तीर्थ,
४४२१, नई सड़क, दिल्ली

बलवन्तराय तायल
भू० पू० वित्तमन्त्री, हरियाणा

हिसार
दूरभाष : २४०३

संदेश

मास्टर लक्ष्मी नारायण जी अग्रोहा में उस समय आया करते थे जब अग्रोहा एक मामूली गांव था और उस का नाम सिवाए चन्द अग्रवालों के और कोई नहीं जानता था। उन्होंने बड़ी मेहनत से और लग्न से कुछ साथियों को इकट्ठा किया और समाचार पत्रों के माध्यम से प्रचार करके अग्रोहा का नाम हिन्दुस्तान के नक्शे पर लाये। उनकी यह योजना थी कि अग्रोहा में इंजीनियरिंग कालेज बने ताकि यह उजड़ा हुआ ऐतिहासिक शहर दोबारा आबाद हो जाये। उसके लिए उन्होंने जमीन भी ली लेकिन सेहत और उमर ने उनका साथ नहीं दिया, इसलिए वे स्वयं तो अपना स्वप्न पूरा न कर सके परन्तु आज अग्रोहा में जो निर्माण कार्य हो रहा है वह उन्हीं की बुनियाद पर है। इसलिए कोई महान व्यक्ति समाज में पैदा होते है जो समाज को रास्ता दिखा कर चले जाते है। उनमें मास्टर लक्ष्मी नारायण जी भी एक थे। आप उनकी स्मृति में विशेषांक का प्रकाशन कर रहे हैं इसकी सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ।

चन्द्र मोहन गुप्ता
सम्पादक, अग्रोहा तीर्थ,
४४२१, नई सड़क, दिल्ली-६

भवदीय
ह० **बलवन्तराय तायल**

निगम बोध घाट पर स्व० मास्टर जी को पुष्पांजलि समर्पण

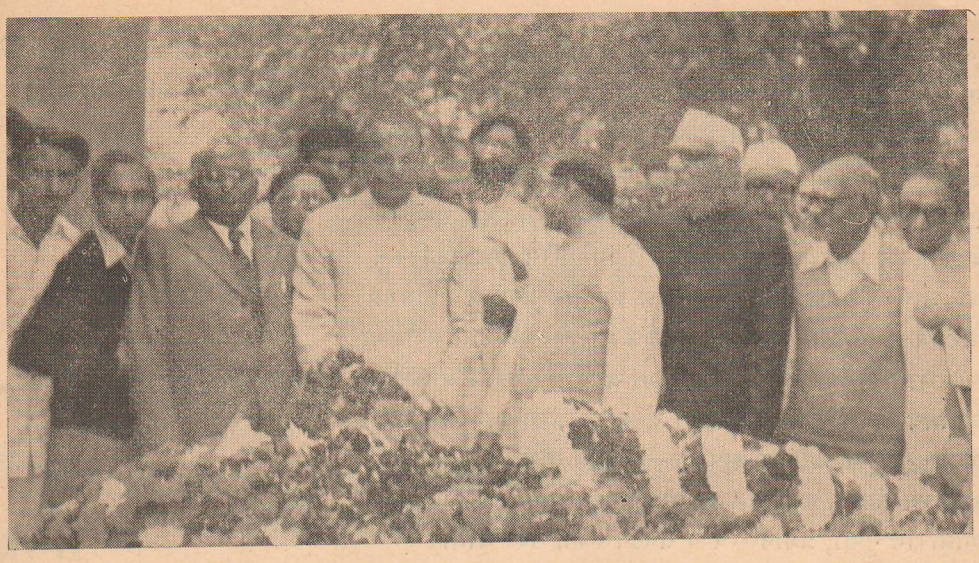

स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल

एक प्रेरक व्यक्तित्व जो अनन्त में लीन हो गया

अखिल भारतीय ख्याति के नेता, दिल्ली की विभूति, अग्रवाल समाज के अग्रणी नेता वैश्य को-आपरेटिव कर्माशियल बैंक, नई सड़क एवं अग्रवाल भवन ट्रस्ट शक्तिनगर के संस्थापक-मंत्री, अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा एवं अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टैकनिकल सोसाइटी अग्रोहा, महाराजा अग्रसेन अग्रवाल आश्रम ट्रस्ट हरिद्वार के मत्री, अ ग्रोहा तीर्थ मासिक एवं लक्ष्मी विवाह केन्द्र के संस्थापक मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल के निधन से अग्रवाल समाज का एक प्रेरक व्यक्तित्व अनन्त में लीन हो गया।

स्वर्गीय मास्टर जी जीवन पर्यन्त निःस्वार्थ भाव से अग्रवाल समाज की सेवा में संलग्न रहे। उन्होंने अनेक सामाजिक संस्थाओं का गठन किया। अनेकों कार्यकर्ताओं को प्रेरणा दी। अग्रवाल समाज को संगठित कर अग्रसेन जयन्तियों के आयोजन प्रारम्भ किए। अग्रवालों के नाम से जन हित-कारी योजनाओं का सूत्र-पात किया। कृतज्ञ समाज उनकी सेवाओं से सदा प्रेरणा प्राप्त करता रहेगा।

अनगिनत राही गए इस राह से, उनका पता क्या,
पर गए कुछ लोग इस पर छोड़ पैरों की निशानी।

स्वर्गीय मास्टर जी द्वारा अग्रवाल समाज के लिए दिया गया मार्ग-दर्शन हम सबके लिए प्रेरक हो तथा हम समाज़ सेवा में लगें यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाँजलि होगी।

—विष्णु चन्द्र गुप्त
महामन्त्री—श्री अग्रसेन समिति, दिल्ली
१५९२/११३ त्रिनगर, दिल्ली-११००३५

पुष्प-श्रद्धाँजलियाँ

स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल के शव पर दिनाँक ३ दिसम्बर ८३ को निगम-बोध घाट पर अनेक संस्थाओं एवं सामाजिक नेताओं, कार्यकर्त्ताओं एवं शुभ चिन्तकों की ओर से पुष्प-श्रद्धाँजलियाँ अर्पित की गई।

१. श्री रामेश्वर दास गुप्त, महामन्त्री, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन
२. " इन्द्रराजसिंह अग्रवाल-प्रधान, दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन
३. " पुरुषोत्तम गर्ग, प्रधान—अखिल भारतीय युवा अग्रवाल सम्मेलन
४. " देवकीनन्दन गुप्ता, प्रधान—अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टैकनिकल सोसाइटी, अग्रोहा
५. " जे० आर० जिन्दल, प्रधान—अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा
६. " निरंजनलाल गौतम, महामन्त्री अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा
७. " प्यारेलाल गोयल, प्रधान—महाराजा अग्रसेन अग्रवाल आश्रम ट्रस्ट हरिद्वार
८. " जगन्नाथ गोयल मन्त्री—अग्रवाल भवन ट्रस्ट, शक्तिनगर, दिल्ली
९. " विष्णुचन्द्र गुप्त, अतिथि सम्पादक—अग्रोहा तीर्थ
१०. " जयकरण सिंहल, संरक्षक—अग्रवाल समाज त्रिनगर
११. " ग्यासीराम गुप्ता, प्रधान—वैश्य संगठन सभा, सदर बाजार
१२. " रामकवांर गुप्ता, प्रधान—महाराजा अग्रसेन ट्रस्ट, बहादुरगढ़
१३. " दीवानचन्द बंसल, प्रधान—वैश्व को-आपरेटिव कमर्शियल बैंक, नई सड़क
१४. " नरसिंह दास गुप्ता, नगर निगम पार्षद, शक्तिनगर क्षेत्र
१५. " राधेश्याम गुप्ता, शक्तिनगर ब्लाक काँग्रेस (ई) कमेटी
१६. " बलराज प्रेमी, मन्त्री—अग्रवाल सभा करोल बाग
१७. " बिशन स्वरुप पटवारी, अतरंग मित्र एवं सहयोगी
१८. " रतनलाल गुप्ता, प्रधान—वैश्य सभा, दक्षिणो दिल्ली
१९. " लक्ष्मी नारायण एडवोकेट, प्रधान—वैश्य एकता ट्रस्ट
२०. " श्यामाचरण गुप्ता, भू०पू० अध्यक्ष दिल्ली महानगर परिषद
२१. " चरतीलाल गोयल, एडवोकेट भू० पू० सदस्य महानगर परिषद
२२. " तनसुख राम गुप्त, इंजीनियरिंग एण्ड टैक्नीकल कालेज सोसाइटी, अग्रोहा
२३. " रामावतार आर्य, महामन्त्री—अखिल भारतीय महावर वैश्य महासभा
२४. " प्रह्लादराय गुप्ता, वैश्य एजूकेशन सोसाईटी, रोहतक
२५. " दयानन्द गुप्ता, उद्योगपति
२६. " हरीचन्द अग्रवाल, महामन्त्री—वैश्य युवक समाज शक्तिनगर
२७. " वेद प्रकाश गुप्ता, प्रधान—महाराजा अग्रसेन समाज सेवा सदन
२८. " कुलानन्द भारतीय, कार्यकारी पार्षद, दिल्ली महानगर परिषद
२९. " चन्द्रदेव चौधरी, महामन्त्री—दिल्ली पेपर मर्चेन्ट्स एशोसियेशन
३०. " आर० एस० गुप्ता, प्रधान—शिव मन्दिर, शक्तिनगर
३१. " बृजभूषण गुप्ता, मन्त्री—अग्रवाल सभा विवेकानन्द पुरी, दिल्ली
३२. " छुट्टनलाल गुप्ता, अन्तरंग मित्र एवं सहयोगी

मास्टर जी को जैसा मैंने जाना

बनारसी दास गुप्त
भू० पू० मुख्यमन्त्री
हरियाणा

विजय नगर, भिवानी
दूरभाष : २११७

मास्टर लक्ष्मी नारायण जी से मेरा परिचय लगभग २० वर्ष पूर्व हुआ था। जब वह अग्रोहा में अग्रवाल समाज के प्रवर्त्तक महाराजा अग्रसेन की स्मृति में एक इंजीनियरिंग कालेज बनाने के कार्य में संलग्न थे। इस महान सामाजिक कार्य को सिरे चढ़ाने के लिये मास्टर जी ने सर तोड़ प्रयास किया। उसी संदर्भ में मा० लक्ष्मी नारायण जी भिवानी आये थे और मुझ से भी मिले थे। उस समय उनके सान्निध्य में आने का अवसर मिला तो पता चला कि वह बड़े लग्नशील, परिश्रमी एवं निष्ठावान समाजसेवी हैं। उन्होंने न केवल हरियाणा में बल्कि देश के अन्य स्थानों में जाकर अग्रवाल समाज के व्यक्तियों में सामाजिक भावना को जागृत किया और समाज को संगठित बनाकर जहाँ कुरीतियों के निवारण के लिये कार्य किया वहां स्थान-स्थान पर अग्रसेन जयन्ती मनाने का प्रचलन आरम्भ किया। आज समस्त देश में जो अग्रसेन जयन्ती मनाने का सिलसिला आरम्भ हुआ है उसमें सर्वाधिक योगदान मास्टर जी का है।

मास्टर जी ने महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग कालेज का निर्माण करने के लिये एक सोसायटी की स्थापना की और इस सोसायटी के नाम से अग्रोहा में भूमि की भी खरीद की। परन्तु समाज की ओर से पूरा सहयोग न मिलने के कारण श्री महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग कालेज के निर्माण का उनका स्वप्न साकार नहीं हो पाया। परन्तु मास्टर थी द्वारा अधिग्रहण की गई भूमि पर ही अब अग्रोहा तीर्थ के निर्माण का कार्य चल रहा है। इसलिये अग्रोहा में जो कुछ आज विकास का कार्य हो रहा है, इसका सूत्र-पात करने का श्रेय मास्टर जी को ही जाता है।

दुर्भाग्य से मास्टर लक्ष्मी नारायण जी अब हमारे मध्य नहीं रहे। गत वर्ष वह ब्रह्मलीन हो गये। परन्तु जब तक वे जीवित रहे समाज के उत्थान और अग्रोहा के विकास में ही लगे रहे। मास्टर जी एक कर्मठ एवं बेलाग सामाजिक नेता थे। उनके द्वारा आरम्भ किये गये समाज-हित के कार्य जो अभी अधूरे हैं उनको पूरा करने में सहयोग देना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

Phones : Factory : 7127334, 7123497
Resi. : 7119716, 7113240

SHYAM PLASTICS

B-10/5, GROUP INDUSTRIAL AREA, WAZIRPUR,
DELHI - 110052

Manufacturers of :

ALL KINDS OF

P. V. C. FOOT WEARS

—Jai Karan Singhal
Ram Kishan Singhal

बंसी लाल चौहान
कार्यकारी पार्षद (स्वास्थ्य)
दिल्ली प्रशासन, दिल्ली
सं० का० पा० (स्वा०) ८४/१०४२

सत्यमेव जयते

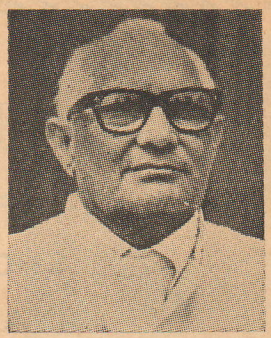

संदेश

प्रिय महोदय श्री चन्द्रमोहन जो,

मैं ला० लक्ष्मी नारायण जी को लगभग तीस वर्ष से जानता था समाज सेवा में उनकी निरन्तर आस्था ने मुझे अत्याधिक प्रभावित किया था। वे सदा ही निराश्रित, अनाथ और विधवाओं की सेवा और सहायता में संलग्न रहते थे। उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था कि उनका रोम-रोम समाज के काम आए। समाज सेवा हेतु उन्हें प्रतिक्षण राष्ट्रहित भी ध्यान में रहता था। शुद्ध खद्दर में सरल स्वभाव के साथ उनका सादा जीवन सभी पर अपनी छाप छोड़ता था।

अग्रवाल समाज के तो वे कर्णाधार थे। उन्होंने अग्रवाल समाज के हितार्थ अनेक संस्थाओं के उत्कर्ष में अपना पूर्ण योगदान दिया था, यथा अग्रवाल भवन, शक्ति नगर, महाराजा अग्रसेन आश्रम हरिद्वार एवं महाराजा अग्रसेन मन्दिर, अग्रोहा आदि। उनका प्रत्येक कार्य समाज के स्वाभिमान और गौरव के उत्कर्ष हेतु ही होता था। समाज हितार्थ उन्होंने एक 'मैरेज ब्यूरो'' भी चला रखा था, जिसने सैकड़ों लोगों ने लाभ उठाया।

जीवन के अन्तिम दो वर्षों में वे अत्यन्त दुर्बल हो गये थे। परन्तु उनमें उत्साह इतना अधिक था कि रूग्ण होते हुए भी समारोहों में अवश्य पहुंचते थे। उन्होंने अन्तिम क्षणों तक भी समाज हित को भुलाया नहीं। वास्तव में वे समाज के लिए समर्पित थे। यही कारण था कि आबालवृद्ध सभी उनको अत्यधिक सम्मान देते थे।

आज उनकी केवल स्मृति मात्र रह गई है परन्तु मेरी हार्दिक कामना है कि समाज उनके पदचिन्हों पर चलकर उनकी स्मृति को स्थायित्व प्रदान करें। मैं उनके प्रति अपनी भावसुमनाँजलि अर्पित करता हूं। ●

ह० बंसी लाल चौहान

GOLDEN OPPORTUNITY

FOR THE ORIGINAL BOOKING OF
SHOPS/RESTAURANT/OFFICE SPACE
AVAILABLE ON ATTRACTIVE TERMS

FROM THE HOUSE OF

MOHAN'S

IN

D.D.A., APPROVED COMMERCIAL COMPLEX

MOHAN BAZAR

A MODERN & POSH SHOPPING CENTRE AT DEEP CINEMA COMPLEX, ASHOK VIHAR PHASE-1. DELHI-110052.

MOHAN COMPLEX

LOCAL SHOPPING CENTRE, H-BLOCK ASHOK VIHAR PHASE-I, DELHI-110052.

MOHAN TOWAR

A PROMINENT & ATTRACTIVE SHOPPING/OFFICE COMPLEX, WAZIRPUR INDL. AREA, ON MAIN RING ROAD DELHI-110052.

FOR BOOKING CONTACT

On any working day at Site Office or Registered Office

8C/3, W.E.A., Karol Bagh, New Delhi-110005

Ph. 568137

A PROJECT OF

MOHAN CONSTRUCTION COMPANY

ENGINEERS & CONTRACTORS

कुलानन्द भारतीय
कार्यकारी पार्षद (शिक्षा)
दिल्ली प्रशासन, दिल्ली

संदेश

मुझे यह जान कर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल की स्मृति में मासिक पत्रिका "अग्रोहा तीर्थ" का अगला अक उनके जन्म दिवस के अवसर पर "मास्टर लक्ष्मी-नारायण विशेषांक" के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल एक महान विभूति और कर्मठ समाज सुधारक थे। उनके द्वारा प्रस्तुत मार्ग हम सब के लिए अनुकरणीय है। मुझे आशा है इस विशेषांक में समाज के प्रति उनकी सेवाओं एवं योगदान के सम्बन्ध में प्रकाशित सामग्री पाठकगण के लिये बहुत उपयोगी और प्रेरणा-दायी होगी।

मैं विशेषांक की सफलता की कामना करता हूं।
शुभ-कामनाओं सहित,

आपका
हस्ताक्षर
कुलानन्द भारतीय

श्री चन्द्र मोहन गुप्ता
सम्पादक—अग्रोहा तीर्थ,
४४२१ नई सड़क, दिल्ली

VIJAY INDUSTRIES

Manufacturers of :

Automotive Parts of Cars, Commercial Vehicles & Tractors

Works :
A-76, G. T. Karnal Road,
Industrial Area, DELHI-110033
Phone : 7113875

Office :
745, Church Mission Road,
Fatehpuri, DELHI-110006
Phone : 2512402

TRACTO IMPEX (INDIA)

745 Church Mission Road,
Fatehpuri, DELHI-110006

Dealer of : **Tractor Spare Parts**

Phone : Resi. 7128731

Mohinder Singh Jain
Vijender Singh Jain

J. R. JINDAL
Special Executive Magistrate
Ist Class Delhi

THE JINDAL OIL MILLS
561, G. T. Road, DELHI-32

Phone : 202227

Message

My dear Chander Mohan ji,

I have to thank you for your letter dated 1.5 84 asking me to send you some of my views and experiences with late Master Laxmi Narian Ji Agarwal, the founder General Secretary of All India Agarwal Mahasabha.

I have had the pleasure of knowing him for over 40 years and know that he has devoted whole of his life in the welfare of the community and that all this consciousness amongst the people of our commnity has been the result of Master Ji's efforts and devotion. I have the pleasure of working with him and having his blessings. He was always available for assistance to an Agarwal beloing to slightly weaker class. He assisted in the marriages of the community people. People who have the privilege of working with him can hardly forget him. He shall ever be remembered in the history when w itten for our Agarwal Community.

I pay my respects to him and assure you of my best of efforts and co-operation for creating any rememberance in his sweet memory.

With kind regards,

Yours sincerely,
Sd/-
J. R. Jindal

Shri Chandra Mohan Gupta,
Editor, Agroha Tirath,
4421, Nai Sarak,
DELHI-6.

With compliments from

Anantram Lachhmandas Aggarwal

6692/1, KHARI BAOLI, DELHI-110006.

Phnoe 230948
233596

Grams : PELLITORY'
DELHI

Wholesalers and Agents for the

Products Manufactured by

- M/s. Dhrangdhara Chemical Works Limited
  DHRANGADHRA (Gujarat) & SAHUPURAM (Tamil Nadu)
- M/s. Borax Morarji Limited
  AMBARNATH (Thane - Maharahtra)
- M/s. Kanoria Chemicals & Industries Limited
  RENUKOOT (Mirzapur - U. P.)
- M/s. The Andhra Sugars Limited
  TANUKU (Andhra Pradesh)

for Aspirin I. P. Quality

RAJENDRA LAL
Chairman & Managine Director

Phone : Off : 82
Res : 6
Sir Sadi Lal Enterprises Ltd.
Shamli-247776 (U.P.)

Feburary 4, 1984

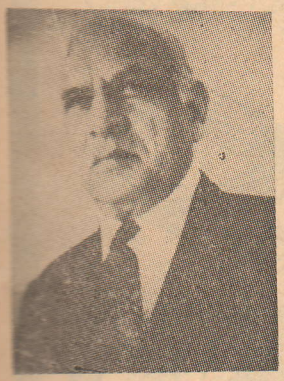

Message

I have been connected with Master Laxmi Narain Ji Agarwal for almost 40 years and during my time, which I spent with him, I found him a very dedicated worker for the Agarwal Samaj and he took up various projects which he very successfully managed They are still being run even though he is no more with us. I hope that his son, Shri Chandra Mohan Gupta, will carry on his good work which was started by Late Master Lamxi Narain Ji Agarwal

with all good wishes,

Sd/-
RAJENDRA LAL

Shri Chandra Mohan Gupta
Editor, Agroha Tirath
4421 Nai Ssrak,
DELHI-6.

स्वादिष्ट भोजन के लिये
नौ बहार चटनी
हमारे यहां हर प्रकार के कुटे पिसे साफसुथरे स्वादिष्ट मसाले व ताजा ड्राईफ्रूट खुले व सुन्दर पैकिंग में मिलते हैं।
Tel: 238525
NONANDRAI BHOLANATH DELHI 105
नौनन्द राय भोला नाथ
खारी बावली (दिल्ली)
NONANDRAI BHOLANATH
KHARI BAOLI DELHI
MILK MASALA
CHATNI
चटनी
DAHI BARE KA MASALA
GARAM MASALA
TEA MASALA
JALJIRA
NB KASHMIRI MIRCH
KASOORI METHI
MEAT MASALA
Chane KA Masala
चाट मसाला
CHAT MASALA

शिव चरण गुप्ता
भू० पू० संसद सदस्य
३० दरयागंज, नई दिल्ली-११०००२
फोन : २७१७४७
६५२७६८
६५६३१०

मास्टर जी बहुत ही सरल प्रकृति के व्यक्ति थे जो समाज सेवा की भावना से ओत-प्रोत थे। आज बहुत से संगठन अग्रवालों और वैश्यों को जोड़ने में लगे हैं यह इस आन्दोलन की कड़ी हैं जो वर्षों पहले शुरु किया था। वह संकुचित विचारधारा के नहीं थे। उनके विचार, उनका हृदय समुद्र जैसा विशाल था जो ज्वार भाटों के बावजूद शान्त रहता है और अपनी मंजिल की ओर बढ़ता जाता है।

वैश्य समाज ने दिग्गज नेता खो दिया जिस क्षति को पूरा होना कठिन लगता है।

मुझे आशा है आप उनके चौमुखी व्यक्तित्व को उजागर कर पाऐंगे और वैश्यों के संगठन में जो उनके जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य था, आप योगदान दे सकेंगे और मास्टर जी की भावना को आगे बढ़ा पाऐंगे। ●

आपका
ह० शिव चरण गुप्ता

बजरंगलाल जाजू
पावा मैन्सन, १/११-बी आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-११०००२
फोन : का० २६२६१५
२७६५६६
घर ६४०७१६
तार: जाजूको

संदेश

लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल अपने आप में एक संस्था थे। उन्होंने अग्रवाल समाज की निःस्वार्थ सेवा करके देश और राष्ट्र की महान सेवा की। बीच बीच में ऐसी विभूतियाँ आकर समाज को एक नया मार्ग-दर्शन देती हैं। हमारा परम सौभाग्य है जो हम उनके कार्यकलापों को, उनकी लगन व निष्ठा को इतने नजदीक से देख सके। नवयुवकों के लिये तो वे एक आदर्श के रूप में रहेंगे। उनकी स्मृति को चिरस्थाई करने के लिए उनका अनुकरण करना ही सबसे बड़ा स्मृति चिन्ह होगा। ●

आपका ही,
ह० बजरंगलाल जाजू

"मास्टर जी को जैसा मैंने पाया"

रामसरन चन्द मित्तल
भू०पू० वित्तमन्त्री (हरियाणा)
नारनौल

मास्टर श्री लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल महान विभूति, कर्मठ समाज सेवी एवं निस्वार्थ व्यक्ति थे। आपकी सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता और कार्यकुशलता सामाजिक चेतना जागृत करने में काफी हद तक सफलीभूत हुई। आपकी कार्य विधियाँ, संगठनक्षमता तथा प्रेरणा वर्षों तक समाज का मार्ग दर्शन करती रहेंगी।

विगत २५ वर्षों से मास्टर जी के एक निकट सहयोगी होने के नाते मैं उनके व्यक्तित्व से बहुत अधिक प्रभावी हूँ। राष्ट्र सेवा में आपने अपने जीवन का अमूल्य समय समग्र रूप से समर्पित किया। समाज सेवा और राष्ट्र सेवा ही आपका एकमात्र ध्येय था। "अग्रोहा" को "अग्रोहा तीर्थ" बनाने में तथा १९६४-६५ में तत्कालीन पंजाब के मुख्य मंत्री कामरेड श्री रामकिशन जी द्वारा अग्रोहा में इन्जीनियरिन कालेज खोलने में, भूमि पूजाआदि के कार्यों में आपका पूर्ण योगदान रहा। अग्रवाल समाज के लिए आपका एकीकरण का प्रयास अविस्मरणीय रहेना। सन् १९८२ में अग्रोहा में कुंभ के अवसर पर मैं आखिरी बार आपके दर्शनों से लाभान्वित हो सका। आपके ८५वें जन्म दिवस पर आपका यह विशेषांक आपकी स्मृति को जागृत करेगा। आपका नाम देश के शैक्षणिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन के कार्य करने वाले महापुरुषों की श्रेणी में आता है। ऐसी महानतम विभूति के प्रति मैं श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ।

संगठित समाज ही देश सेवा में सहायक

लक्ष्मी नारायण अग्रवाल
(एडवोकेट)
लक्ष्मी कॉटेज
१९/७, शक्ति नगर
दूरभाष : ७१२१७०७

१९५४ में शक्ति नगर आने के बाद अग्रवाल समाज के महान सपूत और फाउण्डर मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल के साथ काम करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। अग्रवाल भवन व अग्रसेन जयन्ती की शुरुआत शक्ति नगर से ही शुरू हुई और आज यह प्रथा सारे भारतवर्ष में ही नहीं विदेशों में भी फैल गई। वो समाज के लिये पैदा हुए, समाज के लिये जिये और जिनके हर सांस के साथ समाज की भलाई व बढ़ोतरी शामिल थी ३ दिसम्बर १९८३ की सुबह हमें एक सन्देश दे गये और वो सन्देश था समाज के लिये नई दिशा, आत्मविश्वास, खुद्दारी, समाज की एकता सारे समाज के वैभव को जागाना, इसे शक्तिशाली बनाना। उनका यकीन था कि एक सम्पन्न समाज जैसा कि वैश्य समाज है जब संगठित और मजबूत होना तो देश की सही सेवा कर सकेगा।

सब कठिनाइयों के बावजूद उनका हर कदम अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिये बढ़ता गया और जीवन की आखरी सांस तक उनकी यह तड़फ बरकरार रही। आईये हम उनके जीवन से सबक लें और उनके इस स्वप्न को साकार करने की कोशिश में जूट जायें। ●

वृन्दावन कानुनगो
अखिल भारतीय महाराजा अग्रसेन
वंश इतिहास शोध संस्थान
जीन्द (हरियाणा)

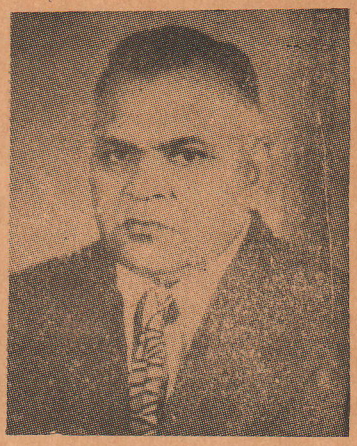

संदेश

आदरणीय बन्धुवर श्री चन्द्र मोहन जी गुप्त,
नमस्कार !

यह जानकर हर्ष हुआ कि अग्रोहा तीर्थ श्री मास्टर लक्ष्मी नारायण जी की स्मृति पर उनकी पुण्य तिथि पर विशेष अंक निकाल रहा हैं। ऐसी समाज सेवी धर्म परायण विभूतियों का स्मृति अंक निकाल कर समाज का मार्ग-दर्शन करना एक महान कार्य है। यह बहुत प्रशंसनीय कार्य है। मास्टर लक्ष्मी नारायण जी त्याग व तपस्या की मूर्ति थे। इन्होंने जो समाज की सेवायें की वह अकथनीय हैं। मास्टर जी ने सन्तों की वाणी;

'जब हम जग में आये, जग हंसा हम रोये'
ऐसी करनी कर चले, हम हंसे जग रोये"

को चरितार्थ किया !

भगवत् इच्छा बलवान है।

भवदीय
वृन्दावन कानुनगो

अग्रवाल समाज उनकी सेवाओं का हमेशा ऋणी रहेगा

अग्रोहा तीर्थ पत्रिका का स्व० मास्टर जी के प्रति स्मृति विशेषांक जो आप प्रकाशित करने जा रहे हैं वह समाज के सजग एवं राष्ट्रहितैषी नागरिकों को चिन्तन करने पर निश्चय ही विवश कर देगा कि हमने कौन से कार्य भविष्य में समाज में व्याप्त अनेकों कुरीतियों को मूलतः समाप्त करने के उद्देश्य से करने हैं : अग्रवाल समाज उनकी सेवाओं का हमेशा ऋणी रहेगा। । जो प्रेरणाऐं वह हमें दे गये हैं उन पर सभी को चलना चाहिये। यह पत्रिका समाज को एक नई दिशा प्रदान करती हुई हिन्दी साहित्य जगत के क्षेत्र में तथा सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान स्थापित कर सके इसी आशय के साथ शुभ-कामनाओं सहित।

भवदीय—सतीश शर्मा
संयोजक—राष्ट्रीय धर्मरक्षा समिति, दिल्ली
नीमड़ी कालोनी. दिल्ली-११००५२

द्वारका प्रसाद गोयल एन्ड ऐसोसियेट्स प्रा. लि.

खारी बावली, दिल्ली-११०००६

दूरभाष : कार्यालय – २३८५६७ (३ लाइंस)

निवास – २२२५२०, २३८४७०

दूरभाष : ७१२४२२१

रेवाड़ी स्वीट कार्नर

विशेषज्ञ : लस्सी व पूरी

रेवाड़ी मिष्ठान भण्डार

विशेषज्ञ : रेवाड़ी बर्फी, मिल्क केक, गाजर पाक, कलाक़न्द
व बंगाली मिठाइयाँ आदि।

२४१६, व्यास मार्ग, शान्ति नगर, दिल्ली-११०००७

प्रेषक : श्री सीसराम धर्म सिंह सैनी

एक क्रान्तिकारी अग्रवाल व्यक्तित्व

राम अवतार आर्य
महामन्त्री
अ०भा० महावर वैश्य महासभा
४७६४-चान्दनी चौक, दिल्ली-६

अपने निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज सेवा को अपने जीवन का अंग बनाने वाले व्यक्ति बिरले ही होते हैं। स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल का नाम अग्रवाल समाज में एक क्रान्तिकारी अग्रवाल व्यक्तित्व के रूप में चिरस्मरणी रहेगा।

स्वर्गीय मास्टर जी का जन्म १० जून १९०० ई० में देहली के जौनती ग्राम में लाला प्रभुदयाल बंसल जी के यहाँ हुआ। शिक्षा के पश्चात् अपने दिल्ली में अध्यापन कार्य करने लगे। इसी समय में आपका विवाह श्रीमती नन्ही देवी से सम्पन्न हो गया।

स्वर्गीय मास्टर जी ने अग्रवाल समाज की स्थिति को उन्नत बनाने के लिये अनेक कार्य किये। उन्होंने वैश्य को-आपरेटिव बैंक की स्थापना कर निर्धन छात्रों की सहायता, विधवा सहायता, रोजगार सहायता एवं ऋण आदि की व्यवस्था कर निजि भवन निर्माण में सहायता की।

अग्रवाल संगठन को सुदृढ़ बनाने हेतु आपने अग्रोहा तीर्थ मासिक का प्रकाशन प्रारम्भ किया। वैवाहिक अवसरों पर स्थानाभाव को देखते हुए शक्ति नगर में अग्रवाल भवन के निर्माण की प्रेरणा दी। महाराजा अग्रसेन जयन्ती का आयोजन, आखों के कैम्प, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन, अग्रवाल प्रतिभाओं का सम्मान करना स्वर्गीय मास्टर जी की विशेषता थी।

हरिद्वार में ३००० वर्ग गज भूमि में बनने वाला अग्रवाल आश्रम मास्टर जी की ही प्रेरणा का फल है। मेरी ईश्वर से कामना है कि वह उनके सुपुत्र चि० चन्द्र मोहन गुप्ता को उन्हीं की तरह समाज सेवा में संलग्न रखे।

भूल-सुधार

पेज नं०	गलत	सही
१७	बृन्दावन कानूनगो	चौधरी बृन्दावन कानूनगो
१८	शान्ति नगर	शक्ति नगर
३३	छट्टनलाल गुप्ता, ३०/६० शक्तिनगर	छट्टनलाल गुप्ता, ३०/१० शक्तिनगर
३७	मिलिंद	एस० मिलिंद
४१	जितेन्द्र नाथ	त्रिनेत्र नाथ
५३	आनरेडी	आनरेरी
५७	जिन्होंने परिवार को स्तर को ऊँचा उठाया चन्द्र मोहन जी गुप्ता पर आपकी अमिट छाप पड़ी।	चन्द्रमोहन गुप्ता पर आपकी अमिट छाप पड़ी। जिन्होंने पत्रिका के स्तर को ऊँचा उठाया।
६९	नं० १ की तीसरी लाईन में—पत्र	पर
७३	नीचे के चित्र की तीसरी लाईन—वृवभान	वृगभान

Phones : 2512890
2513009

M/s. Delhi Farming & Construction (P.) Ltd.

1112, Kucha Natwan, Chandni Chowk
DELHI-110006

Dealers of :

Gas & Gas Cylenders

With best compliments from :

Phones : Showrocm : 23 54 81
Residence : 26 74 09

MAHAWAR BROS.

Wholesaler & Retailers :

☐ AVIS JEANS ☐ L.S.W KNITWEARS ☐ SILKINA SHIRTS
☐ HILTON SHIRTS ☐ ZODIAC TIES, SHIRTS & SOCKS
☐ NEWYORK ☐ NEWBRA ☐ MONICA ☐ LIBERTINA
☐ LIBERTY BRIEFS & VESTS ☐ GOSSMER BRA

DOUBLE STORY, SHOWROOM
4794/95, (Near Ballimaran), Chandni Chowk, Delhi-110006.

—Dharam Prakash & Surendra Prakash

⟵ ⟶

Phones : Ch. Ch. : 23 54 81
Resi. : 26 74 09

MAHAWAR SONS

High Class Hosiery & Readymade Garments

★ AVIS JEANS ★ L.W.S. KNITWEARS ★ JOLLY KNITWEARS
★ TEE KNITS ★ SUN FLAG ★ ROSY GEE ★ ZODIAC TIES
★ LIBERTY BRIEFS & VESTS ★ GOSSMER BRA

F-119, Main Market, Rajouri Garden, (Out Side Post Office)
NEW DELHI-110027.

—Gian Prakash & Vishnu Prakash

स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल
एक निःस्वार्थ एवं समर्पित समाज सेवी

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त
अ० सम्पादक, अग्रोहा तीर्थ
१५९२/११३, त्रिनगर, दिल्ली-११००३५

विष्णु चन्द्र गुप्त

अखिल भारतीय ख्याति के नेता, देहली की विभूति मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल जी की गणना उन समाज सेवियों में है जिन्होंने अपना समस्त जीवन इस जाति की सेवा के लिए ही अर्पित कर दिया।

आप वैश्य अग्रवाल जाति की निःस्वार्थ सेवा लगभग ५० वर्षों तक निरंतर करने के पश्चात् शनिवार दिनांक ३ दिसम्बर १९८३, को इस नश्वर देह को त्याग कर अनन्त में लीन हो गये।

मास्टर जी ने अपने जीवनकाल में समाज सेवा के ऐसे कीर्तिमान स्थापित किए हैं जिनसे आगे आने वाली पीढ़ियों को मार्ग दर्शन प्राप्त होगा और समाज सेवा करने के लिये प्रोत्साहन मिलेगा।

विधवाओं की सहायता, निर्धन कन्याओं के विवाहों में सहायता, निर्धन छात्रों की सहायता, भवन निर्माण, व्यापार तथा नौकरी में सहायता आदि इनके ऐसे कार्य हैं जिनको सदैव स्मरण किया जाता रहेगा।

मास्टर जी की समाज सेवा से प्रभावित अनेक कृतज्ञ संस्थाओं द्वारा उनको समय-समय पर सम्मानित किया गया। अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन ने अपने वाराणसी अधिवेशन में २३ जनवरी १९८३ को अग्रोहा निर्माण में किये महत्वपूर्ण कार्यों के उपलक्ष्य में ताम्रपत्र एवं शाल देकर सम्मानित किया। इसी प्रकार दक्षिणी दिल्ली अग्रवाल समाज ने अग्रसेन जयन्ती के अवसर पर उनकी सामाजिक सेवाओं के लिये ताम्रपत्र एवं शाल देकर सम्मानित किया था। इसके अतिरिक्त देश भर की संस्थाओं तथा अग्रवाल बन्धुओं द्वारा उनको समय-समय पर विशेष सम्मान दिया गया।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी के पश्चात् महाराज अग्रसेन जयन्ती का प्रचार जिन महानुभावों और समाज सेवियों ने किया है उनमें मास्टर लक्ष्मी नारायण जी की गणना प्रथम पंक्ति में की जाती है। लक्ष्मी नारायण जी का जन्म ग्राम जौनती (देहली) निवासी ला० प्रभुदयाल जी बंसल के घर में १० जून १९०० ई० को हुआ।

मास्टर जी ने विद्यालय छोड़ने के पश्चात् अपना जीवन अध्यापक के रूप में आरम्भ किया, अतः आप आज भी 'मास्टर जी' के नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। आप के द्वारा वैश्य समाज एवं अग्रवाल जाति के लिए उल्लेखनीय ऐसे कार्य सम्पादित हुए हैं, जो चिरकाल तक आपकी कीर्ति स्तम्भ माने जाते रहेंगे। यथा :—

१. आपने केवल १४ सदस्यों के सहयोग से सन् १९५७ में देहली में वैश्य को-आपरेटिव कर्माशियल बैंक लि० की स्थापना की। जिसकी सदस्य संख्या आज दिन २६०० के लगभग है।

२. सन् १९५७ में आपके प्रयत्न और अनथक लग्न के बल पर देहली के समृद्ध एवं अग्रवालों के गढ़ शक्ति नगर में अग्रवाल भवन ट्रस्ट की स्थापना की गई जिसका विशाल भवन समस्त सामाजिक कार्यों के लिए सुलभ है। इसी भवन से प्रेरणा लेकर देहली के अग्रवाल बन्धुओं ने अपने-अपने क्षेत्रों में अब तक कई अग्रवाल भवनों का निर्माण किया है।

३. आपने अग्रवालों की जन्म भूमि अग्रोहा पुनः बसाने का भरसक प्रयत्न किया है। इसके लिए आपने समाज की सहायता से ३०० बीघा (३ लाख वर्ग गज)

भूमि अग्रोहा के थेह के पास क्रय की और वहाँ श्री अग्रसेन इंजिनियरिंग कालेज की स्थापना के लिए योजना बनाई यह योजना अभी रुकी पड़ी है।

४. आपने सेठ जमना लाल बजाज द्वारा स्थापित अ० भा० अग्रवाल महासभा की देहली में १९४८ ई० में रजिस्ट्री कराके इसके कार्य को अब तक जीवित रखा है और आज दिन अग्रवाल समाज में जो जाग्रति दीख पड़ती है उसका श्रेय इसी सभा को है।

५. वैश्य अग्रवाल समाज की ज्योति को प्रज्ज्वलित रखने एवं प्रचार हेतु आपने **'अग्रोहा तीर्थ'** हिन्दी मासिक पत्रिका की स्थापना की।

६. देहली में प्रतिवर्ष महाराजा अग्रसेन जयन्ती तथा अन्य सार्वजनिक समारोहों का आयोजन भी मास्टर जी की विशेषता रही है।

७. सन् १९५० में अग्रवालों की जन्म भूमि अग्रोहा में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन करवाया, उसके प्रधान स्व० सेठ कमल नयन बजाज सुपुत्र, स्व० सेठ जमना लाल बजाज की प्रधानता में एवं स्वागताध्यक्ष ला० ज्योति प्रसाद रईस (हिसार) भूतपूर्व एम०एल०सी० पंजाब के सहयोग से अग्रोहा में बहुत सुन्दर आयोजन किया गया।

८. आपने सन् १९५० में कुम्भ के अवसर पर हरिद्वार में अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के तत्वाधान में एक विशाल कैम्प लगाया था। जिसमें काफी दूर-दूर के अग्रवाल भाई ठहरे थे। उसी अवसर पर आपके दिमाग में हरिद्वार में विशाल आश्रम बनाने का विचार आया। सन् १९७७ में महाराजा अग्रसेन (अग्रवाल) आश्रम ट्रस्ट रजि० कराया गया और ३००० वर्ग गज भूमि भुपतवाला में खरीद कर आश्रम का निर्माण कार्य प्रारम्भ कराया ओर इस समय वहाँ पहली मंजिल का कार्य पूर्ण हो चुका है आप आश्रम के अवैतनिक मन्त्री के रूप में अधिभार सम्भाले हुए थे।

९. आपने अपने निवास स्थान पर वैश्य अग्रवाल लड़के-लड़कियों के विवाह सम्बन्धी सूचनाओं का कार्य लक्ष्मी विवाह केन्द्र के नाम से प्रारम्भ किया था। इस कार्य में सैकड़ों अग्रवाल बन्धु लाभ प्राप्त कर चुके हैं। और कर रहे है। ●

मास्टर लक्ष्मी-नारायण जी एक महान व्यक्तित्व

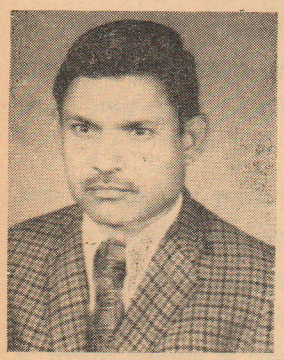

ज्वाला प्रसाद 'अनिल'
महामन्त्री
अ० भा० वैश्य अग्रवाल
महासभा, सुरेन्द्र नगर.
अलीगढ़ (उ० प्र०)

सन् १९७०-७१ में अलीगढ़ में अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासभा की कांफ्रेंस में मास्टर लक्ष्मी नारायण जी श्री बाबूलाल सलमे वाले व अन्य ४ व्यक्तियों के साथ पधारे। लम्बा चौड़ा शरीर एक आकर्षक व्यक्तित्व सभा भवन में पहुंचा तो सबने देहली के महान सपूत के रूप में मास्टर जी का स्वागत किया। आपने दोनों दिन कार्यक्रमों में भाग लिया और समाज को एक नई दिशा दी।

मास्टर जी से एक बार मैंने शक्ति नगर स्थिति उनके निवास स्थान पर भेंट की तो उन्होंने मैरिज ब्यूरो के सम्बन्ध में बताया कि वह एक मैरिज ब्यूरो चलाते है अनेक सम्बन्ध उनके द्वारा सम्पन्न हो गये। रविवार के दिन अनेक बन्धु उनके यहाँ पर आते है और रिश्ते छांटते हैं। मास्टर जी वृद्धावस्था में भी प्राय: प्रत्येक सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेने जाते थे और समाज को मार्ग दर्शन देते थे। उनके प्रत्येक कार्य प्रेरणा दायी होते थे मास्टर जी ने अग्रोहा में इंजिनियरिंग कालिज बनाने की नींव डाली थी परन्तु किसी कारण वह सफल न हो सकी और वह भूमि जो उनके द्वारा खरीदी गई थी आपने अग्रोहा के मन्दिर बनाने हेतु दे दी अभी कुछ भूमि और शेष है उसका प्रबन्ध श्री देवकीनन्दन गुप्ता करते है।

आज मास्टर जी नहीं रहे परन्तु उनके कार्य व याद आज भी सदैव की भांति ताजा है। मास्टर जो मर कर भी अमर हैं। तथा नई पीढ़ी के लिये प्रेरणा के स्रोत है। ●

अग्रवाल समाज के भीष्म पितामह

मास्टर जी—

राजधानी में अग्रवाल समाज के भीष्म पितामह मास्टर लक्ष्मी-नारायण अग्रवाल एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम था जिसने समूचे अग्रवाल वैश्य समाज को उठाने, सहायता करने, अग्रसेन जयन्ती का शुभारम्भ करने और न जाने कितने लोगों को निर्धन से धनवान बनाने तथा बहुत से नौजवानों को सामाजिक कार्यकर्ता बनने की प्रेरणा देने का कार्य जीवन भर किया। जीवन के अंतिम क्षणों तक जिसने अग्रोहा बसाने और हरिद्वार में विशाल अग्रवाल आश्रम निर्माण कार्य को अंजाम दिया। देश और समाज के ऐसे गौरव तथा धर्म साधना के प्रेरणाश्रोत के निधन को सदैव सम्मान के साथ स्मरण किया जायेगा।

मास्टर जी अग्रवाल समाज की एक महान विभूति, कर्मठ समाजसेवी, ऐसे अग्रवाल रत्न थे, जिन्होंने अनेक संस्थानों की स्थापना की और उनका संचालन किया। मास्टर जी द्वारा प्रारम्भ अग्रोहा तीर्थ आज अग्रवाल समाज की एक प्रमुख पत्रिका बन चुकी है। मास्टर जी ने अपने पूरे जीवनकाल में अग्रवाल समाज की जो सेवा की वह सदैव स्मरणीय रहेगी। केवल मास्टर जी की ही मेहनत थी कि उन्होंने सर्वप्रथम अग्रसैन जयन्ती मनानी प्रारम्भ की और आज उनके प्रयत्नों से दिल्ली ही नहीं अपितु भारत में ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं जहाँ अग्रसैन जयन्ती नहीं मनाई जाती हो। अग्रोहे का स्वप्न सर्वप्रथम मास्टर जी ने ही देखा था और उन्हीं के प्रयत्नों से उनके द्वारा अग्रोहा में बोया गया बीज एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर रहा है।

पुरुषोत्तम गर्ग
अध्यक्ष—अखिल भारतीय
युवा अग्रवाल सम्मेलन

अग्रवाल सम्मेलन द्वारा वैश्य शिरोमणि मास्टर लक्ष्मी नारायण जी की स्मृति में अग्रोहे में उनकी एक प्रतिमा की स्थापना का निर्णय एक महान कार्य है जो आने वाली पीढ़ी के लिए सदैव प्रेरणा का कार्य करेगी।

आगे आने वाला इतिहास भी मास्टर जी द्वारा किये गये कार्यों के लिए सदैव उनका ऋणी रहेगा। ●

अग्रसेन नाम के प्रचारक—मास्टर जी

मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल से मेरा बचपन का साथ रहा है। उनके अन्दर अगोहा, अग्रवाल समाज तथा महाराजा अग्रसेन के नाम का प्रचार और प्रसार ही करने की भावना सदा बलवती रही है। उनके प्रयत्नों से महाराजा अग्रसेन की स्मृति को पूर्ण रूप देने के लिए सर्वप्रथम २०"x३०" के आभार में दस रंगों वाला महाराज अग्रसेन का गोत्रों सहित चित्र बनवाया गया। जो आगे आने वाली पीड़ियों के लिए मार्ग दर्शक सिद्ध हुआ। अग्रसेन जयन्ती मनाना, अग्रोहा का निर्माण कराना, अगवाल बन्धुओं की सहायता करना उनके जीवन के ऐसे कार्य रहे हैं जो सदा ही याद किये जाते रहेगें ●

—लक्ष्मी चन्द अग्रवाल
३, दरिया गज, नई दिल्ली

वैश्य रत्न-
युग पुरुष
मास्टर लक्ष्मी नारायण जी

दीवान सी० वैश्य
उपाध्यक्ष
अ० भा० अग्रवाल वैश्य
महासभा (पंजी०)

किसी भी व्यक्ति के जीवन का सही आँकलन उसकी मृत्यु के बाद ही होता है। वैश्य समाज की महान विभूति कर्मठ समाज सेवी जिन्होंने वैश्य को-आपरेटिव कमर्शियल बैंक नई सड़क, देहली महाराजा अग्रसेन इन्जिनियरिंग टेक्नीकल सोसाईटी एवं कॉलिज, अग्रोहा अग्रवाल भवन ट्रस्ट, शक्ति नगर, दिल्ली (पंजी०) एवं लक्ष्मी विवाह केन्द्र, शिक्षा तथा विधवा सहायता कोष ट्रस्ट पंजी० एवं अ० भा० अग्रवाल महासभा (पंजी०) दिल्ली की स्थापना की। महाराजा अग्रसेन अग्रवाल आश्रम ट्रस्ट (पंजी०) हरिद्वार के मन्त्री रहे। वैश्य समाज की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक तथा भौतिक चेतना की बहुमुखी प्रेरणा दायक, प्रगतिशील, रास्ट्र भाषा हिन्दी की मासिक पत्रिका "अग्रोहा तीर्थ" की भी स्थापना की। प्रेरणा दायक व्यक्तित्व की अद्भुत शक्ति के पुत्र वह मास्टर लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल जिन्होंने जीवन पर्यन्त निःस्वार्थ भाव से वैश्य समाज की सेवा की, अनन्त में लीन हो गये। अर्थात् इहलीला को समाप्त कर अपना बास स्वर्ग लोक में कर लिया।

प्रेरणा देने वाली वह ज्योति सदा के लिये बुझ गई परन्तु एक ऐसी अमर ज्योति, रोशनी का एक मीनार "अग्रोहा तीर्थ" मासिक पत्रिका के रूप में, प्रदान कर गये जो हमें आगे बढ़ने के लिये सदा हमारा मार्ग दर्शन करती रहेगी। वह सही माने में "वैश्य समाज के रत्न एवं युग पुरुष थे। ऐसे महान पुरुषों के समाज से उठ जाने पर भी उनकी ख्याति हजारों वर्ष बाद भी बनी रहती है।

हजारों वर्ष नर्गिस अपनी बे नूरी पे रोती है।
बड़ी मुशकिल से पैदा होता है जहाँ में दीदार कोई॥

श्री ज्योति प्रसाद अग्रवाल
सर्वश्री ज्योति प्रकाश
ओम प्रकाश
सदर बाज़ार, दिल्ली-६

अग्रवाल ममाज के प्रेरणास्रोत मास्टर जी ने हरिद्वार में कुम्भ से पहले सन् १९७४ में आश्रम की स्थापना का स्वरूप मेरे साथ बैठकर बनाया था। मेरा उनका सम्बन्ध पिछले ३५ वर्षों से था। मैंने उन्हें जब भी देखा हमेशा अग्रवालों की सेवा करते पाया। उनके द्वारा बड़-बड़े अग्रवाल घरानों के लड़के-लड़कियों के रिश्ते तय हुए जो आज तक भली प्रकार से फलीभूत हैं। मास्टर जी से हमारे बहुत घनिष्ट सम्बन्ध थे। आज के समय में इन जैसा मित्र मिलना बहुत कठिन है। उनके बारे में जितना भी कहा जाय थोड़ा है।

जब भी उनकी याद आती है आँखों में आंसू आ जाते हैं। अग्रवाल समाज के लिये जो भी कुछ उन्होंने किया उनकी ताकत व शरीर को देखते हुए आश्चर्य होता है। कोई भी इन्सान अपने समाज के लिये इतना नहीं कर सकता। अग्रवाल समाज के लिये मास्टर जी एक प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे। उनके पद चिन्हों पर चल कर अग्रवाल समाज आगे ही आगे बढ़ेगा। उनके बारे में जितना लिखा व कहा जाय उतना ही थोड़ा है। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

मास्टर जी को जैसा मैंने पाया या जाना

उनकी आँखों में जादू था

—कल्याण चन्द गुप्त
कमल प्रिन्टर्स, १८६२-६४/१६ कन्हैया नगर, त्रिनगर,
दिल्ली-११००३५ दूरभाष : ७११५२७६

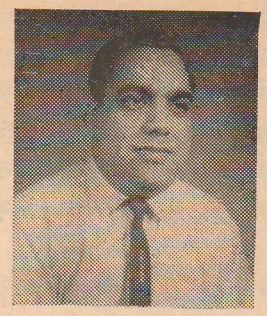

कल्याण चन्द गुप्त

खुदा का ज़िक्र करें या तुम्हारी बात करें।
हमें तो इश्क़ से मतलब किसी की बात करें॥

यह सन १९६८ की बात है जब एक दिन आज़ाद मार्किट स्थित नारायण प्रिन्टिंग प्रेस में अकस्मात एक ६७-६८ वर्षीय बुजुर्ग से मेरी भेंट हुई। दूध जैसे सफेद धोती, कुर्ता और टोपी पहने इन सज्जन में जाने क्या बात थी कि मैं अपना काम भूलकर उन्हें अपलक निहारता रहा। प्रेस मालिकान से अपनी बातों के बीच उस वृद्ध-भद्र पुरुष ने बीच-बीच में मेरी ओर एक दो बार देखा। मुझे लगा जैसे हम दोनों परस्पर परिचय करना चाहते हैं। यह तो याद नहीं कि हमारा परिचय आपस में किस बात से हुआ। किन्तु यह सुनिश्चित है कि हम अपनी उस दिन की प्रथम बैठक में ही परिचित हो गये।

यद्यपि उस समय हमें आपस में एक-दूसरे से कोई काम न था तथापि हम दोनों एक-दूसरे के निकट होते चले गये। सम्भवतः यह उसकी आंखों के अनदेखे जादू का कमाल था। मेरे लिये वो श्रद्धा का पात्र और उनके लिये मैं उनका प्रिय जन बनते चले गये।

हम अक्सर मिलते, विभिन्न विषयों पर वार्तालाप करते हुए अपने सम्बन्धों में प्रगाढ़ता लाते चले गये। यह ओजस्वी-वृद्ध भद्र पुरुष स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल जी ही थे जो ३ दिसम्बर १९८३ को अपने सभी प्रिय जनों को अकेला छोड़ बैकुण्ठ वासी हो गये। उनके ८५ वें जन्म दिवस पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके जीवन की प्रतिच्छाया से आपको परिचित कराता हूं।

मास्टर जी की समुचित कार्य प्रणाली अग्रवाल परिवारों से सम्बन्धित थी। राष्ट्रीय एकता—राष्ट्रीय विकास आदि विषयों पर उनका विचार था कि ये सभी, केवल अग्रवाल समाज पर निर्भर करते हैं। इसलिये देश में विकास कार्यों को बढ़ाना है और देश में स्थायी खुशहाली लानी है तो अग्रवाल समाज के हाथ लम्बे और मजूबत करने होंगे। तदर्थ वो समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करते रहते थे। जैसे गरीब लड़कियों की शादियां आर्थिक सहायता देकर करना, नेत्र कैम्प लगाना, अग्रसैन जयन्ती मनाना, हरिद्वार में आश्रम की स्थापना करना तथा भण्डारे करना, और अग्रवाल समाज के बेरोजगार युवकों को रोजगार दिलाने में सहायता देना, अग्रवाल भाइयों को एक सूत्र में पिरोये रखने के लिये उन्होंने अग्रोहा तीर्थ पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया। इस पत्रिका के माध्यम से उन्होंने समाज की जितनी सेवा की उस का वर्णन शब्दों से नहीं किया जा सकता वृद्धावस्था में भी इस महापुरुष ने जितनी लगन और परिश्रम से और बड़े सुन्दर ढंग से इन सभी कार्यों को सम्पन्न किया उस आधार पर इन्हें एक देवात्मा या लोह पुरुष कहना अनुपयुक्त न होगा।

रहन-सहन और खान-पीन मनुष्य के जीवन का एक ऐसा दर्पण है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। स्वर्गीय मास्टर जी अपने विचारों के अनुरुप, अपने रहन-सहन और खान-पीन में भी बहुत साधारण थे। उनके समस्त शौक अग्रवाल भाइयों के उत्थान और एकता से सम्बन्धित थे। ●

अग्रवाल समाज के स्तम्भ

श्रद्धेय श्री लक्ष्मी नारायण जी से मेरा काफी लम्बे समय तक परिचय रहा है। वे हमारी संस्कृति के प्रतीक तथा **अग्रवाल समाज के आधार स्तम्भ थे।** उनका जीवन निःस्वार्थ, त्यागमय तथा दूसरों के उपकार के लिये ही व्यतीत हुआ। उन्होंने अग्रवाल समाज का जीवन पर्यन्त कार्य किया जिसके लिये हम सब उनके आभारी हैं। उनका जीवन वर्तमान पीढ़ी के लिये एक आदर्श है और हम सबको यथा सम्भव उनके दिखाये मार्ग पर चलना चाहिये।

द्वारका प्रसाद गोयल
दिल्ली वनस्पति सिन्डीकेट
खारी बावली, दिल्ली-६

आर० एस० गुप्ता
प्रधान श्री शिव मन्दिर
ट्रस्ट (रजि०)
३९/२५ शक्ति नगर, दिल्ली

सच्चे हितैषी

मैं मास्टर जी के सम्पर्क में १९७० में आया। मैंने उन्हें बहुत सादे तथा उच्च विचारों वाला व्यक्ति पाया। मेरा उनका स्नेह बाप-बेटे जैसा था। उनके स्वर्गवास से मुझे बहुत ही मानसिक दुःख हुआ और मुझे ऐसा लगता है कि मेरा ही नहीं बल्कि समस्त अग्रवाल समाज का सच्चा हितैषी इस संसार से चला गया। उनके दिखाये हुए मार्ग पर हम कितने अग्रवाल भाई चल सकेंगे यह आने वाला समय ही बतायेगा। लक्ष्मी विवाह केन्द्र और अग्रवाल भवन ट्रस्ट (रजि०) शक्ति नगर उनकी समाज को एक बहुत बड़ी देन हैं। इनके द्वारा उन्होंने दीन दुःखियों का और समाज का बहुत ही उपकार किया है। जब तक ये दोनों संस्थाऐं सच्चे प्रेम से काम करेगी मास्टर जी का नाम सदैव अमर रहेगा। ●

बैंक में सर्विस करने के नाते मेरा सम्पर्क मास्टर जी से २१ वर्ष तक रहा। उन्होंने बैंक के कार्य को बड़ी मेहनत, ईमानदारी, सूझबूझ से चलाया। वे कोई भी गलत कार्य करने के विरुद्ध थे। अग्रवाल समाज के प्रति उनकी सेवा भावना बहुत ही ज्यादा थी। गरीब कन्याओं के विवाह करवाने में बड़ी मेहनत से योगदान देते थे। जो कार्य आज वे कर गये समस्त समाज उनका ऋणी रहेगा। हम सभी लोग उनके बताये व सुझाये मार्ग पर चलें यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

रामेश्वर दास गुप्ता
लेखाकार
वैश्य कोआपरेटिव कमर्शियल बैंक लि., दिल्ली

महान देश की महान विभूति

शुभ चिन्तक
गंगाविशन ऐडवोकेट
सिरसा

स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल

ला० लक्ष्मी नारायण जी का जन्म लगभग ८५ वर्ष हुये जब हुआ। उनमें आरम्भ से ही एक ही लग्न थी, 'मेरे अग्रवाल समाज में सुधार हो', कुरीतियां दूर हो, समाज में संगठन हो, इसलिए मा० जी ने सन् १९३९ में वैश्य को-आपरेटिव बैंक का निर्माण किया। जिससे हजारों व्यक्ति सहायता प्राप्त करके अपना आर्थिक जीवन बनाने में सफल हुए। वह लोग आज देहली तथा अन्य अन्य स्थानों पर ऊँचे पद पर विराजमान हैं। यह बात स्वय मास्टर जी ने मुझे एक भेंट में बताई थी। मास्टर जी ने अग्रोहा को पुनः बसाने के लिये कमर कस रखी थी। अपने पूर्ण प्रयास से ३०० बीघे भूमि अग्रोहा में मोल ली। अग्रसेन इन्जिनियरिंग एण्ड टैक्नीकल कॉलिज सोसाइटी अग्रोहा बना कर कॉलिज निर्माण का प्रयत्न किया। लेकिन इस समय हरियाणा सरकार ने उसकी आज्ञा न दी। अग्रोहा भूमि लेने के लिये अथवा लेने के बाद अनेकों कठिनाइयां उठानी पड़ी। मैं भी भूमि खरीदने के बाद हकशुफा आदि मुकदमों को सम्भालने व करने में सफल हुआ। मैं और मास्टर जी कड़ी धूप में अग्रोहा के थेह व खण्डहरात पर चक्कर लगाते थे। आखरी दर्शन मास्टर जी के जब वह पिछले साल एक बारात में सिरसा आये थे किए। उन्होंने हरिद्वार में एक विशाल आश्रम का निर्माण किया। गरजे कि जो कार्य उन्होंने मन में ठाना पूरा किया। आज अग्रोहा में जो कुछ हुआ है वह मास्टर लक्ष्मी नारायण की ही देन है। और जो कार्य अभी अधूरे है। उनको पूरे करने में हमें भगवान सामर्थवान बनायें। इसलिये स्मृति विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु मैं मंगल कामनाएँ करता हूं और इसके आयोजक को बधाई देता हूँ।

विशेष प्रशंसा केपात्र मास्टर लक्ष्मी नारायण जी

राधा सरन अग्रवाल
सरस्वती आफसेट प्रिन्टर्स,
नई दिल्ली

श्रद्धेय मास्टर जी से मेरा सम्पर्क लगभग पिछले १० वर्षों से था। मैंने सदैव उनके अन्दर अग्रवाल समाज के उत्थान एवं समाज के कमजोर वर्ग की सहायता करने की तीव्र एव हार्दिक इच्छा पाई और इसकी प्राप्ति के हेतु वे सदैव अपना अधिक से अधिक समय व शक्ति व्यय करने को सदैव तत्पर रहते थे। पिछले कुछ वर्षों में उनकी शारीरिक शक्ति अवश्य कम हो गई थी किन्तु उक्त कार्य के हेतु उनका उत्साह और भी अधिक हो गया था। इतनी वृद्ध एवं कमजोर अवस्था में भी उनकी कार्यक्षमता एवं आन्तरिक शक्ति किसी भी नौजवान से कम नहीं थी।

मास्टर जी की सबसे बड़ी विशेषता थी बिना अपने विज्ञापन तथा प्रचार की परवाह किए समाज के कार्यों में पूरी लगन के साथ निरन्तर लगे रहना। यह गुण बहुत कम समाज सेवियों में पाया जाता है। इस गुण के कारण मास्टर जो विशेष प्रशंसा के पात्र है।

आइए हम सब भी उनकी पुण्य जन्म तिथि पर उनका यह अद्वितीय गुण ग्रहण करने का प्रयास करें।

गरीबों के मसीहा स्वर्गीय मा० लक्ष्मी नारायण अग्रवाल

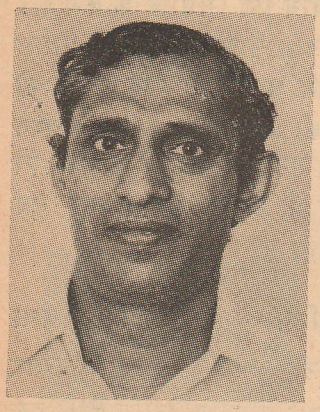

विशन स्वरुप गुप्ता
नवभारत टाइम्स
टाइम्स हाउस
७, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

यह हर्ष की बात है कि इस बार अग्रोहा तीर्थपत्रिका महान देश भक्त व समाज सेवी स्व० मा० लक्ष्मी नारायण अग्रवाल जी के ८५वें जन्म दिबस पर उनके जीवन सम्बन्धी विशेष सामग्री प्रकाशित कर रही है। इस महापुरुष के बारे में जितना भी लिखा जाये वह पर्याप्त नहीं है। खेद है, कि वह अब हमारे बीच में नहीं रहे, परन्तु उनके द्वारा समाज के लिए किये गये कार्य सदैव उनकी याद दिलाते रहेंगे। मेरा सम्पर्क, पड़ोसी होने के नाते उनसे पिछले १५ वर्षों से रहा है। मैंने उन्हें सदैव समाज सेवा में तन मन व धन से व्यस्त व अग्रणी पाया है। गरीबों के लिए तो वह हमेशा मसीहा रहे, और उनके लिए नई सड़क दिल्ली-६ पर को-आपरेटिव बैंक की स्थापना भी की, जहाँ से सैकड़ों परिवार ऋण के रूप में मदद पाकर मकान बनाते हैं व बच्चों के विवाह सम्पन्न करते हैं।

शक्ति नगर को तो उनकी विशेष देन अग्रवाल भवन है, जहाँ पर हर वर्ष सैकड़ों परिवार अपने निवास स्थान पर जगह का अभाव होने के कारण, आकर अपने बच्चों का विवाह व अन्य महोत्सव सम्पन्न करते हैं।

समस्त भारत के लाखों परिवारों को पहलीबार अग्रोहा में एकत्रित करके अग्रोहा के महाराजा अग्रसेन की जतन्ती मनाने का श्रेय उन्हीं को ही जाता है। इसी मौके पर उन्होंने अग्रवाल भाइयों से यह आग्रह किया कि वह शपथ लें कि, वह अपने बच्चों के विवाह बगैर दहेज लिये व दिये सम्पन्न करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि समाज में आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों को कम लाभ पर बढ़िया व सस्ती वस्तु प्रदान कर के, भारत के विकास में अपना योगदान दें।

हर वर्ष वह भारत के कोने कोने में अग्रसेन जयन्ती आयोजित करते रहे हैं। और इन अवसरों पर अग्रवाल भाइयों को अपने देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए प्रोत्साहन देते रहें।

उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी, कि वह अग्रवाल उद्योगपतियों को कहा करते थे कि आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए नवयुवकों को कारोवार देने में प्राथमिकता अपनाये। और गरीब घरों की अग्रवाल कन्याओं को बगैर दहेज के अपनायें। यह भी कहा कि धनाढ्य परिवार इसमें पहल करें। यह अग्रवाल समाज के पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने आज से ५० वर्ष पूर्व अग्रवाल विधवाओं के पुनः विवाह के लिये आन्दोलन किया व स्त्री शिक्षा प्रचार किया।

महान समाज सेवी "मास्टर जी"

इन्द्राज सिंह अग्रवाल
प्रधान
दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन
४६-माडल बस्ती,
नई दिल्ली-५

मेरा सम्पर्क लाला लक्ष्मी नारायण अग्रवाल जी से सन् १६५० से रहा है। वे समाज की सेवा में हर समय लीन रहते थे। वह एक बहुत अच्छे शिक्षक थे। उनकी पत्नी गुजरने पर उन्होंने नौकरी छोड़ दी और समाज सेवा में लग गये। धन की उपलब्धि सीमित होने के बावजूद वह इरादे के पक्के थे और जो कार्य भी बड़े से बड़ा करना मन में विचारा वह केवल आरम्भ ही नहीं किया बल्कि उसे पूरा भी किया।

जीवन के आखरी ४० वर्षों तक समाज सेवा के कार्य करते रहे। वह महाराजा अग्रसेन जयन्ती हर साल बड़े जोर-शोर से मनाते थे—जिसमें आरम्भ में चाहे कम लोग शामिल होते थे परन्तु बाद में हज़ारों की संख्या में लोग शामिल होने लगे।

इसी तरह उन्होंने एक वैश्य को-आपरेटिव कमर्शियल बैंक भी सन् १६४० के लगभग चालू किया जिससे दसियों हजार घरानों को लाभ पहुँचा।

सन् १६५६ में अग्रवाल भवन बनाने का बीड़ा उठाया और उसको पूरा किया। वह बड़े दूरदर्शी थे। सन् १६४७ के बाद दिल्ली की आबादी बढ़ती जा रही थी और उन्होंने यह देखकर कि दिल्ली में नए-नए इलाके आबाद हो रहे हैं उनमें अग्रवालों से अपील की कि जैसा कि आप सदा समाज की सेवा में अपना धन व्यय करते आये हैं जनता की सार्वजनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये धर्मशाला या भवन बनाना आवश्यक है और उनकी प्रेरणा से करीब-करीब हर नई बस्ती में अब सार्वजनिक धर्मशालायें या भवन बन गये हैं और आगे भी बनते जा रहे हैं।

वह अग्रवाल समाज और वैश्य समाज में कुरितियाँ दूर करने के लिये सदा कोशिश करते। वैश्य समाज जो कि देश में हर जगह व्यापक है और जिनकी संख्या लग-भग १० करोड़ होगी कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जहाँ मास्टर लक्ष्मी नारायण जी ने भ्रमण करके लोगों को संगठित होने, समाज सेवा के कार्य करने, धार्मिक स्थान बनाने, अस्पताल व स्कूल आदि जारी करने और देश की आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेने व उसकी तरक्की में आगे से आगे रहने की वैश्य भाइयों से अपील न की हो।

मास्टर जी का जीवन एक निःस्वार्थ सेवक और सन्त के तुल्य रहा उसमें कोई सन्देह नहीं। आखरी समय में भी उन्होंने ग्रान्डट्रंक रोड पर एक बहुत बड़ी जगह लेकर सामाजिक भवन बनाने की योजना पर अमल शुरु कर दिया था। अग्रोहा जो आज पुनः बस रहा है यह भी उनकी दूर-दृष्टि का ही मूल है। महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग टेक्नीकल कालेज जिसके वह आजीवन महामन्त्री थे और जिसके पास ७० एकड़ के करीब अग्रोहा में जमीन थी उसमें से करीब २५ एकड़ जमीन अग्रोहा विकास ट्रस्ट को बिना किसी मूल्य के दे दी। जहाँ आज धर्मशाला व मन्दिर आदि बन चुके हैं और बन रहे हैं और अग्रवाल वैश्य समाज के कार्यक्रमों का एक

केन्द्र बन चुका है। हजारों लड़के-लड़कियों के विवाह कराने में बड़ी भारी मदद की हैं। क्या लिखूं मास्टर जी ने अनेकों तरह से समाज और देश की सेवा की है और सेवा करते-करते अपना शरीर त्याग दिया। वह वैश्य समाज और तमाम देश में हमेशा के लिए अपने नेक कार्यों के लिए याद रहेंगे और उनका नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा जायेगा।

इसी तरह हरिद्वार में भी जो हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है सन् १९७५ में मास्टर जी के प्रयास से वहाँ पर एक विशाल अग्रसेन आश्रम बनाने की योजना तैयार हुई और वह आश्रम अब दो मंजिल ३००० वर्ग गज भूमि में बन कर तैयार हो गया है। जिससे हजारों यात्री लाभ उठा रहे है और उठायेंगे। ★

महान कार्यों व समाज सेवा के प्रेरक

स्व० मास्टर जी

स्वर्गीय मास्टर जी वास्तव में एक महान् व्यक्ति थे उनकी सेवाओं को वैश्य अग्रवाल समाज भुला नहीं सकता उनके महान् कार्यों व समाज सेवाओं से हमें बहुत प्रेरणा मिलती हैं, समाज में उनके स्थान की पूर्ति होना बहुत कठिन हैं। ऐसे कर्मठ समाज सेवी की, समाज सेवाओं व अन्य प्रमुख गतिविधियों को समाज के सामने अवश्य चित्रण किया जाना चाहिए। ये आपने एक बहुत आवश्यक और सराहणीय कार्य अपने ऊपर लिथा हैं। मेरी भगवान् से प्रार्थना हैं कि आपको, इस कार्य में पूर्णतया सफलता प्राप्त होवे ताकि आज के समाज के नवयुवकों को प्रेरणा मिले और वे समाज सेवा के लिये आगे बढ़े।

मेरा हर प्रकार से सहयोग आपके साथ होगा। ●

पुनः धन्यवाद के साथ,

आपका

ह० जिनेन्द्र प्रसाद जैन, (एडवोकेट)

मन्त्री—वैश्य एजूकेशन सोसाइटी, रोहतक

फोन : आफीस २९६३
घर २२३८

ऐसे थे मास्टर जी

विजय कुमार गुप्त
१२१ (MS) तिमार पुर
दिल्ली-११०००७

पैंतीस वर्ष पुरानी बात है। मैं सन् १९४८ में उनके सम्पर्क में आया था। उस समय अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के सभापति आचार्य जुगल किशोर थे। महामंत्री ला० तनसुख राय जैन और मंत्रीगण सर्वश्री चम्पत राय जैन तथा मा० लक्ष्मी नारायण थे मैंने भी मास्टर जी के कंधे से कंधा मिलाकर अग्रवाल महासभा के लिए लगभग तीन वर्ष काम किया।

मास्टर जी बड़े ही अनथक, कर्मठ, क्रियाशील और लगन के पक्के व्यक्ति थे। जिस काम को वे मन में धारण कर लेते उसे पूरा करके ही दम लेते। अनेकों संस्थाओं की नींव रखी, अनेकों मृतप्रायः संस्थाओं को पुनर्जीवित किया।

अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा का अधिवेशन अग्रोहा में होना था। इसके लिये काफी धन की आवश्यकता थी। यह बात १९५० की है। मास्टर जी ने धन एकत्रित करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेली। वे मुझे अपने साथ लेकर कलकत्ता जा पहुंचे। वहाँ बीस दिन तक पड़ाव रखा और धन की व्यवस्था करके ही लौटे।

अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा की ओर से एक मासिक पत्र 'अग्रवाल गजट' निकाला जाता था। पहले इसके अवैतनिक सम्पादक श्री चम्पत राय थे, उनके बाद श्री बालकृष्ण एम० ए० थे। बाद में इसके सम्पादन का भार मुझे सौंप दिया गया।

मास्टर जी दहेज लेने देने और दिखावे के सख्त विरुद्ध थे। उन्होंने नागपुर अधिवेशन में दहेज विरोधी प्रस्ताव पर मुझे बोलने के लिए बाध्य किया। हाल दर्शकों से खचाखच भरा था। सभा में कई मन्त्री भी थे। मुझे इस प्रस्ताव पर बोलने में बड़ी झिझक हो रही थी किन्तु मास्टर जी की प्रेरणा पर मैं वह सब कुछ कह गया जिसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी।

मास्टर जी में एक खूबी थी। वे क्षण भर में उबल पड़ते थे और पल भर में मौम हो जाते थे। मुझे ऐसे कई अवसर याद हैं। वैश्य कर्माशियल बैंक में तो चुनाव के समय हमेशा ही ऐसा होता आया है। जिस धड़े के साथ वे होते थे, उस धड़े की विजय होती थी मास्टर जी का कथनी और करनी में तनिक भी भेद नहीं होता था।

अनेकों जातीय सामाजिक तथा शैक्षणिक संस्थाओं के साथ उनका लगाव था। अपने जीवन काल में वे कुछ न कुछ करते रहते थे। इन संस्थाओं की उन्नति एवं उत्थान के लिए वे हमेशा प्रयत्नशील रहते थे। दूसरे की भलाई के लिए यदि उन्हें अपमानित भी होना पड़े तो वे बुरा नहीं मानते थे।

अग्रवाल समाज में फैली कुरीतियों से वे हमेशा क्षुब्ध रहते थे। यदा-कदा मुझसे अपने मन की बात कह कर बोझ हलका कर लिया करते थे। लक्ष्मी विवाह केन्द्र की स्थापना भी उन्होंने इसी पवित्र उद्देश्य के लिए की थी। जीवन के अन्तिम क्षणों में भी वे समाज सेवा से सम्बन्ध रहे। ●

If you have a taste of

QUALITY

for all your Office Furniture work

as well as show Room & Home Decoration

always use

HOLLYWOOD®

DECORATIVE LAMINATES

MARKETED BY :-

Ganga Sales Corporation

4/2, D. B. Gupta Road, Paharganj, New Delhi-110055

Grams : GANGASALES

Phohes : 51 60 44
51 81 64

"Discipline makes a nation great"

"अग्रवाल रत्न" मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल

छट्टन लाल गुप्ता
३०/१० शक्ति नगर,
दिल्ली-११००७

मा० लक्ष्मी नारायण जी को मैं सदा अग्रज की भाँति सम्मान देता रहा हूं। लगभग ८५ वर्ष की दीर्घायु पाकर उन्होंने स्वर्गारोहण किया। जीवन के अन्तिम क्षणों तक वे समाज और राष्ट्र की सेवा करते रहे, यही कारण था कि अग्रवाल समाज में सभी वर्ग की शक्तियों द्वारा वे सदा ही सम्मानित रहे। वे सेवा की प्रमिमूर्ति ही थे, समाजहित की भावना उन्हें सदा जागरुक रखती थी, मान-अपमान से ऊपर उठकर समृद्ध वर्ग से धन एकत्र कर निर्धन एवं आपद्ग्रस्त शक्तियों की सहायता करना उनके जीवन की अग बन गया था, इसीलिए वे रत्नकार भाँति अपना व्यक्तित्व अलग ही रगते थे। वास्तव में वे अग्रवाल समाज के रत्न ही थे।

उन्होंने समाजहित के अनेक ऐसे कार्य किए जो अग्रवाल समाज के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे जायेंगे। सन् १९३९ में उन्होंने 'वैश्य को-आपरेटिव कमर्शियल बैंक, दिल्ली' की स्थापना की, जिसका कार्यालय नई सड़क पर खोला। इस बैंक में वे सम्पन्न लोगों से ब्याज पर रुपया लेकर जमा करते थे और समाज के निर्धन लोगों को बहुत ही कम लाभ से ब्याज पर ऋण देते थे, जिससे सहस्त्रों लोग अब तक लाभ उठा चुके हैं। इसी प्रकार उन्होंने एक शिक्षा 'विधवा तथा सहायता कोष की भी स्थापना की। इसमें भी वे दान का रुपया जमा करते थे और समाज की विधवा बहनों को सिलाई मशीन, वस्त्र या मासिक सहायता के रूप में धन देकर सहायता करते थे। अनाथ तथा अभावग्रस्त बालक-बालिकाओं की शिक्षा का प्रबन्ध भी वे किया करते थे। कुछ को वजीफा देते थे तो कुछ को अनुदान परन्तु इस शर्त पर कि यदि वे जीवन में अच्छी स्थिति प्राप्त कर लें ती उक्त कोष की मूलधन लौटा देंगे।

समाज में दहेज-प्रथा से दुःखी लोगों की समस्या को सुलझाने के लिए उन्होंने एक 'मैरेज ब्यूरो' भी चला रखा था। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने सहस्त्रों ही युवा-युवतियों के वैवाहिक सम्बन्ध करा कर उनके अभिभावकों की चिन्ता का निवारण किया। उन्होंने अनेक धर्मशाला, भवन, आश्रम और स्कूल आदि के निर्माण में सक्रिय सहयोग दिया। शक्ति नगर में विशाल अग्रवाल भवन उन्हीं के प्रयत्न का फल है। वे वर्षों उसके प्रधान भी रहे। महाराजा अग्रसेन आश्रम ट्रस्ट, हरिद्वार' के वे आजीवन महामंत्री रहे। अग्रोहा में निर्माणाधीन भवनों में भी उनका बड़ा सहयोग रहा।

वे सेवा के अवसर ढूँढा करते थे। कुम्भ के अवसर पर हरिद्वार में तथा पर्व के समय कुरुक्षेत्र में वे सेवा-शिविर लगाया करते थे, जहाँ निःशुल्क आवास के अतिरिक्त भोजन का भी प्रबन्ध होता था। उन्होंने अनेक आँखों के शिविर तो प्रतिवर्ष ही लगवाये। महाराजा अग्रसेन जयन्ती का प्रचलन भी आपने ही किया था, जिसने आज विशाल और व्यापक रूप धारण कर लिया है।

समाजहित की दृष्टि से मास्टर जी की स्तवन जितना भी किया जाय, उतना थोड़ा ही है। वास्तव में उनका समूचा जीवन समाज हित के लिये समर्पित था। उन्होंने जो मार्ग दिखाया वह अनुकरणीय है। ●

स्मृति विशेषाँक पर शुभकामनाओं सहित :

Authorised Stockists

NBC

दूरभाष : कार्यालय 529626, 512643
निवास 505544, 505597

दीपचन्द दयालचन्द एन्ड कम्पनी

गुरुनानक बियरिंग मार्केट

३५-झन्डेवालान रोड, मोतिया खान, नई दिल्ली-११००५५

सहयोगी संस्थान :

दूरभाष : कार्यालय : 227533, 2517115

माडर्न स्टील कम्पनी

615-हेमल्टन रोड, कश्मीरीगेट, दिल्ली-110006

दूरभाष : कार्यालय : 588499

माडर्न पाइप कम्पनी

Y-166, लोहामण्डी, नारायणा, नई दिल्ली

दूरभाष : कार्यालय : 537364

गर्ग इन्टरप्राइजेज

WS-9 मायापुरी फेस-II, नई दिल्ली

अग्रवाल हितैषी मास्टर जी

मास्टर लक्ष्मीनारायण जी से मेरा चालीस वर्ष से घनिष्ठ सम्बन्ध था। वे मेरे यहाँ बराबर आते जाते थे, और मैं भी उनके यहाँ बराबर आता जाता था। मेरे और उनके बीच में एक घरेलू सम्बन्ध बन गया था। हमारी बातें व विचार विमर्श बिना किसी संकोच व हिचकिचाहट के हुआ करती थीं। मास्टर जी ने मेरे पास कभी भी अपने स्वार्थ केलिए कोई प्रस्ताव नहीं रखा। वे केवल एक ही विषय पर मुझसे मिला करते थे और वह विषय था, अग्रवाल समाज का कल्याण, अग्रवाल बन्धुओं की सेवा, सहायता और अग्रवाल परम्परा का फैलाव। इन सब उद्देश्यों की प्राप्ति और पूर्ति के लिये वे तरह-तरह की स्कीमें बनाया करते थे तथा उन स्कीमों को कार्यान्वित किया करते थे। मेरे प्रबन्ध में जितनी मिलें व प्रतिष्ठान थे उनमें अग्रवाल बन्धुओं को ज्यादा से ज्यादा काम दूं, यह उनका आग्रह रहा करता था। मुसीबत में पड़े अग्रवाल बन्धुओं को सहायता देने की उनको विशेष चिन्ता रहा करती थी। अग्रवाल समाज के हितैषी बहुत हुये हैं। और आज भी हैं परन्तु मेरी नजर में ऐसा कोई भी हितैषी नहीं आया है जो उनसे आधी भी लगन रखता हो। अग्रवाल समाज की भलाई के लिये कई लोगों ने काफी पैसे खर्च किये हैं, और अग्रवाल समाज की कुरीतियों को दूर करने के लिये काफी काम किये हैं पर मास्टर जी की तुलना में ज्यादा से ज्याद काम करने वाला व्यक्ति भी मास्टर जी की लगन और सेवाओं तक नहीं पहुंच पाया। हनुमान जी सबसे बड़े राम भक्त हुये हैं ऐसा माना जाता है। मेरी जानकारी में मास्टर जी सबसे बड़े अग्रवाल भक्त हुये हैं। और उन्होंने अग्रवाल समाज की तन मन, धन से अनेकों क्षेत्रों में सेवा की है। उनका जन्म जीवन और मृत्यु अग्रवाल समाज की सेवाओं से जुड़ा हुआ है। तथा बहुत समय तक जुड़ा रहेगा। यह देखा गया है कि निःस्वार्थ सेवा हमेशा जिन्दा रहती है।

मुरलीधर डालमिया
(भू० पू० प्रबन्धक)
बिड़ला मिल

मास्टर जी के निधन से अग्रवाल समाज को बड़ी चोट पहुंची है। जिसका अनुमान लगाना कठिन है। परन्तु मेरा ऐसा विश्वास है कि मरते-मरते भी मास्टर जी अग्रवाल समाज के लिये वरदान छोड़ गये हैं और वह वरदान शीघ्र ही उनकी अनुपस्थिति की पूर्ति करेगा। मैं मास्टर जी को अपनी श्रद्धाँजलि अर्पित करता हूं और मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति दे तथा उनकी प्रेरणा और लगन को ताजा और जीवित रखे।

Model Press Pvt. Ltd.

6-E, Rani Jhansi Road
NEW DELHI-110055
Phone : 520838

Quality Offset and Letter Press Printers
with facilities for
Photo Composing and Mechanised Composing

●

ANNUAL REPORTS
and
BALANCE SHEETS
A Specicality

महान संगठन कर्ता मास्टर जी

का
विस्मयकारी व्यक्तित्व
सदा बना

साधन-सम्पन्न श्रौर लक्ष्मी पुत्रों के लिए तो समाज-सेवा कोई दुष्कर कार्य नहीं है, लेकिन जो व्यक्ति बहुत ही सीमित साधनों को लेकर जन्मा हो वह यदि मात्र अपनी लगन, अपनी निष्ठा श्रौर अपने त्याग तथा अपनी तपस्या के बल पर जन-जन का लोकप्रिय बन जावे तो उसे समाज सेवा रत्न की संज्ञा देना ही पर्याप्त नहीं है श्रपितु उनको सचमुच सर्वश्रेष्ठ स्थान प्रदान किया जावे यह बहुत ही उचित, न्यायसंगत और अनिवार्य है। उनकी स्मृति में कृतज्ञ समाज ने अनेक घोषणाएं की हैं, इसका हार्दिक स्वागत है पर मैं चाहूंगा कि उनकी स्मृति में समस्त अग्रवाल अमाज और विशेषकर इसके नवयुवक उनके सिद्धान्तों को सत्य सिद्ध करने में जुट जावें।

अग्रवाल समाज को निरन्तर श्रागे बढ़ाते रहने की उनकी उत्कंठ श्रभिलाषा जीवन के अन्तिम क्षण तक उन्हें समाज से बाँधे हुए थी।

स्मृतियों को उलट-पलट कर झांकता हूं तो ऐसा याद पड़ता है कि मैं उन्हें तीस वर्ष से श्रधिक से निकट से जानता था। मुझे याद है मैं एक बार नई सड़क पर स्थित अग्रवाल महासभा के कार्यालय में उनसे मिला था। उसके उपरान्त मैं और मास्टर जी निकट से निकटतर और निकटतम आ गए। मैं स्वयं अनुभव और ज्ञान के श्राधार पर कह सकता हूं कि उस समय जो मेरे मन पर प्रभाव पड़ा था वह यह था कि व्यवहार, समाज सेवा और मानवता को प्रोत्साहन प्रदान करने वाले वे स्वयं ही एक प्रोत्साहन थे श्रौर स्वयं में ही एक सस्था थे।

अनुभूति श्रौर जीवनमयी रश्मियों में मुझे स्मरण श्राता है कि व मैंने पिछले कुछ सालों से उनके गिरते स्वास्थ्य को देखा था तो कई बार मैं बहुत ही चिन्तित भी हो उठता था मगर मास्टर जी को चाहे दीखना कम हो गया था तो भी वे श्रावाज से पहचान लेते थे। मैं दूर से ही कहता मास्टर जी मैं मिलिंद हूं तो वे इतने गद्‌गद् हो उठते थे कि शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। अतिम दिनों में तो उन्हें बैठाया भी गोदी में लाकर जाता था मगर तब भी उन्होंने समाज सेवा का व्रत नहीं छोड़ा।

मैंने जब बिड़ला मिल में मैनेजर का काम संभाला तो उसी दिन उनका मुझे बधाई देते हुए फोन मिला। मुझे ऐसा लगा कि मास्टर जी ने मुझे बधाई देकर अत्यधिक उपकृत ही किया है। इसका कारण यह था कि वे स्वय ही सामान्य-परम्परा के प्रकाशस्तम्भ थे और हर समय अपने से छोटों को सम्मान प्रदान कर उन्हें आगे बढ़ाने और समाज की सेवा में जुट जाने के लिए प्रेरित करते रहते ते। चाहे तो अग्रवाल महासभा की मुख-पत्रिका से मुझे सम्मानित पदक बांधने की बात रही हो और चाहे ग्रग्रवाल भवन पर ट्रस्टी के रूप में लिए जाने का निर्णय, मास्टर लक्ष्मी नारायण जी का एक ही रूप सबसे ऊपर उजागर होकर श्रा खड़ा होता है श्रौर वह था आदमी से काम लेने का उनका सकल्प और मनहर तरीका। निश्चय ही सोते जागते हर समय ग्रग्रवाल समाज को ग्रग्रसर करने की चिन्ता में लवलीन रहने वाला वह महापुरुष, वह मनीषी, वह कर्मपुरुष श्रौर वह सच्चा साधक श्राज प्रभु को प्रिय हो गया।

मिलिंद
ई-१४७
अशोक विहार फेज-१
दिल्ली-११००५२

श्याम गुप्ता

एवं

परिवार

दूरभाष :
निवास : 7116408
7128884
फैक्ट्री : 7113644

21/10, शक्ति नगर
दिल्ली-1 1 0 0 0 7

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :

संस्थापित—१९७०

दिल्ली स्वास्तिक को-आपरेटिव अरबन थ्रिफ्ट एण्ड क्रेडिट सोसायटी (लि०)

२६/१०२, शक्ति नगर, दिल्ली-११०००७

उन्नति की ओर अग्रसर

सोसायटी की प्रगति एक दृष्टि में

सन्	सदस्य संख्या	हिस्सा पूंजी	विभिन्न धरोहर	सुरक्षित फंड	ऋण
१-४-१९७०	३०	३००	३०	—	—
३०-६-१९८२	४२६७	१९,६२,५००	६४,०९,४३६	२,४७,७५९	९४,३५,१५०
३०-६-१९८३	—	२२,९७,९२०	६६,६८,६२०	२,४७,७५९	१,०७,१६,३२५

राम नारायण गुप्ता
संस्थापक

मनोहर लाल गुप्ता
प्रधान

लक्ष्मी चन्द गुप्ता
मंत्री

जय किशन गुप्ता
कोषाध्यक्ष

अग्रवाल संस्थाओं के संस्थापक, एवं संचालक —मास्टर जी

इस संसार में बहुत से व्यक्ति आते हैं और चले जाते है। परन्तु कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपना जीवन स्वयं अपने ही लिए नहीं वरन औरों के लिए भी जीते हैं—वही लोग समाज में अपनी छाप छोड़ते हैं। मास्टर लक्ष्मी नारायण जी भी उन्हीं में से एक थे।

मास्टर जी को निकट से जानने का जिन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ है, वे इस अनुभूति का समर्थन करेंगे कि उनका सानिध्य एक संगति एवं कर्म योगी से कम नहीं था। यह मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे स्व० लक्ष्मी नारायण जी को पास से जानने एवं उनके काफी नजदीक रहने का मौका मिला— मैंने मास्टर जी को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से देखा एवं पाया कि मास्टर जी ने समाज के लिए बहुत कुछ किया था जिसके लिए वे प्रशंसा के पात्र तो हैं ही बल्कि समाज में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य हैं। मास्टर जी जीवन-पर्यन्त समाज में व्याप्त रुढ़ियों एवं कुरीतियों को दूर करने का भरसक प्रयत्न करते रहे। समाज के सभी लोग परिचित हैं कि उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज के हित में, उसके उत्थान में समर्पित किया हुआ था। उन्होंने वैश्य समाज के उत्थान के लिए ही कई संस्थाएँ खड़ी की जो आज भी उनकी स्मृति दिलाती हैं। सन् १९३९ में अपने कुछ सह-योगियों से मिल कर वैश्य को-आपरेटिव कमर्शियल बैंक लि० की स्थापना की। उस समय इसके केवल ९ सदस्य थे और आज उनके द्वारा स्थापित इस बैंक के अढ़ाई हजार से ऊपर सदस्य हैं। न जाने वैश्य परिवार के कितने लोग इस बैंक की सहायता से अपने-२ मकान बना चुके हैं, कितनों ने अपने लड़के लड़कियों की शादी कर ली है।

शक्ति नगर दिल्ली का अग्रवाल भवन, जब तक रहेगा, वैश्य समाज मास्टर जी को याद रखेगा। अग्रोहे के उत्थान के लिए उनके हृदय में कितनी लगन थी कि सन् १९५० ई० में अग्रोहे में अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा, जो कि स्व० जमना लाल बजाज द्वारा स्थापित की गई थी—का अधिवेशन स्व० कमल नयन बजाज (सुपुत्र स्व० जमना लाल बजाज) की अध्यक्षता में हुआ। दिल्ली से तथा दूसरी जगहों से हजारों लोग इस दो दिन के अधिवेशन में सम्मिलित हुए। मैं भी मास्टर जी के साथ इस अधि-वेशन में था। इसके पश्चात् उन्हें अग्रोहे को बसाने की धुन सवार हुई तो ३०० एकड़ जमीन अग्रोहे में खरीद ली। वैश्य जाति के नवयुवकों को उच्च तकनीकी शिक्षा सहायतार्थ कोष स्थापित किया। इसी तरह विधवाओं के लिए भी विधवा-सहायताकोष स्थापित किया। हरिद्वार के पास स्थापित वृद्धाश्रम उन्हीं के अथक प्रयत्नों का फल है। मास्टर जी स्वयं में एक संस्था थे, यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं ?। कहने का तात्पर्य यह है कि यथा नाम तथा गुण और सादा जीवन, उच्च विचार के धनी इस व्यक्तित्व ने समाज के मान-अपमान की परवाह न कर जो भी उनसे बन पड़ा, निरन्तर समाज के लिए किया है। उनके द्वारा सम्पादित कार्य उनके बहुमुखी व्यक्तित्व के परिचायक हैं। उनके द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों की सुवास आज वैश्य जाति के जन-जन को महका रही है।

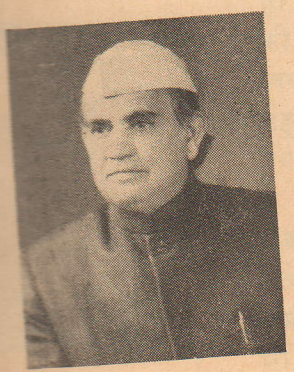

दीवान चन्द बंसल
प्रधान
वैश्य को-आपरेटिव कमर्शियल बैंक,
नई सड़क, दिल्ली-६

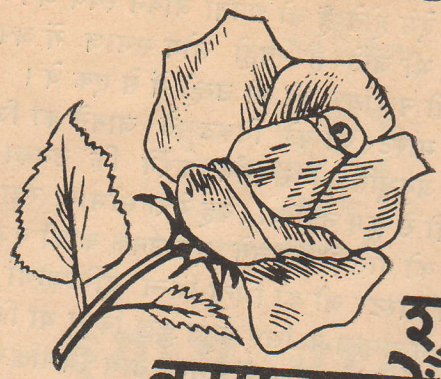

शुभ
कामनाओं
सहित

शीघ्र खुल रहा है

दूरभाष : 8603, 8692, 8864

पसवारा पेपर्स (प्रा.) लि.

निर्माता :

स्ट्रा बोर्ड एवं पेपर बोर्ड

पसवारा हाउस, बागपत रोड

मेरठ सिटी (उ० प्र०)

मैनेजिंग डायरेक्टर : श्री राजेश्वर प्रसाद अग्रवाल

आखरी दम तक समाज सेवा में लीन--मास्टर जी

जगन्नाथ गोयल
महामंत्री—अग्रवाल भवन ट्रस्ट
शक्ति नगर, दिल्ली

मास्टर लक्ष्मी नारायण जी को मैं सन् १९३९ से जानता था। मेरी उनकी सर्व प्रथम मुलाकात रायसाहब श्री खुशी राम छारिया की मिजाज पोशी के समय पर हुई थी। मुझे पहली मुलाकात में ही अनुभव हो गया था कि मास्टर जी बेलाग और अग्रवाल समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता के रूप में उभर कर कौम की सेवा करेंगे। तथा यह बात भी बिल्कुल सिद्ध हो गई कि मास्टर जी ने आखरी दम तक समाज की जो सेवा करी हैं कोई भी नहीं भुला सकता।

उनके द्वारा सन् १९३८ में सोनीपत कांफ्रेंस तथा वैश्य समाचार अखबार का सफल संचालन हुआ। मास्टर जी से विचार-धारा भिन्न होने पर भी जब मैं मास्टर जी के ज्यादा निकट १९८० में अग्रवाल भवन शक्ति नगर का मंत्री बना तथा उनकी प्रधानता में कार्य किया तो जो मेरे दिमाग में भिन्नता थी वह खत्म हो गई और उनको एक आदर्श रूप में पाया।

मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि शक्ति नगर से मास्टर जी के गुजरने के बाद अग्रवाल समाज का केन्द्र खत्म हो गया। मैं अग्रवाल भाइयों से प्रार्थना करता हूं कि मास्टर जी द्वारा छोड़ गये कार्यों को पूरा करें और उनके द्वारा बताये मार्ग पर चलें यही मेरी हार्दिक शुभकामनाऐं उनके प्रति होंगे। ●

शान्त, निष्पक्ष एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता -मास्टर जी

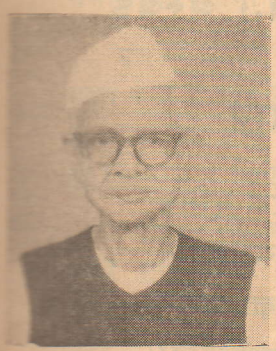

जितेन्द्र नाथ अग्रवाल
३८९९ चरखेवालान, दिल्ली

आपका पत्र मिला स्वर्गीय मास्टर जी का पूरा परिचय दिया जाए तो एक पोथा तैयार हो जावे इस लिए बहुत थोड़ा सा ही लिख रहा हूं। मास्टर जी से मेरा परिचय लगभग पच्चास साल पहले आ था, जिस प्रेम से वह शुरु में मिले थे आखिरी वक्त तक उस ही प्रेम से मिलते रहे। हर आदमी से प्रेम करना तथा हर एक के काम आना, वह अपना कर्तव्य समझते थे, वैश्य को-आपरेटिव कमर्शियल बैंक इतना ऊँचा ले जाना उनकी ही लगन और कार्य प्रणाली का उदाहरण है। अग्रवालों के लड़के-लड़कियों की शादी तथा उनके रोजगार की हमेशा चिन्ता रहती थी। अग्रोहा का विकास हो या हरिद्वार की धर्मशाला या शक्ति नगर की धर्मशाला या महाराजा अग्रसेन की सवारी अग्रवालों का जलूस, जलसा व मीटिंग हर जगह उनका योगदान मिलेगा। उनके पास शादी विवाह, नौकरी, रोजगार के लिए प्रातः से ही आदमी आते रहते थे। बीमारी की हालत में भी क्या मजाल मांथे पर शिकन आ जावे। जैसा शुरू में मास्टर जी ने अग्रवालों के उत्थान का बीड़ा उठाया आखिरी दम तक उसको निभाया। ऐसे निष्पक्ष, कर्मठ कार्यकर्ता बहुत कम होते हैं। मानना पड़ेगा इन में कोई ईश्वरी शक्ति ही थी।

अब इस कार्य को आगे बढ़ाना हमारा आपका सबका कर्तव्य है। ●

शुभ
कामनाओं
सहित

गीता ट्रेडिंग कम्पनी

किराना, रंग, रसायन

2105, खारी बावली, दिल्ली-110006

कार्यालय : 2513842

रामनिवास अग्रवाल : 233034
233998

दूर संदेश : दादीसती

श्यामलाल गुप्त : 2511247

संग्रहकर्त्ता :

दी अनिल स्टार्च प्रोडक्टस लिमिटेड, अहमदाबाद

●

दी इन्डो बोरेक्स एन्ड केमीकल्स प्रा. लि., बम्बई

विक्रेता :

रंग रसायन में काम आने वाले प्रमुख पदार्थ

एवं

ग्लूकोस लिक्विड
ग्लूकोस पाउडर
डेक्स्ट्रीन
स्टार्च (अरारोट)
बोरेक्स

अखिल

बोरिक एसिड
ग्लीसरीन
टोपिका फ्लोर
सागोदाना
ब्रिटिश गम

गोल्ड फिंगर स्टार्च

भेंट वार्ता :—

स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल से

मुझे कुछ आवश्यक कार्यवश २५-२-८१ को देहली जाना पड़ा देहली पहुंचकर पता चला कि २७-२-८१ को साऊथएक्सटैन्शन धर्म भवन में अग्रवाल समाज का एक विशेष कार्यक्रम होने जा रहा हैं, यह मेरे लिये एक सुअवसर था नेताओं से मिलने का, उनको सुनने और समझाने का इसी संदर्भ में मेरी भेंट अग्रवाल समाज के महान नेता मास्टर लक्ष्मी नारायण जी से धर्म भवन में हुई।

मास्टर जी का व्यक्तित्व बड़ा शालीन, सरल और सहज था, उनसे मेरी मुलाकात बड़ी आत्मीय थी।

बातचीत के दौरान मैंने मास्टर जी से पूछा—"मास्टर जी आपने समाज सुधार और एकता के लिये काफी काम किया है कृपया अपने कामों के बारे में कुछ जानकारी देने का कष्ट करें।"

मास्टरी जी ने कहा—"मेरे बस का जो था मैंने किया पर अभी तो बहुत कुछ करना बाकी हैं, मैं तो बूढ़ा हो चला हूं अब तो तुम लोगों को आगे आना चाहिए।"

मैंने कहा—"मास्टर जी आपके बताये रास्ते पर अब तो सैकड़ों लोग चल रहे हैं और समाजोत्थान तथा सेवा के कामों में लगे हुए है।"

मास्टर जी—"नहीं, इतना काफी नहीं हैं बहुत काम है और हजारों कार्यकर्त्ताओं की जरुरत हैं। दूसरों की बात छोड़ो बताओ तुम क्या कर रहे हो। समाज के लिए तुमने क्या किया।"

"मास्टर जी मुझे तो फुर्सत नहीं है। कई दूसरे सार्वजनिक संगठनों में मैं फंसा हुआ हूं। समाज के लिये समय निकाल पाना मेरे लिये संभव नही है।" मैंने कहा।

मास्टर जी ने बड़ी गम्भीरता से कहा—"देखो सार्वजनिक कामों के लिये और हजारों व्यक्ति हैं। वहाँ कमी नहीं है समाज का काम करने की बहुत कमी हैं। समाज को तुम्हारी जरुरत है' समाज के लिये तुम्हारा कुछ फर्ज बनता है।"

मैंने प्रश्न किया—"मास्टर जी आपकी, समाज के लिये भावी योजनाऐं क्या हैं। कृपया कुछ प्रकाश डालें।"

मास्टर जी—"हमारा विचार टैक्नीकल कालिज खोलने का था जमीन भी खरीद ली है पर अब यह काम बाद के लिए उठा दिया है। अब हमारा विचार अग्रोहा को तीर्थ स्थल के रूप में विकसित करने का है। सारी योजना बन चुकी है, हम सबने मिलवर इसे पूरा करना है। इसके द्वारा हमारी एकता और तरक्की को बल मिलेगा और सारा समाज धार्मिक तथा सांस्कृतिक एकता में आबद्ध होगा। हरिद्वार में अग्रसेन आश्रम की योजना है। वहाँ भी काम हो रहा है, यह सारे काम हैं, इनको पूरा करो और इनमें खुलकर हिस्सा लो।"

मैंने बात आगे बढ़ाई—"कृपया सुधार के सम्बन्ध में आप कुछ बतायें।"

मास्टर जी—"सुधार के लिए तो बहुत काम होना है अभी तो कुछ भी नहीं हुआ जितना बड़ा समाज है उतना काम नहीं हो रहा है, इसे अपने हाथ में लो, और तन, मन, धन से इसमें लग जाओ सुधार के लिए हजारों काम है और लाखों कार्यकर्त्ताओं की जरुरत है। शिक्षा, नारी जागरण, युवा प्रतिमाओं को प्रोत्साहन, कमजोर भाइयों की सहायता, दहेज और सेवा के काम, इन क्षेत्रों में काफी काम करने की जरुरत है। पर यह सब बातें कहने से नहीं होगी। तुम्हारे जैसे हजारों को इस में लगना होगा। जी, जान से तब ही कुछ काम होगा मेरा अन्तिम प्रश्न था —"आज की परिस्थितियों में क्या यह जरूरी नहीं है कि सारे वैश्य समाज को संगठित और जागृत किया जाये।"

मास्टर जी—"क्यों नहीं, यह तो बहुत जरूरी है अग्रवाल समाज वैश्य समाज की एक बड़ी इकाई है अग्रवालों की एकता और ताकत सारे वैश्यों की एकता और ताकत है। और वैश्य की ताकत और एकता अग्रवालों की ताकत और एकता है। इसके लिए तुम से जो बन पड़े करो, जरुरत बातों की नहीं काम की है। पर जो भी करो निःस्वार्थ होकर करो, तन, मन, धन से करो।

मेरी उस महान विभूति से यह भेंटवार्ता मेरे लिए अविस्मरण बन गई है मास्टर जी को मैंने विनम्र सरल और समाज के लिये समर्पित पाया। हम उनके सपनों का साकार कर सके यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि तथा उनकी जन्म तिथि मनाने की सार्थकता होगी जस कर्म निष्ठ प्रणेता को हमारे शतः शतः प्रणाम। ●

श्री रामकृष्ण हर्ष
महासचिव
अखिल भारतीय अवधवाल वैश्य महासभा, मेरठ

मास्टर जी का अपने जीवन में एक नया कार्य

स्वर्गीय मास्टर जी से जब भी मिला उन्हें परिवार के सदस्य की तरह पाया। अग्रवाल समाज में जो उन्होंने विवाह करवाने का बीड़ा उठाया था बहुत ही पवित्र कार्य था जो आज भी चल रहा है। जब तक वह जिन्दा रहे उनका अग्रवाल समाज में बहुत सम्मान किया जाता था और उनकी प्रेरणा के फल से अग्रवाल समाज के हर वर्ग के लोग उनसे मिलने आते थे और समाज की समस्याओं पर विचार-विमर्श करते थे। मास्टर जी ने अपने जीवन में अपने सीमित सा वन्धे के होते हुए भी कुछ ऐसे कार्य शुरू किये जिससे समाज के हर वर्ग के व्यक्ति ने फायदा उठाया और आज भी उठा रहा है जैसे –लक्ष्मी विवाह केन्द्र के माध्यम से विवाह सम्बन्धी मामलों के लिए सस्था बनाई, जिसके द्वारा अग्रवाल समाज के सभी बर्ग के लोग अपने-२ बच्चों की शादी के सम्बन्ध में बहुमुल्य जानकारी प्राप्त करते थे और कर रहे हैं तथा लाभ उठा रहे है। हमारी भगवान से यही प्रार्थना है उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ती प्रदान करें। तथा उनके सुपुत्र चन्द्र मोहन गुप्ता को उनके द्वारा किये जा रहे सामाजिक कार्यों में शक्ति देवें। ●

राजेश्वर प्रसाद जी M D
मै० पसवारा पेपर्स प्रा० लि०, मेरठ

महान समाज सेवी

मा० लक्ष्मी नारायण अग्रवाल

मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल एक बहुत बड़े समाज सेवी एवं अग्रवाल समाज के संरक्षक रहे। उन्होंने विभिन्न सामाजिक संस्थाओं को अपना पूर्ण योगदान देकर अग्रवाल समाज की भरसक सेवा की जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति एवं आपके परिवार जनों को इस अपूर्णिय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। ●

चन्द्र देव चौधरी
महामन्त्री
पेपर मर्चेन्टस एसोसिएशन (रजि०)

स्वर्गीय मास्टर जी बहुत ही सज्जन आदमी थे। अग्रवाल समाज के लिये जो कार्य वह कर गये हैं उसे इतिहास में कभी भी नहीं भुलाया जा सकेगा। आगे आने वाली पीढ़ी हमेशा प्रेरणा लेती रहेगी। पैरों से लाचार व शरीर से क्षीण होते हुए भी घर पर अग्रवाल परिवार के लड़के-लड़कियों के विवाह का कार्य कर रखा था। जो एक बड़ा ही महान पुण्य का कार्य था। छोटे-बड़े सभी के लिये आपके दिल में समान प्यार था। सर्व प्रथम अग्रसेन जयन्ती मनाना आपने ही आरम्भ की थी। उनके द्वारा दर्शाये मार्गों पर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ●

सरिश चन्द्र गुप्ता
जी० एस० आयरन इण्डस्ट्रीयल वर्क्स,
भोला रोड, मेरठ

मेरे संस्मरण और मास्टर जी

वैद्य निरंजन लाल गौतम, शाहदरा, दिल्ली-३२
महामन्त्री—अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा

श्रद्धेय स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल के साथ मेरा ४४ वर्ष पुराना परिचय था। यदि कहूं कि अग्रवाल सभा की सेवा का प्रथम पाठ मैंने इन्हीं के चरणों में बैठ कर सीखा था तो अति-श्योक्ति न होगी। मेरा श्री मास्टर जी के साथ परिचय देहली के सुप्रसिद्ध स्व० लाला तनसुख राय जी जैन के माध्यम से हुआ था जो स्वयं ही समाज सेवी और मास्टर जी के घनिष्ठ सहयोगियों में से थे।

अपनी आजीविका उपार्जन के पश्चात् स्व० मास्टर जी का सम्पूर्ण समय समाज सेवा में जाता था। वे कोई न कोई ऐसी योजनायें बनाते रहते थे जिनसे अग्रवाल समाज का संगठन हो और यह जाति ऊपर उठे। इस कार्य के लिये वे अनेक अवसरों पर सार्वजनिक अधिवेशनों का आयोजन करते, समाज के प्रसिद्ध उद्योगपतियों से सम्पर्क करके उन्हें अधिवेशनों के प्रधानपद पर सुशोभित करते थे। देश के छोटे बड़े नगरों में जाना और अग्रवाल समाज के संगठन का बिगुल बजाना उनका परम कर्तव्य था अतः सर्वसाधारण से लेकर उद्योगपतियों तक उनकी पहुँच के कारण अग्रवाल समाज संगठन का कार्य दिनों दिन बढ़ता ही गया।

आज से ४० वर्ष पूर्व देहली में ही नहीं देश के अनेक भागों में महाराजा अग्रसेन जयन्ती की बात कोई सोचता भी न था ऐसे बंजर क्षेत्र में स्व० मास्टर जी ने अपने सेवा और लगन के बीज बो कर बंजर क्षेत्र को हरा-भरा बनाया और आज दिन देश विदेश में ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ महाराजा अग्रसेन की जय जयकार न होती हो और उनकी जयन्ती सोल्लास न मनाई जाती हो। स्व० मास्टर जी ने वर्षों तक अपने हाथ से अग्रसेन जयन्ती प्रचार के उद्देश्य से दरी बिछा कर लोगों को सभा में आमन्त्रित किया और जयन्ती प्रचार के लिए क्षेत्र तैयार किया। ऐसे कठिन समय में स्व० मास्टर जी के साथी रहे एक ढोलक, लालटेन और बिछाने के लिये दरी। जो श्रद्धालु जन सभा में आते स्वर्गीय मास्टर जी उन तक अपनी आवाज पहुंचाते। इस प्रकार वर्ष आये, और चले गये। अन्त में उनके इस उपयोगी उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए कुछ उत्साही नवयुवक सामने आये और उनकी संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती ही गई और अन्त में सफलता ने स्व० मास्टर जी को मुकुट प्रदान किया।

आपने वैश्यों के गुणगान और विश्व में वैश्य जाति के कृतित्वों को उजागर करने के उद्देश्य से वैश्य डायरेक्ट्री तथा व्यापार तथा उद्योग परिचय ग्रन्थ नामक दो अमूल्य ग्रन्थ प्रकाशित किये। इन ग्रन्थों में उनके सहयोग और संरक्षक बने देश के जाने माने उद्योगपति—सर्वश्री सर पदमपत सिंघानिया, रा० ब० सेठ गूजरमल मोदी, कुवंर कृष्णचन्द्र पोलीभीत, रायजादा बृजमोहन, दिल्ली, सेठ रामरत्न गुप्त, कानपुर, सेठ जी०डी० सोमानी सेठ राजेन्द्र लाल, शामली, सेठ रामनाथ, आनन्दी लाल पोद्दार, कलकत्ता आदि। इससे स्व० मास्टर जी के देश व्यापी प्रभाव को भली-भाँति आंका जा सकता है।

स्वर्गीय मास्टर जी ने अग्रवाल समाज के लिए अग्रोह तथा अग्रोहा तीर्थ नामक मासिक पत्रों का प्रकाशन बड़ी लगन से किया और आज दिन उनके सुपुत्र श्री चन्द्र मोहन जी गुप्त उनकी आवाज को यथापूर्व बड़ी तन्मयता के साथ बुलन्द किये हुए हैं। आज दिन अग्रोहा तीर्थ को एक नथा रूप देकर श्री चन्द्र मोहन जी ने अपने पिताश्री के पदचिह्नों पर चलने का का बीड़ा उठाया हुआ है।

हमारे देखते-देखते स्व० मास्टर जी ने वैश्य को-आपरेटिव बैंक की स्थापना ऐसे समय में की जब १०/- का एक शेयर क्रय करने का उत्साह किसी में नहीं था परन्तु मास्टर जी की सूझ-बूझ

तथा लगन का लोहा मानना पड़ता हैं कि उनके अथक प्रयत्नों से आज दिन वैश्य को-आपरेटिव बैंक दिल्ली के वैश्य समाज की सर्वाधिक हितकारिणी संस्था बन गई है और इसके माध्यम से अनगिनत वैश्य भाइयों ने अपने व्यापारिक प्रतिष्ठानों को ऊँचा उठाया है। इस बैंक के सामान्य सहयोग को प्राप्त कर कई व्यापारी तो करोड़पति बन चुके हैं। आज दिन इस बैंक की सदस्य संख्या ३००० के आसपास है। विदित हो कि स्व० मास्टर जी ने इस बैंक की स्थापना सन् १९३९ में मात्र १४ सदस्यों के सहयोग से की थी। आप वर्षों तक इस बैंक के मानद मन्त्री रहे।

सन् १९५७ में स्व० मास्टर जी के अथक प्रयत्नों से देहली के समृद्ध एवं अग्रवालों के गढ़ शक्तिनगर में अग्रवाल भवन ट्रस्ट की स्थापना हुई और उसने एक विशाल भवन को जन्म दिया। इस अग्रवाल भवन में कभी विवाहों की शहनाइयाँ बजती हैं। तो कभी गम्भीर धर्म चर्चा प्रवाहित होती है। इस भवन का प्रयोग देश की राजनीति गम्भीर मन्त्रणाओं के लिए भी सुलभ हैं। यह भवन सामाजिक गतिविधियों के लिए वरदान सिद्ध हुआ है। इस भवन से प्रेरणा लेकर आज दिन देहली के विभिन्न क्षेत्रों में एक दर्जन से अधिक अग्रवाल भवनों का निर्माण हो चुका है।

जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं स्व० मास्टर जी ने महाराजा अग्रसेन जी को घर-घर में पुजवाया, उन्होंने अग्रवालों को जन्मभूमि अग्रोहा को पुनः बसाने का भी स्वप्न देखा और इस कार्य के लिये ३०० बीघा (३ लाख वर्ग गज़) भूमि अग्रोहा के प्राचीन किले के अवशेषों के निकट क्रय की और उस भूमि पर महाराज अग्रसेन इन्जीनियरिंग एण्ड टैक्नीकल कालेज की स्थापना का निर्णय किया। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु श्री अग्रसेन इन्जीनियरिंग एण्ड टैक्नीकल कालेज सोसायटी की स्थापना की गई। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि अग्रोहा को पुनः बसाने का निर्णय अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा (सेठ जमना लाल जी बजाज द्वारा सन् १९१८ में संस्थापित) ने अपने देहली अधिवेशन सन् १९४८ में किया था जिसके स्व० मास्टर जी महामन्त्री थे।

महा सभा के इस प्रस्ताव को क्रियान्वित करने के लिये मास्टर जी के अनथक प्रयास से सन् १९५० में अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा की ओर से अपने १८वें अधिवेशन में श्री कमल नयन जी बजाज की अध्यक्षता में अग्रोहा में श्री अग्रसेन इन्जीनियरिंग एण्ड टैक्नीकल कालेज की स्थापना का निश्चय किया गया था। इस कार्य को पूरा करने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाने के उद्देश्य से अग्रोहा के प्राचीन दुर्ग की तलहटी में राजमार्ग के साथ साथ ६ कमरे कार्यालय तथा बाहर से आने वाले यात्रियों के ठहरने के लिये बनवाये गये और अग्रोहा की यात्रा पर आने वाले अग्रवालों की सुख-सुविधा की पूरी व्यवस्था की गई थी।

आगे चल कर स्व० मास्टर जी ने इसी भूमि में से २३ एकड़ भूमि अग्रोहा विकास ट्रस्ट को अग्रोहा तीर्थ बनाने के लिये निःशुल्क दे दी जिस पर आज दिन अग्रोहा तीर्थ का निर्माण कार्य चल रहा है।

स्व० मास्टर जी ने सन् १९४८ से अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा की बागडोर अपने हाथ में संभाली और ७ जनवरी १९८२ तक वे इस पद को सुशोभित करते रहे। सन् १९८२ में मास्टर जी का स्वास्थ्य इतना बिगड़ गया था कि उन्होंने स्वेच्छा से कार्यकारिणी समिति के सम्मुख अपना पद भार सौंप दिया और इन संस्मरणों के लेखक (वैद्य निरंजन लाल जी गौतम) को उनके स्थान पर इस महासभा का महामन्त्री मनोनीत किया गया। कार्यकारिणी समिति के दूसरे प्रस्ताव के अनुसार स्व० मास्टर जी इस महा सभा के आजीवन संरक्षक बने रहे। स्व० मास्टर जी महा

स्व० मास्टर जी का अन्तिम जीवन श्री अग्रसेन आश्रम, हरिद्वार के निर्माण में व्यतीत हुआ और मुझे यह देख कर परम सन्तोष होता है कि मास्टर ने जो कार्य अपने हाथ में लिया उसे पूरा किया और अपने प्रयत्नों को पल्लवित, पुष्पित तथा फलित होते हुए देखा। ●

मास्टर जी का व्यक्तित्व मेरी दृष्टि में

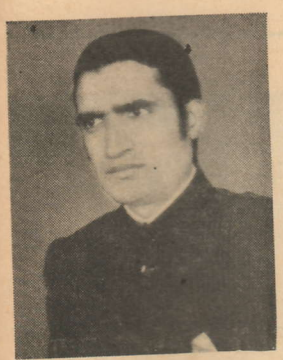

मुरारी लाल अग्रवाल
सम्पादक
जगत टाइम्स, मथुरा

सम्पर्क सूत्र :
गोवर्धन रोड,
मथुरा

मास्टर लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल दिल्ली के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ता और नेता थे। वे एक संस्था थे। उनका शरीर जब नहीं चलता था तब भी उन्हें सामाजिक कार्य करने की धुन सवार थी। हाथ पैर हिलते थे और उन्हें बोलने में कठिनाई होती थी फिर भी दिल्ली से चल कर शाहदरा अग्रवाल महासभा की बैठक में आते थे।

मास्टर जी को मैंने २० वर्षों तक अति निकट से देखा। उनका स्नेह प्राप्त किया और मुझे यह स्वीकार करने में गर्व की अनुभूति होती हैं कि जातीय समाजिक कार्य की प्रेरणा मुझे मास्टर जी से प्राप्त हुई। बड़ी आत्मीयता का उनका भाव था।कई बार मास्टर जी ने मुझे और हैदराबाद के भाई दुली चन्द शशि को अपने हाथ से बनाकर खाना खिलाया। मास्टर जी से जब भी मेरा मिलना होता, तब लगता कि किसी अच्छे और नेक व्यक्ति से मिलना हुआ है।

इसे कौन नहीं जानता कि दिल्ली में वैश्य को-आपरेटिव बैंक की स्थापना कर मास्टर जी ने न जाने कितने अग्रवाल वैश्य बन्धुओं को आर्थिक सहायता प्रदान की और बहुतों को ऊपर उठाने का कार्य किया। अग्रसेन जयन्ती मनाने का प्रचार-प्रसार करने से लेकर अग्रोहा का विकास करने, समाज में संगठन की भावना पैदा करने और अनेक निर्माण कार्य मास्टर जी ने अपने जीवनकाल में किए। अकेले चलकर भी उन्होंने कार्य किया, यह मास्टर जी की लगन और सूझबूझ की बात थी। झूंठ बोलने और अपनी हैसियत का झूँठा प्रदर्शन करने की उनकी आदत नहीं थी।

अग्रवाल-वैश्य समाज को जागृत करने का बीड़ा मास्टर जी ने उठाया था, आज जो कुछ दीखता है, उन्हीं के प्रयासों का परिणाम है। अग्रोहा के कार्य में भी मास्टर जी नींव के पत्थर हैं। भवन की चोटी हैं। इसका स्वप्न उन्होंने देखा था।

समाज के कार्य को अंजाम देने और इसका कोई लाभ न चाहने के लिए आज मास्टर लक्ष्मी नारायण पैदा करने की आवश्यकता है। ●

सामाजिक कार्यों के प्रेरक मार्ग-दर्शक

—रामेश्वर दास गुप्ता
महामन्त्री, अग्रसेन अरबन थिफ्ट
एण्ड क्रेडिट सोसायटी
जयदेव पार्क, नई दिल्ली-२६

स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल के मन में अग्रवालों के सर्व विधि उत्थान के लिये विशेष लग्न थी। देश भर में अग्रसेन जयन्तियों के आयोजन कर अग्रवाल संगठन, अग्रवाल बैंक, अग्रवाल भवन एवं रोजगार सम्बन्धी सहयोग के लिये अग्रवाल बन्धुओं में चेतना जाग्रत की। जयदेव पार्क में अग्रवाल भवन और अग्रसेन अरबन थि. एण्ड क्रे. सोसायटी का निर्माण उन्हीं की प्रेरणा के फल हैं। अग्रवालों के प्रत्येक कार्यक्रमों में उनकी उपस्थिति अनिवार्य थी। अपनी सीधी सादी भाषा में अग्रवालों के लिये जो वह आह्वान करते थे उसका उपस्थित जन समूह पर अच्छा प्रभाव पड़ता था। जिसका कारण था अग्रवाल समाज के लिये समर्पित उनका व्यक्तित्व। उन्होंने जो मार्ग दर्शन अग्रवाल समाज के लिये दिया है वह सदा सर्वदा प्रेरक रहेगा। ●

अग्रवाल समाज की महान विभूति

—राम किशन सिंहल
संरक्षक अग्रवाल समाज, त्रिनगर
बी-१०/५ ग्रुप इन्डस्ट्रियल एरिया
वजीरपुर, दिल्ली-५२

मैंने जबसे अग्रवाल समाज त्रिनगर की गतिविधियों में सक्रिय भाग लेना प्रारम्भ किया तभी से मैं मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल को अग्रवाल समाज के महान नेता एवं कर्मठ समाज सेवी के रूप में जानने लगा। मास्टर जी अग्रवाल समाज के कार्यक्रमों में प्रायः उपस्थित होकर समाज के लिये किये हुये कार्यों से लोगों को अवगत कराते थे। तथा समाज सेवा के लिये प्रेरित करते थे। त्रिनगर अग्रसेन जयन्ती, अग्रवाल धर्मशाला निर्धन सहायतार्थ किये जा रहे कार्यों के पीछे उनकी ही प्रेरणा एवं मार्ग दर्शन है। वास्तव में मास्टर जी अग्रवाल समाज की महान विभूति थे। ●

स्वर्गीय मास्टर जी की अन्तिम इच्छा

समाज में कुछ ऐसे व्यक्तित्व होते हैं जिनकी सामाजिक उपलब्धियों व कार्यकलापों की छाप वर्षों बनी रहती हैं। वह लोग निःस्वार्थ भाव से सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में बल्कि निष्ठावान और लगन से समाज को एकत्रित कर उसमें नई चेतना व जागृति लाने में समर्थ होते हैं। ऐसे ही में स्वर्गवासी मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल का नाम कर्मठ विलक्षण, प्रतिभा सम्पन्न, तेजस्वी, सामाजिक चिन्तक एवं सर्व माननीय प्रमुखता के रूप में बड़े आदर से लिया जाता है।

मेरा परिचय मास्टर जी से कोई पिछले १० वर्षों से था। उनके बारे में पहले बहुत कुछ सुन रखा था परन्तु उनसे प्रथम भेंट करने का सुअवसर उनके सुपुत्र श्री चन्द्र मोहन गुप्ता के द्वारा प्राप्त हुआ। उसके उपरान्त मैं उन्हें निरन्तर मिलता रहा और कई सामाजिक व व्यक्तिगत विषयों पर उनका परामर्श तथा आशीर्वाद लेता रहा।

वैश्य समाज और विशेष कर अग्रवाल समाज के उत्थान हेतु विभिन्न कार्यक्रमों हेतु उनकी सदैव चिन्ता बनी रहती थी सामाजिक उत्थान की कोई भी योजना हो, किसी संस्था या व्यक्ति के द्वारा शुरू की गई हो, मास्टर जी का पूर्ण समर्थन व शुभकामनाऐं सदा ही रहती थी।

उनके संरक्षण में जब अखिल भारतीय स्तर पर एक विशाल वैश्य कोष प्रकाशित करने की चर्चा आई तो उन्होंने अपने पिछले ५० वर्षों के अनुभवों के आधार पर संयोजकों की योजना को जहाँ सराहा वहाँ चेतावनी भी दी कि यह कार्य इतना सुगम नहीं जितना की वह सोचते हो। मास्टर जी ने अपने संरक्षण की अनुमति देते हुए संयोजकों को परामर्श दिया कि वे इस कार्य में पूरे भारत के भिन्न-भिन्न स्थानों से सामाजिक नेताओं व कार्यकर्ताओं का योगदान लें और इस विशाल कोष को अग्रोहा स्मृति ग्रन्थ के नाम से प्रकाशित करें।

सुदर्शन कुमार सवारा
महामन्त्री
दिल्ली प्रदेश महाजन सभा
ए-२/१०० सफदरजंग एन्क्लेव,
नई दिल्ली-२९

स्वास्थ्य काफी समय से ठीक न होने के उपरान्त भी वह समय-समय पर अग्रोहा स्मृति ग्रन्थ की प्रगति पूछते रहते थे और उसके लिये अपने सुझाव देते रहते थे। कई बार स्वयं प्रतिष्ठित महानुभावों को उनके सहयोग के लिये पत्र भी लिखते रहते थे। अग्रोहा स्मृति ग्रन्थ की सफलता शायद उनके जीवन की अन्तिम इच्छा रही हो। अग्रोहा स्मृति ग्रन्थ का का कार्य पूरे वेग के साथ चल रहा है और उनकी आने वाली पुण्य तिथि तक उनकी यह अन्तिम इच्छा भी पूर्ण होगी, ऐसा विश्वास है। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ●

सहायक एवं मार्ग-दर्शक

स्व० मास्टर जी

जगदीशराय गुप्ता
ए-६५, विवेक विहार,
दिल्ली-३२

वैश्य जाति की महान विभूति स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण जी से मेरा परिचय आज से लगभग २० साल पहिले हुआ था जब मैं देहली शक्तिनगर आकर रहने लगा था तब से मेरा सम्पर्क उनसे बराबर बना रहा। वे आडम्बर रहित मिलनसार व्यक्ति थे। जब एक बार कोई व्यक्ति उनके सम्पर्क में आ जाता था तो वह उनका होकर रह जाता था।

वे कर्मयोगी देशभक्त तथा परोपकारी व्यक्ति थे। उनमें समाज सेवा की लग्न इतनी थी कि वे रात दिन उसी में लगे रहते थे। महाराजा अग्रसेन के समाजवाद संगठन तथा परोपकारी भावना से वे ओत-प्रोत थे और जीवन पर्यन्त उसी में लगे रहे इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने अग्रवाल भवन, अग्रोहा तीर्थ, वैश्य को-आपरेटिव बैंक आदि की स्थापना की। शिक्षा के क्षेत्र व समाज के संगठन आदि हर क्षेत्र में उनका पूरा सहयोग समाज को मिलता रहा।

वैश्य को-आपरेटिव बैंक स्थापित कर उन्होंने समाज के निम्न व मध्यम वर्ग के लोगों को कर्ज दिलाकर सहायता की। बिधवाओं की सहायता, छोटे उद्योग धन्धे स्थापित करवाने तथा मकान बनाने में सहायता की। एक बार १९६५ की बात है वे मेर पास आये और उन्होंने पूछा कि काम से कहीं जाना तो नहीं मैंने कहा आज इतवार है कोई विशेष प्रोग्राम नहीं है तो कहने लगे मेरे साथ चलो हमारे बैंक के एक मदस्य ने सीलमपुर (शाहदरा) में जमीन ली है आपको भी दिलवायेंगे मैंने कहा मास्टर जी मेरे पास तो इतना धन नहीं है। उन्होंने कहा रुपये की चिन्ता न करो आपको बैंक से दिला देंगे। मैंने सोचा इतवार है चलो घूमाई ही हो जावेगी। मोटर साईकिल पर उनको बिठा उनके साथ हो लिया। स्थान पर जाने के बाद उन्होंने कहा २०० गज ले लो भाव ६ रुपये २ आने गज है। मैंने कहा फिर तो ४०० गज ले लेते हैं इतना रुपया तो मेरे ही पास है ठीक है कि वह इलाका अभी तक उपेक्षित है और यह एक छोटी सी घटना लगती है परन्तु उनकी प्रेरणा से आज एक विकसित कालोनी में अपना घर भी हो गया मेरे जैसे कितने ही लोगों ने उनसे प्रेरणा लेकर मैंने तथा अपने मित्रों ने हाउसिंग सोसायटीज के द्वारा लाभ उठाया यह उनकी को-आपरेटिव भावना का ही फल है। ●

आजीवन समाज सेवी

लालचन्द गुप्ता
भू० पू० कोषाध्यक्ष
अग्रवाल भवन, शक्ति नगर.
दिल्ली-७

मास्टर लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल बड़े पुरुषार्थी जीव थे। उन्होंने करीब ४० वर्ष पहले देहली में अग्रवाल सभा की नींव रखी। और हर साल बड़ी धूम-धाम से महाराजा अग्रसेन जथन्ती मनाते रहे।

१९५७ में उन्होंने अग्रवाल भवन शक्ति नगर की नींव रखी। इसके चंदे के लिए उन्होंने बड़ी दौड़-धूप की जो मुझे भली प्रकार याद है। मुझे साथ लेकर सुबह घर से शक्ति नगर, कमला नगर, और रूप नगर में चन्दे के लिए निकल जाते और दस-ग्यारह बजे तक अपने परिचित लोगों के पास घूमते रहते। वे चन्दा वसूल बहुत ही लगन एवं मेहनत से करते थे। कई मशहूर बाजारों में जानकार फर्मों से चन्दा वसूल किया और इस तरह अग्रवाल भवन १९६१ में सफलता पूर्वक बन कर तैयार हो गया। इससे शक्ति नगर को बड़ा फायदा हुआ। यहाँ बहुत सी बारातें ठहरती हैं और उत्सव होते हैं तथा साल में दो बार नेत्र शिविर निःशुल्क लगते हैं। मास्टर जी को अग्रोहा में जमीन खरीदने के लिए बड़ी मेहनत करनी पड़ी और लगभग ३०० बीघे जमीन अग्रोहा में खण्डहरों के पास खरीद ली गई। उनका विचार यहाँ पर अग्रवाल टेक्नीकल कालेज की स्थापना करने का था। लेकिन हरियाणा सरकार से इसकी स्वीकृति नहीं मिल पाई। आखिर लाला तिलक राज जी की कोशिशों से अग्रोहा में एक मन्दिर और उसके साथ यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशाला का निर्माण हुआ। वैश्य को-आपरेटिव कमर्शियल बैंक लि० नई सड़क, दिल्ली की एक-एक रुपया वसूल करके १९३९ में सिर्फ चौदह रुपये से स्थापना की जिससे लोगों को काफी लाभ हुआ। आज तकरीबन इस बैंक के ३००० सदस्य हैं। आखिर में आकर वो बहुत थक गये थे और चलना-फिरना मुश्किल था। फिर भी दिल में इतना उत्साह था कि धार्मिक जलसों में स्कूटर से सफर करते थे। आपने अपने ही कमरे में एक अग्रवाल लड़के-लड़कियों की विवाह सम्बन्धी जरुरतों का आफिस खोल लिया था जिसमें दो नौकर रख लिए और कार्य करते थे। जो आज दिन भी लक्ष्मी विवाह केन्द्र के नाम से विद्यमान है। ●

समाज की एक हस्ती बिछड़ गई....

मास्टर जी ने अपना सारा जीवन अपनी समाज की सेवा में लगा दिया। उनके द्वारा अग्रवाल समाज के उल्लेखनीय कार्य हुए हैं जो चिरकाल तक उनकी कीर्ति को उज्जवल करते रहेंगे। मेरा एक अनमोल साथी मुझसे बिछड़ गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और आपको बल प्रदान करें जिनसे समाज की एक हस्ती बिछुड़ गई। ●

तिलकराज अग्रवाल
सम्पादक
अग्रवाल जागृति, बम्बई

निःस्वार्थ समाज सेवी

रोशन लाल अग्रवाल
मै० अनन्त राम लक्ष्मण दास

६/१४ रूप नगर, दिल्ली-७

मास्टर लक्ष्मी नारायण जी से हमारे परिवार का सम्बन्ध लगभग ४० वर्षों से था। मेरे पिताजी लाला लक्ष्मण दास अग्रवाल का उनसे बहुत स्नेह था। मास्टर जी जब कभी कोई नई बात सोचते थे उसके लिए हमारे पिताजी के पास आकर विचार करते थे और तब नई योजना शुरू करते तथा उनके सहयोग से आरम्भ करते थे।

मास्टर जी का श्रेय उसी तरह हमें भी मिलता रहा। वे अग्रवाल समाज के लिये निःस्वार्थ सेवा भाव से काम करते रहे। उन्होंने अग्रवाल समाज के लिये समय-समय पर बहुत अच्छे कार्य किये हैं जिनमें अग्रवाल भवन, शक्ति नगर, अग्रवाल आश्रम, हरिद्वार, अग्रोहा का निखरता रूप तथा वैश्य को-आपरेटिव कमर्शियल बैंक आदि प्रमुख रहे हैं। मास्टर जी अग्रवाल समाज की प्रेरणा थे। ●

भेद-भाव रहित समाज सेवी

सत्य नारायण जिन्दल
२४/२६ शक्ति नगर,
दिल्ली-७

मास्टर जी एक बहुत बड़े समाज सेवी थे वे निःस्वार्थ सेवा में लगे रहते थे। कोई भी व्यक्ति उनके पास जाता था तो वह उसे निराश होकर नहीं लौटने देते थे। बल्कि उसकी समस्या पर विचार करके उसका पूरा-२ समाधान करते थे। उनके दिल में छोटे-बड़े का फर्क नहीं था। उन्होंने आखिरी साँस तक समाज की सेवा की व ऐसी संस्था बना कर गये जो कि अग्रवाल समाज वर्षों तक उन्हें नहीं भुला पायेगा।

मैं सारे अग्रवाल समाज से अपील करता हूं कि सभी अग्रवाल भाइयों को मास्टर जी की संस्था लक्ष्मी विवाह केन्द्र और अग्रोहा तीर्थ को पूरा सहयोग तन, मन, धन से देना चाहिये। ●

जागरूक नेता
मास्टर जी

पद्मश्री अमरनाथ गुप्त
आनरेरी लेफ्टीनेंट कर्नल
३५ श्रीराम रोड, दिल्ली

मैं पूज्य स्वर्गीय मास्टर जी को लगभग ३५ वर्षों से भली पूर्वक जानता हूं। मास्टर जी एक महान हस्ति थे। ऐसा व्यक्ति मेरे हिसाब से तो पैदा होना बहुय मुश्किल हैं। उन्होंने वैश्य जाति की उन्नति के लिये क्या नहीं किया आज सारे समाज में अच्छी तरह से मालूम है। मास्टर जी ने निःस्वार्थ हजारों वैश्य जाति में शादियाँ करा दी और वो घर फल रहे और फूल रहे हैं। इतनी बृद्धावस्था होने पर भी किसी भी वैश्य जाति की शादी में या किसी भी सम्बन्धित मंगल-मिलन में जाने से नहीं चूकते थे। चाहे दो आदमियों का सहारा लेकर जाना पड़े। हालांकि वह शक्ति नगर में रहते थे मगर वैश्य जाति से सम्बन्धित शहर के कोने-कोने जहाँ कहीं वैश्य जाति का कोई प्रश्न आता था किसी भी लक्ष्य में कोई भी सेवा चाहिये, चाहे तो शादी कराने, मकान बनवाने, में, व्यापार कराने में, चाहे तो बीमारी में वे स्वयं मौजूद रहते थे और उस समस्या को हल करते थे। वैश्य जाति की उन्नति व एकता के लिये कोई न कोई सत्संग, गोष्ठी और अन्य प्रोग्राम बनाते रहते थे। वैश्य जाति के लक्ष्मी नारायण जी भगवान स्वरुप थे।

आज वैश्य जाति का जो तीर्थ स्थान या मातृभूमि अग्रोहा है। अग्रोहा में जो कुछ है वह सब मास्टर जी की प्रेरणा का फल हैं। उनकी क्षति तो इस युग में पूरी नहीं हो सकती।

मुझे याद है कि मुझे जब भारत के राष्ट्रपति से सन् १९६६ में पद्मश्री की उपाधि से अलंकृत किया गया उस समय भी मास्टर जी नहीं चूके और मेरे तथा पद्मभूषण स्वर्गीय राय बहादुर गूजर मल मोदी के भी सम्मान में उन्होंने दिल्ली नगर में जनता को इकठ्ठा करके बहुत बड़ा समारोह किया। मैं पूज्य मास्टर जी की आत्मा की शान्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं।

एक समाज सेवी

मास्टर जी ने दहेज उल्मूलन की दिशा में प्रत्येक सार्थक रचनात्मक प्रयास किये जिनसे अग्रवाल समाज ही परिचित हो ऐसा ही नहीं अपितु समाज के अन्य वर्ग भी उनकी इस अमूल्य सेवा से प्रभावित हुये बिना नहीं रह सके। मेरा दृढ़ विश्वास हैं कि इस अंक क स्वर्गीय लक्ष्मी नारायण जी के अधूरे कार्य को पूरा करने का संकल्प दोहराया जायेगा।

विजयलक्ष्मी भारद्वाज
सम्पादिका
ऋषि दर्शन (पाक्षिक)

मेरे आदर्श और प्रेरक

श्रीमती विजयरानी गुप्ता
(पुत्रवधू)
२१/३३ शक्ति नगर, दिल्ली

४ फरवरी, १९७१ को मैंने पूजनीय मास्टर जी के घर में उनकी पुत्रवधू के रूप में पदार्पण किया। उस समय वे अग्रवाल समाज के कार्यों में दिन-रात संलग्न रहते थे। अग्रवाल बन्धुओं का आने का उनके पास ताँता लगा रहा था। धनी, निर्धन, बालक, वृद्ध, महिला सभी उनसे मिलने आया करते थे। मुझे यह देखकर आश्चर्य होता था कि वे सारा दिन घिरे रहकर भी सरल और शान्त बने रहते थे। आने वालों के लिए जलपान आदि की व्यवस्था करना वे अपना अहोभाग्य समझते थे। यह सारा कार्य निःस्वार्थ था। उन्होंने अपने निजि लाभ के लिए कभी विचार नहीं किया। शुरु-शुरु में तो मुझे उनका यह सब कार्य व्यर्थ-सा लगा परन्तु उनकी मृत्यु से पूर्व के लगभग ५-६ वर्षों में मैंने उनके सामाजिक कार्यों को आवश्यक रूप से माना और जगह-जगह जयन्तियों और अधिवेशनों में जाना प्रारम्भ कर दिया। अब उनको कार्य करते देख और अपनी ओर से व्यवस्था में कुछ भी सहयोग करते हुए प्रसन्नता होने लगी। उन्होंने दानी महानुभावों से सहयोग लेकर निर्धन छात्र, विधवा एव गरीब कन्याओं के विवाह आदि के लिये सहयोग कर जो कार्य किया है उसका प्रभाव मुझे सदा स्मरण रहेगा। बच्चों को प्यार और पुत्रीवत प्यार, उनका आदेश और निर्देश मेरे लिये सदैव प्रेरक व मार्ग-दर्शक रहेंगे। परमपिता से कामना है कि उनकी आत्मा को सद्गति मिले और हमारे परिवार पर उनका आशीर्वाद बना रहे। ●

निष्ठावान अग्रवाल समाज सेवी थे

मास्टर जी से अपना स्नेह लगभग १९६० से हुआ था जब हमारे पूज्य पिताजी लाला ईश्वरचन्द जी कोतवाल वाले, इनके सम्पर्क में शक्ति नगर की धर्मशाला के निर्माण के लिये तैयार हुए और अपना सहयोग दिया। मन, कर्म, वचन से वो मास्टर जी के साथ हुए। मास्टर जी बड़े निष्ठावान, अग्रवाल समाज सेवी थे। विनम्र व मृदुभाषी थे। अपने काम के लिए हमेशा निष्काम भावना से कार्य करते थे। अग्रवाल समाज में दहेज की कुप्रथा के खिलाफ भी उन्होंने यह कार्यक्रम बनाया कि शादी आपस में मेल-जोल द्वारा तय की जाये उसके लिये एक शाखा भी खोली। जिस जगह लड़के व लड़की वाले अपने बच्चों के बारे में विवरण भेजें और वो सम्बन्ध पक्के व मजबूत रहें।

उन्होंने जो कार्य किये हैं मुझे उम्मीद है कि उनके सहयोगी इस कार्य को आगे चलायेंगे और सफल बनायेंगे।

उनकी आत्मा को प्रभु शान्ति दें और सद्गति दें। ●

अशोक कुमार
कोतवाल वाले नई दिल्ली

एक लग्नशील समाज सेवी व्यक्तित्व

मास्टर जी

श्यामा चरण गुप्ता
(भू०पू० अध्यक्ष)
दिल्ली महानगर परिषद,

मेरा पूज्य मास्टर लक्ष्मी नारायण जी से गत् ४० वर्षो से निकट का सम्पर्क रहा। मैंने अपने जीवन में जो उन्नति की है उसका बहुत कुछ श्रेय स्व० मास्टर जी को जाता हैं। उन्होंने अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा का गठन कर सारे देश में अग्रवाल समाज का संगठन खड़ा किया। और अग्रवाल बन्धुओं में जागृति उत्पन्न की। अग्रवालों के सर्वतोमुखी विकास के लिये अग्रवाल बैंक, अग्रवाल धर्मशाला,, रोजगार सेवा, विवाह सेवा आदि अनेक कार्यक्रमों को प्रारम्भ किया तथा कुरीति निवारण एवं दहेज विरोधी संकल्पों के लिये लोगों को प्रेरित किया। राजनैतिक क्षेत्र में आगे आने वाले वैश्य बन्धुओं का अभिनन्दन कर उनको समाज सेवा और जातीय उत्थान के लिये प्रेरित करना उनकी अपनी विशेषता थी।

स्व० मास्टर जी एक मिलनसार सहनशील और लग्न के व्यक्ति थे। उनका जीवन आगे आने वाली पीढ़ी के लिये प्रेरक होगा—ऐसा मुझे विश्वास है। ●

गांधी जी के समान प्रेरक मास्टर जी

महेन्द्र सिंह जैन
हांसी, जिला हिसार, हरियाणा

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने देश को स्वतन्त्र कराने के लिये जिस प्रकार का मार्ग दर्शन देकर देशवासियों को संगठित और प्रेरित किया उसी प्रकार स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल ने अग्रवाल महासभा का गठन कर अग्रवाल समाज को प्रेरक मार्ग दर्शन दिया। अग्रवालों के साथ-साथ समस्त देशवासियों के प्रति भी उनके मन में प्यार था। यही कारण हैं कि अग्रोहा में उन्होंने इन्जीनियरिंग एवं टेक्नीकल कालेज की स्थापना के लिए प्रयत्न किया ताकि न केवल अग्रवाल बल्कि अन्य समुदाय के छात्र भी शिक्षा ग्रहण कर सकें। मास्टर जी का अग्रोहा से विशेष लगाव था। वे समय-समय पर अग्रवालों को अग्रोहा-दर्शन की प्रेरणा देते थे और जब आते थे तो हाँसी में हमारे यहाँ उन सभी बन्धुओं सहित ठहर कर हमें भी मिलते तथा सेवा करने का अवसर देते थे। मास्टर जी अब इस संसार में नहीं रहे। हमारी कामना है कि उनके सुपुत्र चि० चन्द्र मोहन उनके पद्चिह्नों पर चल कर समाज सेवा के कार्य को आगे बढ़ायें। ●

अग्रवाल बिरादरी के प्रेरणा-स्रोत

कर्मठता के प्रतीक-

मा० लक्ष्मी-नारायण अग्रवाल

डॉ० एन० आर० गोयल
सम्पादक
ग्रामीण जनता (सा०)
रूड़की, (उ० प्र०)

मास्टर जी से मेरा सर्व प्रथम परिचय १९७४ में हुये प्रथम अ० भा० अग्रवाल महा सम्मेलन के अवसर पर धर्म भवन नई दिल्ली में हुआ था। उन्होंने जब मेरे विचार उक्त ऐतिहासिक अधिवेशन में सुने तो वे चिपके रहे मेरे साथ लगातार दो दिनों तक। अपने परिचय के विषय में उसी समय उन्होंने मुझे विस्तार से बतलाया था कि किस प्रकार उन्होंने सर्वप्रथम १९५२ में महाराजा अग्रसेन जयन्ती धूम-धाम से मना कर देश के अग्रवाल भाइयों को यह अहसास कराया था कि आज उपेक्षित और तिरस्कृत अग्रवाल बिरादरी एक क्षत्री महाराजा अग्रसेन की सन्तान है। १९५२ में मास्टर जी अग्रसेन जयन्ती पर दिल्ली से अग्रोहा तक (अग्रवालों की जन्मस्थली) बसों और कारों का जलूस लेकर पहुँचे थे। तभी से उन्होंने उजड़े हुए 'अग्रोहा' के पुनर्वास का निश्चय किया था। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि किस प्रकार उन्होंने अग्रवाल भाइयों की सहायतार्थ संचालित आम विशाल "वैश्य को-आपरेटिव बैंक" की स्थापना १९३९ में १४ सदस्यों और मात्र २८ रुपये की पूंजी से की थी जहाँ आज हजारों लोग अपना लेन-देन करते हैं। इस बैंक के माध्यम से मास्टर जी ने हजारों वैश्य अग्रवालों को भवन निर्माण, शादी-विवाह, तथा व्यापार संचालन के लिये आर्थिक सहयोग किया। इसी बैंक के माध्यम से हजारों लोगों के अच्छे व्यापार संस्थान और आवासीय भवन संस्थापित किये जा सके।

मेरे यहाँ मास्टर जी यदा-कदा आते जाते रहते थे। मैं भी उनसे कुछ इस तरह बन्ध गया था कि कभी भी उनके पास पहुंच जाता था। सर्वाधिक सम्पर्क में मास्टर जी उस समय आये जब १९७६ में तीन हजार वर्ग गज भूमि भूपतवाला (हरिद्वार) में महाराजा अग्रसेन आश्रम के निर्माण का अपना निश्चय उन्होंने मुझे मेरे आवास पर आकर बताया और कहा कि इस कार्य में जिलाधिकारी की अनुमति (रजिस्ट्री हेतु) की आवश्यकता है उसे आपको कराना है। तब तक मैं एक पत्रकार और काँग्रेस का सिपाही होने के साथ अग्रवाल समाज का भी सेवक बन चुका था, इसलिए तुरन्त उनके साथ हो लिया ओर जो सहयोग हो सका, दिया गया जिससे मास्टर जी अत्यधिक प्रभावित हुए क्योंकि मेरी सामाजिक प्रतिष्ठा के विषय में सर्वाधिक जानकारी उन्हें उसी समय जिलाधिकारी सहारनपुर श्री आर० कुमार तथा हरिद्वार के अग्रवाल भाइयों से मिली थी। हरिद्वार में अग्रवाल आश्रम का निर्माण करा लेने में जो कर्मठता मास्टर जी ने दिखाई थी वह मेरे लिये वास्तव में अनोखी चीज थी। कई अड़चने आई लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। मुझे मास्टर जी से ही जानकारी मिली कि अग्रवाल बिरादरी के सैकड़ों बेरोजगार युवकों को रोजगार और गृह विहीन लोगों को आवासीय भवन उन्होंने उपलब्ध कराये थे। सच पूछिये तो बिरादरी की प्रेरणा देने के लिये वे प्रकाशपुंज थे। ऐसे कर्मठत के धनी मास्टर जी से मेरी ओर से उनकी पुण्य तिथि पर हार्दिक श्रद्धाँजलि अर्पित है।

"जौनती के गांधी"

लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल

आदर्श प्रस्तुत करने के लिए बहुत से भाषण सुनने को मिलते हैं। पुस्तकों का सान्निध्य भी अन्तस प्रेरणा-स्रोत होता है लेकिन वे सज्जन कभी-कभी धरा पर अवतंरित होते हैं, जो कि अपने समस्त जीवन को 'दाधीच वरदान' सिद्ध कर जाते हैं। ग्रामीण अंचल में जन्म पर शहरी प्रगति के साथ चले अग्रवंश के दीप अपने व्यवहार से अनेकों दीप जलाते रहे।

मैंने आपको देखा सुना तथा अन्तिम साहचर्य निगम रंगशाला में आयोजित दीपावली मंगल मिलन पर प्राप्त कर सका। बन्धुत्व एवं भ्रातृत्व के रूप में उनकी छवि महानगर देहली के साथियों के हृदय पटल पर ही अंकित नहीं है। संपूर्ण देश में उनके द्वारा किए गए समय का सदुपयोग इस प्रकार से जाना जाता है।

समाजवाद के उच्च आदर्श

आपने जाति-सम्प्रदाय का भेदभाव न रखते हुए महाराजा अग्रसेन जी की जयन्ती मनाने का योगदान सदैव स्वीकार किया तथा विशाल हृदय से दिया। 'लक्ष्मी विवाह केन्द्र', अग्रवाल धर्मशालाएँ उनके संगठन का प्रतीक थी। मैंने एक बार उस दिव्य पुरुष से प्रश्न किया कि आप कुछ शब्दों में मुझे बताऐं कि जीवन की सार्थकता कहाँ निहित है? तो आपने एक ही वाक्य कहकर मेरे भ्रम को समाप्त किया कि "इस संसार को आपने सुगंधित पाया इसको और अधिक मकरन्दमय बनाने का संकल्प कीजिए।"

नारी हित चिन्तक—

जहाँ आपने साहित्यिक गोष्ठियों, सभाओं एवं कवि सम्मेलनों के माध्यम से समाज के व्यवहारिक पक्ष को सबल बनाने का प्रयत्न किया वहाँ मुख्य रुपेण दहेज प्रथा बन्द करो, मृत्यु भोज बन्द करो, सामाजिक कार्यों में प्रकाश फैलाकर देश को आगे बढ़ाओं आदि उद्घोषों को समर्थन प्रदान किया।

अग्र-अग्रोहा-अग्रसेन के भक्त—

आपने अग्रोहा इतिहास लिखने के लिए विद्वानों को प्रेरणा दी। अग्रवंश के उत्तरदायित्वों से उन्हें अवगत कराया तथा अग्रोहा की चंदन सदृश पावन माटी को फिर से मुखरित करने का संकल्प आपने ही लिया था। वे कहा कहते थे कि नये के चक्कर में हमें पुराने को नहीं भूलना है। अपनी सनातनी. संयमी परम्पराओं के वे सदैव पोषक रहे।

अग्रोहा तीर्थ

समय-समय पर आपके द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित मासिक पत्रिका में तलाक शुदा, विधवा विधुर तथा निर्धन लड़के-लड़कियों के सहायतार्थ विज्ञापन प्रकाशित होते रहे हैं। इस प्रकार 'मास्टर जी' ने पत्रिका का स्तर नैतिक एवं सामाजिक रक्खा। भाई विष्णु चन्द्र गुप्त एवं जिन्होंने परिवार के स्तर को ऊँचा उठाया चन्द्र मोहन जी गुप्ता पर आपकी अमिट छाप पड़ी।

डॉ० संत हास्यरसी
४०८७, राम नगर,
(लोनी रोड, दिल्ली-३२

सादगी के शहनशाह—

आप फिजूल खर्चों से दूर, ऐश्वर्य से अलग खान-पान, परिधान सादगी के प्रतीक थे। जो भी प्रतिज्ञा आपने की सभी अग्रबन्धुओं ने उसको एकमत से स्वीकार किया। वे विश्वास के कोष एवं श्रद्धा के कुबेर थे। आपका जीवन व्यस्त था प्रतिपल सृजन की कामना में रत कथनी और करनी के धनी लक्ष्मी नारायण जी नर रूप में कहीं-कहीं नारायण से दिखलाई देते थे।

राष्ट्र-भाषा के पहरुए—

आपने माँ भारती को साक्षी मानकर राष्ट्र भाषा के संवर्द्धन में विशेष योग दिया। जन समुदाय को प्रेरणा दी कि हिन्दी में हस्ताक्षर करें, नामपट्ट आदि हिन्दी में ही लिखकर अपने सुकृत्य एकत्र करें। आज वह देश जाति, धर्म का कर्मठ सिपाही हमारे मध्य शरीर से नहीं हैं लेकिन उनकी नीति एवं उपदेश इसलिए हमारे लिए सम्बल प्रदत्त हैं क्योंकि उनमें लाला लाजपत राय का राष्ट्र प्रेम, डॉ. भगवान दास का हित-चिन्तन जमनालाल 'बजाज' की दूरदर्शिता सहज ही प्राप्त हो जाती है। हम सभी का आवश्यक कर्तव्य हैं कि जो रास्ता मास्टर लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल ने हमको दिखाया हम उसे बुहारते चले, सवारते चलें तभी उनके प्रति सच्ची श्रद्धाँजलि प्रस्तुत कर सकेंगे। ●

जब तक चमक ध्रुवतारे की, बहे गंगा की धारा॥
"मास्टर लक्ष्मी नारायण जी", ऋणि समाज तुम्हारा॥

सजग एवं सक्रीय समाज सेवी

पिछले महीने अहमदाबाद से वापस आने पर पता लगा कि मास्टर जी का स्वर्गवास हो गया। शरीर जीर्ण हो जाने पर भी वे अत्यन्त सजग तथा सक्रिय थे स्वयं एक संस्था के रूप में उन्होंने अकेले ही समाज सेवा का बीड़ा उठा रक्खा था और अपनो अद्‌भुत संगठन शक्ति से वैश्य समाज को एक मंच पर जोड़ रक्खा था। समाज कल्याण की उन्होंने योजनाएँ बनाई व चलाई तथा नई-नई योजनाओं को जन्म दिया। समाज को उन्होंने दिशा दी तथा, स्वयं कार्य किये तथा औरों को सहयोग दिया। देश के वैश्य समाज में उनका नाम अमर रहेगा। ●

रामगोपाल गाडोदिया
८, अलीपुर रोड, दिल्ली-५४

कट्टर अग्रवाल समाज सेवी—स्व० मास्टर जी

(१) एक कट्टर समाज सेवी जो निःस्वार्थ भाव से अग्रवालों का अगुआ रहे।
(२) जिन्होंने समय-समय पर आँखों के कैम्प लगवा नेत्र दान दिया।
(३) एक पुरुषार्थी, स्वावलम्बी जिसने कभी आलोचनाओं की परवाह ना करके अपने अग्रवाल भाइयों को हमेशा एकता के लिए अग्रसर किया और आजीवन डटे रहे।
(४) जिसने हरिद्वार अग्रवाल भवन जैसे विशाल भवन को निर्माण कराने में तन, मन, धन से योगदान किया। भिखावी की तरह जगह-२ जाकर बिना लोभ लोलुपता के समय लगाकर पैसा इकट्ठा किया।
(५) अनेक लड़के-लड़कियों को लक्ष्मी विवाह केन्द्र द्वारा अच्छे मैच सुझाकर विवाह कराये।
(६) अग्रवाल बैंक स्थापित किया, शक्ति नगर में अग्रवाल भवन बनवाया जिससे सदैव अग्रवालों को लाभ रहा व यादगार है।
(७) लालबहादुर शास्त्री व बापू की तरह अपने लिए कुछ न करके समाज को आगे बढ़ाया उनकी यादगारें अमिट है हम सदैव उनकों याद करेंगे और उनके आदर्शों पर आचरण करेंगे। ●

डॉ० बिमलारानी अग्रवाल
बिमला भवन, बुलन्द शहर (उ० प्र०)

स्व० मास्टर जी ने अग्रवाल समाज अथवा सार्वजनिक कार्य में जीवन भर बड़ा योगदान दिया है। उन्होंने देहली, हरिद्वार में अथवा अग्रोहा आदि में अग्रवाल के निमित्त भवन बनाने में बड़ी रुचि ली। ऐसे व्यक्ति को समाज कभी नहीं भूल सकता। मेरा उनके साथ काफी लम्बे समय तक सम्बन्ध रहा। वह अपने शरीर से कमजोर होते हुए भी सार्वजनिक कार्यों में आने जाने में बड़ा सत्साह रखते थे। उन के जीवन से हम सब को प्रेरणा लेनी चाहिए ईश्वर महाराज उनकी आत्मा को सद्गति व शान्ति प्रदान करें। आगे आने वाली पीढ़ी व उनके साथी उनकी स्मृति को बनाये रखें। ●

—जगन्नाथ रईस
टोडरमल रोड, नई दिल्ली-१

True Worker--Master Ji

I got your letter and give below a few words about Master Ji.

I was in touch with Master Lakshmi Narain Agarwal for over a decade. He was selfless welwisher of Agarwal community and was always busy in the welfare of Agarwals, finding jobs, suitable matches for boys and girls, and helping deserving students with books and money. Agarwal Bhawan in Shakti Nagar, Agarwal Ashram in Hardware and uplifting of AGROHA in Haryana are maindy due to his untiring efforts.

His true successor is needed.

RAM CHAND GUPTA
Madhusudan Pal
Chowdhary Lane, Howrah-1

—: श्रद्धा-सुमन :—

मास्टर ! तेरे स्वर्ग गमन से

वैद्य दुर्गा शंकर गर्ग
अजमेर

कुछ भी जान नहीं सकते,
किसने कर डाला व्यर्थ-घात ।
मर गई विश्व-मानवता सहसा,
टूट पड़ा यह वज्रपात ।।

उड़ गया नीड़ आशाओं का,
चली भयंकर झंझावात ।
क्षण भंगुर विधि विधानों से,
तुम मन्द बने हो नहीं बिसात ।।

समाज भटक रहा अन्धकार में,
वह कैसे पावेगा सुबोध ?
जिसकी नौका फँसी भवँर में,
उसका कौन हरे अवरोध ।।

अग्रवाल जाति में,
अब नया हो गया है गतिरोध ।
मास्टर ! तेरे स्वर्ग गमन से,
अवरुद्ध हो गया सब संशोध ।।

खड़ी नाश के तट पर जाति
असहाय, दुःखी, है महाशोक ।
दहेज उसे निगल जावेगा,
कर्त्तव्यमूढ़ है सब ही लोक ।।

हम तुम्हें मरने नहीं देंगे

अनिल गुप्ता
४७ गुरुनानक पुरी
बी० सी० बाजार, मेरठ छावनी

तुमने हमको जीना सिखलाया
तुमने हमको उठना सिखलाया
हमें शपथ तुम्हारे बलिदानों की
हम तुम्हें मरने नहीं देंगे ।।

तुम्हारे आदर्श हमारा सम्बल हैं
तुम्हारे पद्चिह्न हमारी मंजिल हैं
हमें सौगन्ध तुम्हारे बलिदानों की
हम तुम्हें मरने नहीं देंगे ।।

तुम्हारे सपने हम साकार करेंगे
तुमको जीवन भर प्यार करेंगे
हमें कसम तुम्हारे अहसानों की
हम तुम्हें मरने नहीं देंगे ।।

स्वर्गीय मास्टर जी के जीवन की कुछ झलकियां

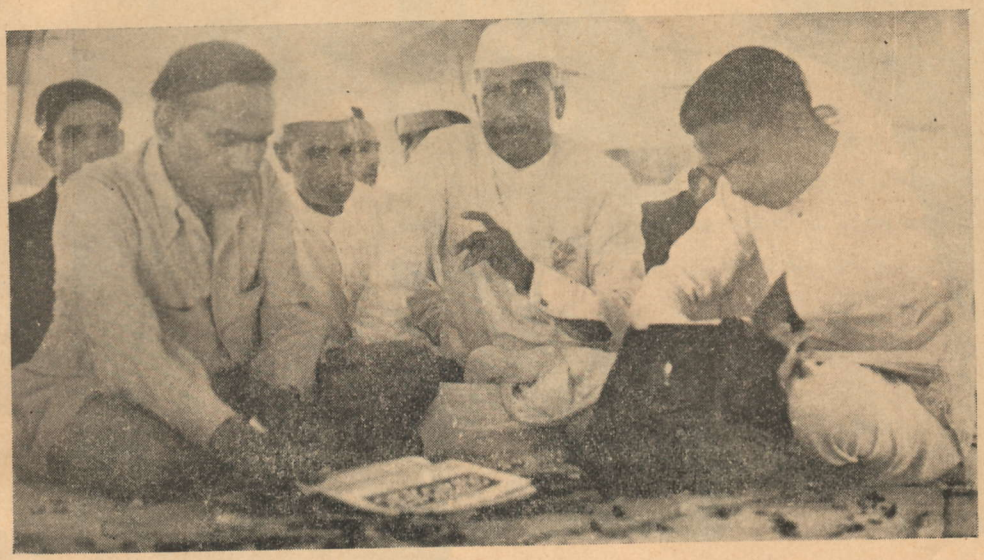

अग्रोहा अधिवेशन के अवसर पर २६ मार्च १९५० को बायें से सर्वश्री चम्पत राय जी एडवोकेट, स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल व विजय कुमार गुप्ता

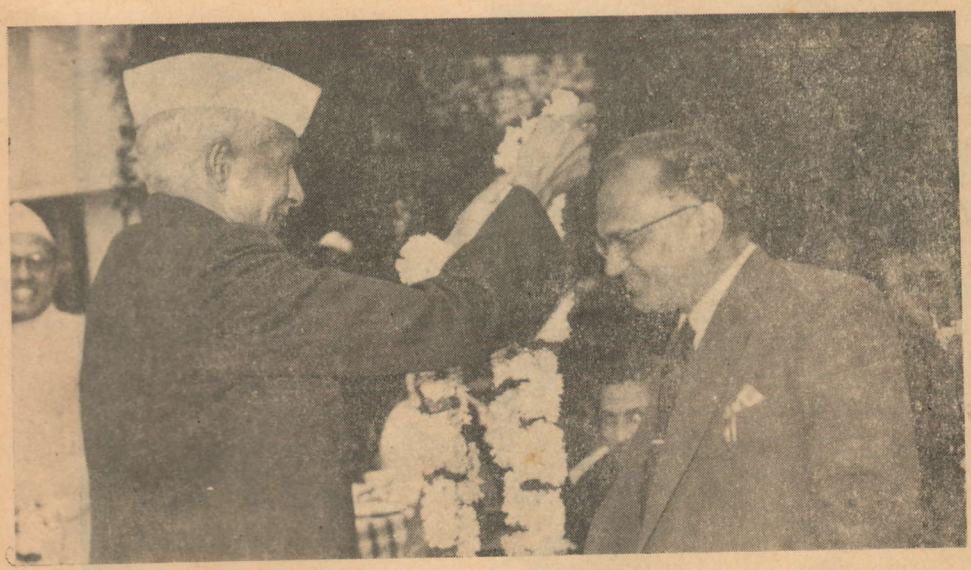

अग्रसेन जयन्ती के अध्यक्ष, अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के प्रधान श्री जे० आर० जिन्दल का स्वागत करते हुए

हरियाणा की मन्त्री श्रीमती ओम प्रभा जैन का अग्रसेन जयन्ती के अवसर पर स्वागत करते हुए स्वर्गीय मास्टर जी

तत्कालीन दिल्ली के महापौर लाला हंसराज गुप्ता का अभिवादन करते हुए स्वर्गीय मास्टर जी

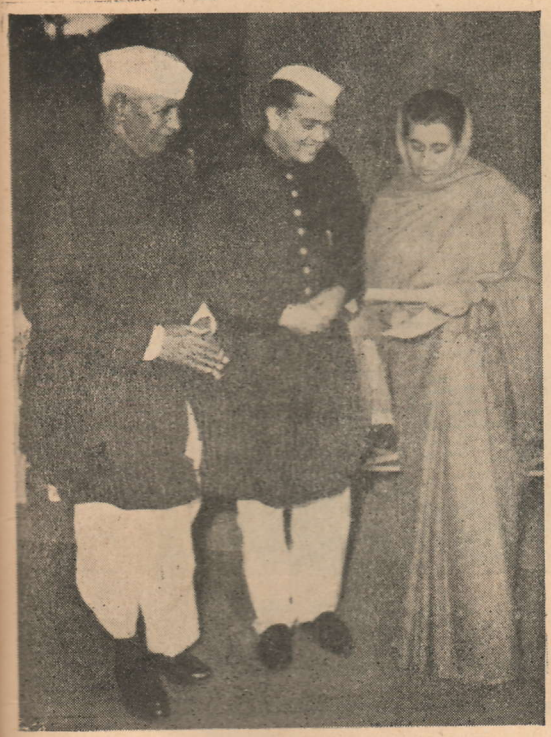

वैश्य को-ओपरेटिव कामर्शियल बैंक द्वारा
बाढ़ पीड़ित सहायतार्थ प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को
चैक भेंट करते हुए तत्कालीन मंत्री स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी
नारायण अग्रवाल एवं प्रधान श्री दीवान चन्द बंसल

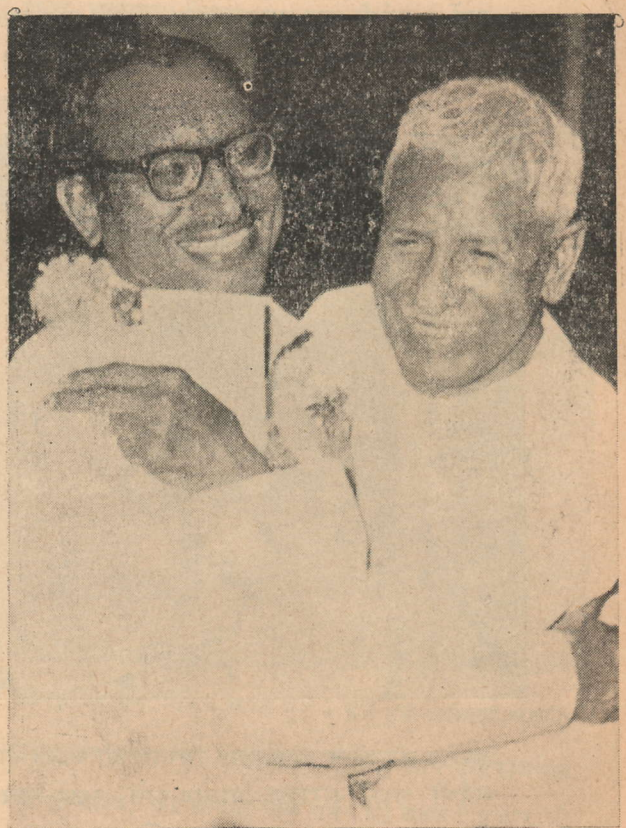

श्री श्याम चरण जी गुप्त के
दिल्ली महानगर परिषद् में अध्यक्ष चुने जाने पर
स्वागत करते हुए स्वर्गीय मास्टर जी

अग्रसेन जयन्ती के अवसर पर अग्रवाल भवन शक्ति नगर में, वक्ता श्री श्याम चरण गुप्त एवं बायें से सर्वश्री आर० एस० गुप्ता, चन्दगी राम गुप्ता, लाला इन्द्रराज सिंह अग्रवाल, कुलानन्द भारतीय, मिट्ठन लाल जी, मास्टर जी, जे० आर० जिन्दल एवं वशेसर नाथ गोटे वाले

अग्रसेन जयन्ती के अवसर पर, वक्ता श्री लक्ष्मी नारायण अग्रवाल (एडवोकेट) तथा बायें से सर्वश्री लक्ष्मी नारायण भालोट वाले, प्यारे लाल गोयल, ओम प्रकाश गोयल, जे० आर० जिन्दल, रामस्वरूप गुप्ता एवं स्वर्गीय मास्टर जी

अग्रसेन जयन्ती के अवसर पर बायें से सर्वश्री हरीश अग्रवाल, जगन्नाथ गोयल, प्यारेलाल गोयल, बंशीलाल चौहान, छुट्टनलाल गुप्ता रतनलाल सिंघल, एवं स्व० मास्टर जी

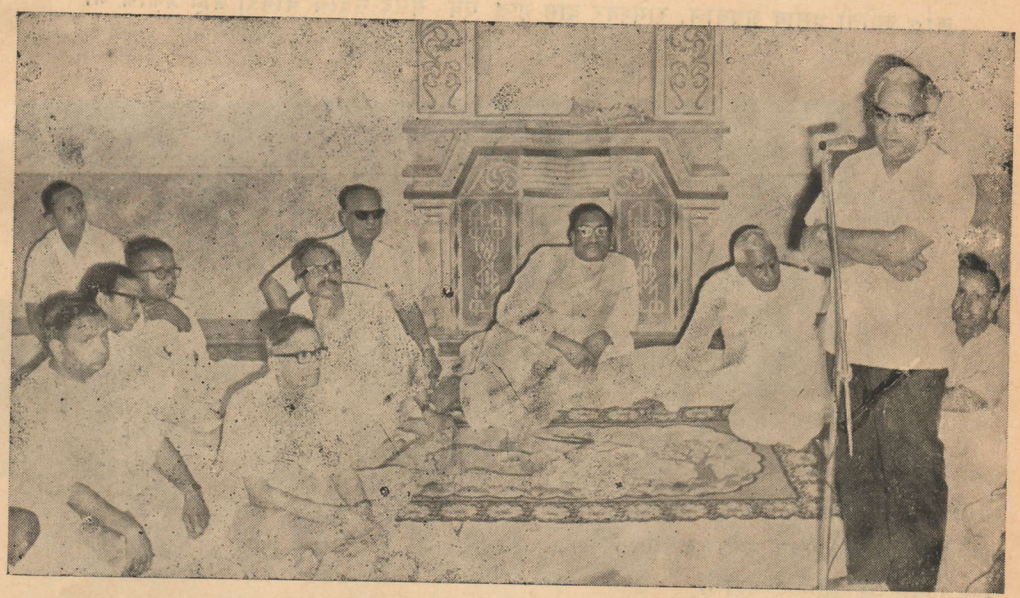

अग्रसेन जयन्ती के अवसर पर श्री जे० आर० जिन्दल भाषण करते हुये। बैठे हुये मास्टर लक्ष्मी-नारायण जी, श्री श्याम चरण गुप्ता, श्री मिठ्ठनलाल गुप्ता, श्री राम स्वरुप गुप्ता, ला० इन्द्रराजसिंह अग्रवाल, ला० प्यारेलाल गोयल, श्री कुलानन्द भारतीय, श्री चन्दगी राम एवं श्री सुदर्शन कुमार जी

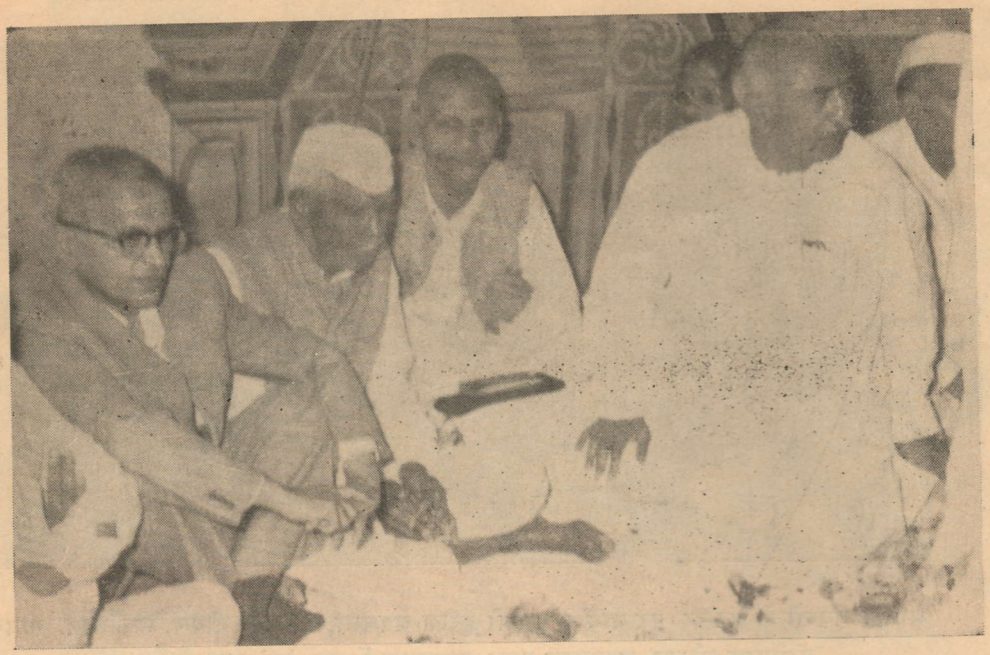

होली मंगल मिलन के अवसर पर अग्रवाल भवन में बायें से लाला इन्दराज सिंह अग्रवाल, मास्टर जी, ला० ज्योती प्रसाद अग्रवाल, रामेश्वर दास गुप्त एवं संसद सदस्य चौधरी ब्रह्म प्रकाश जी

स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल अपने पौत्र चि० पवन गुप्ता के प्रथम जन्म दिवस पर वात्सल्य मुद्रा में

स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण जी अपने सुपुत्र चि० चन्द्र मोहन गुप्ता की सगाई के अवसर पर
आगन्तुकों का हाथ जोड़ कर स्वागत करते हुए

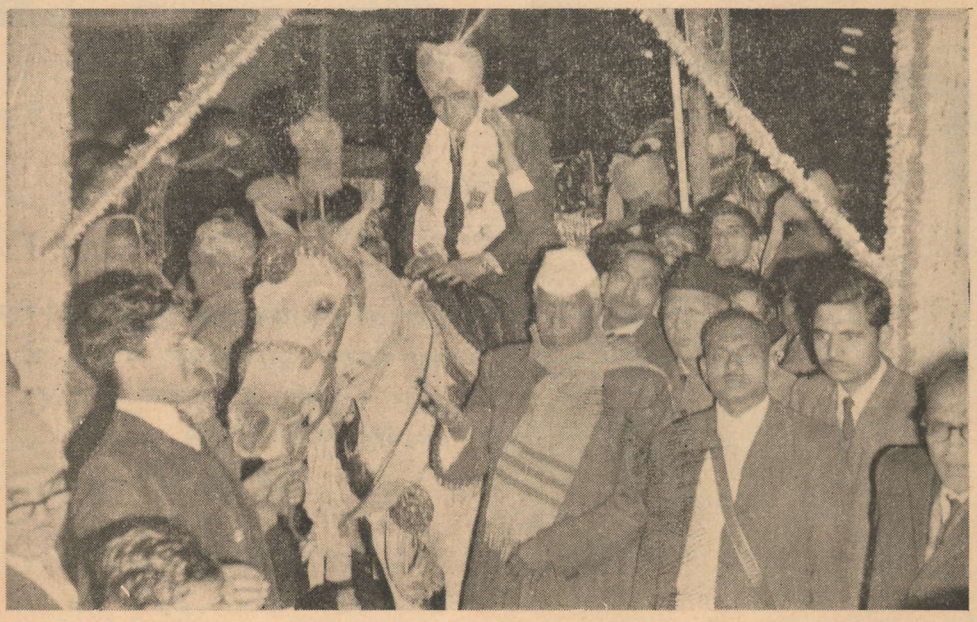

स्वर्गीय मास्टर जी अपने सुपुत्र चि० चन्द्र मोहन गुप्ता के विवाहोत्सव पर
घोड़ी के साथ साथ में श्री गंगा विशन खड़े हैं।

स्वर्गीय मास्टर जी गोलोकवास को प्रस्थान करते हुए

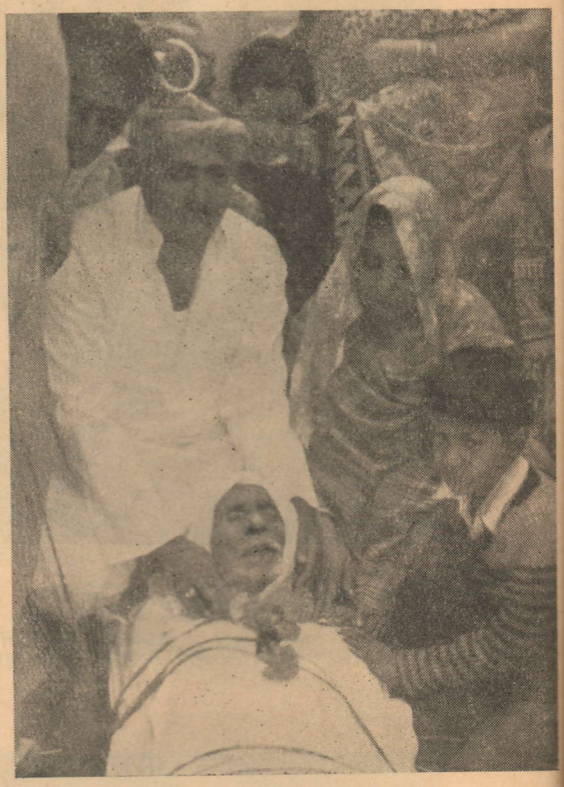

स्वर्गीय मास्टर जी के अन्तिम प्रस्थान के अवसर पर उनके सुपुत्र चन्द्रमोहन गुप्ता पुत्रवधु श्रीमती विजयरानी एवं पौत्र चि० पवन गुप्ता

शनिवार, ३ दिसम्बर १९८३ को निगम-बोध घाट पर स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल जी के पार्थिव शरीर को अग्नि को समर्पित करते हुए उनके पुत्र चन्द्रमोहन गुप्ता

स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल की स्मृति में कृतज्ञ समाज की घोषणाएँ

शनिवार दिनांक ३ दिसम्बर ८३ को अपरान्ह २ बजे निगम-बोध घाट, दिल्ली पर अंत्येष्टी के अवसर पर स्वर्गीय मास्टर जी की स्मृति में कृतज्ञ सामाजिक संस्थाओं की ओर से निम्नलिखित घोषणाएँ की गईं—

१. अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के महामन्त्री श्री रामेश्वर दास गुप्त एवं उपाध्यक्ष श्री रामकवाँर गुप्ता बहादुरगढ़ वालों ने अग्रोहा में स्वर्गीय मास्टर जी की एक भव्य प्रतिमा किसी उपयुक्त स्थान पत्र प्रस्थापित करने की घोषणा की।

२. अग्रवाल भवन ट्रस्ट शक्ति नगर, दिल्ली के प्रधान श्री प्यारेलाल गोयल एवं मन्त्री जगन्नाथ गोयल ने अग्रवाल भवन के मुख्य हाल पर 'मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल स्मृति हाल का पत्थर लगाने की घोषणा की। इसके साथ ही अग्रवाल भवन में स्वर्गीय मास्टर जी की प्रतिमा लगाने की भी घोषणा की गई।

३. अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टैक्निकल कालेज सोसाइटी अग्रोहा के अध्यक्ष ला० देवकी नन्दन ने अग्रोहा में स्मृति स्तम्भ बनाने की घोषणा की।

४. शक्ति नगर से नगर-निगम पार्षद श्री नरसिंह दास गुप्ता ने स्वर्गीय मास्टर जी की स्मृति में एक मार्ग का नामकरण कराने का आश्वासन दिया।

५. अग्रोहा तीर्थ मासिक की ओर से अतिथि सम्पादक श्री विष्णुचन्द्र गुप्त ने स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल स्मृति विशेषांक प्रकाशित करने की घोषणा की।

६. वैश्य को-आपरेटिव कमर्शियल बैंक लि० के प्रधान श्री दीवान चन्द बंसल ने स्व० मास्टर जी के नाम पर एक 'रजत चल वैजयन्ती' चालू करने पर विचार करने का आश्वासन दिया।

७. महाराजा अग्रसेन (अग्रवाल) आश्रम ट्रस्ट हरिद्वार में स्वर्गीय मास्टर जी का एक भव्य चित्र लगाने की घोषणा की गई।

८. शक्तिनगर की सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं की ओर से शुक्रवार दिनांक ९ दिसम्बर ८३ को सायं ७ बजे अग्रवाल भवन, शक्तिनगर, में एक सार्वजनिक शोक-सभा के आयोजन की घोषणा की गई।

स्वर्गीय मास्टर जी के प्रति प्राप्त श्रद्धाँजलियाँ

१. श्री विष्णुचन्द्र गुप्त—महामन्त्री, श्री अग्रसेन समिति, दिल्ली
२. ,, चन्द्रदेव चौधरी—महामन्त्री, पेपर मर्चेन्टस एसोसिएशन (रजि), दिल्ली
३. ,, के. के. साहनी—काँपी सम्पादक, नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली
४. ,, एस. मिलिन्द—अशोक विहार, दिल्ली
५ , देवकी नन्दन गुप्ता—महामन्त्री, श्री अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नीकल कालेज सोसाईटी, अग्रोहा
६. ,, पुरुषोत्तम गर्ग—अध्यक्ष, अखिल भारतीय युवा अग्रवाल सम्मेलन, दिल्ली
७ ,, तिलकराज अग्रवाल—अग्रवाल मेटल कम्पनी, बम्बई
८. ,, चेतन्य स्वरुप अग्रवाल—सम्पादक 'जीवनदान' (मासिक), जयपुर
९. ,, मनोहर लाल अग्रवाल—स्पेशल एक्जीकूटिव मजिस्ट्रेट, बम्बई
१०. ,, घनश्याम दास गुप्ता—भोपाल (म०प्र०)
११. ,, मुन्शीराम गुप्ता—प्रधान, वैश्य सभा इन्द्रपुरी-नारायणा क्षेत्र, नई दिल्ली
१२. ,, राजकुमार मित्तल—महामन्त्री, शास्त्री नगर, अग्रवाल सभा, दिल्ली
१३. ,, शिव प्रकाश गुप्ता—मन्त्री, दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन
१४. ,, बालेश्वर प्रसाद अग्रवाल—प्रचार मन्त्री, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, नई दिल्ली
१५. ,, चिरंजीलाल अग्रवाल—संचालक, अग्र साहित्य केन्द्र, नई दिल्ली
१६. ,, राधाकिशन महाजन—सम्पादक 'अग्रोहा जन्म भूमि' हिसार
१७. ,, सत्यनारायण बंसल—भू०पू० अध्यक्ष, स्थाई समिति दि० न० नि०, दिल्ली
१८. ,, भीकूराम जैन—लोकसभा सदस्य, दिल्ली
१९. ,, दुर्गाशंकर गर्ग—नव जीवन फार्मेसी, अजमेर
२०. ,, वेद प्रकाश—सचिव, सनातन धर्म महासभा, दिल्ली
२१. ,, प्रदीप मित्तल—महामन्त्री, अ० भा० युवा अग्रवाल सम्मेलन, नई दिल्ली
२२. ,, पुरुषोत्तम दास चोधरी—भोपाल
२३. ,, कृष्णमुरारी मोदी व श्रीकान्त मुरारका, नवलगढ़, (राज०)
२४. ,, वैश्य समाज सुधार समिति, नवलगढ़, के सभी सदस्य
२५. ,, रामकिशन अग्रवाल—मद्रास
२६. ,, जगन्नाथ रईस—नई दिल्ली
२७. ,, राजेन्द्र कुमार गुप्ता—इन्दोर
२८. ,, बृगभान गुप्ता—जयपुर
२९. ,, लाला राजेन्द्र लाल जी—सरशादीलाल एन्टरप्राइजेज लि०, शामली
३०. ,, अमरचन्द गुप्ता—मुरैना (म० प्र०)

३१. ,, शीशुपाल गर्ग—महामन्त्री, अ० भा० महाराजा अग्रसेस वंश इतिहास शोध संस्थान, जीन्द

३२. ,, मनोहर लाल गुप्ता—मन्त्री, वैश्य को-आपरेटिव कमर्शियल बैंक लि०, दिल्ली

३३. ,, ज्याला प्रसाद 'अनिल'—सम्पादक 'अग्रवाल सन्देश', अलीगढ़

३४. ,, जी० आर० मालेगांवकर—अमरावती

३५. ,, ओमप्रकाश रुइया—अध्यक्ष, 'छाया' साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संगम, इलाहाबाद

३६. ,, बृजभूषण गुप्ता—मन्त्री, अग्रवाल सभा विवेकानन्द पुरी, दिल्ली

३७. ,, रामकृष्ण 'हर्ष'—महामन्त्री, अवधवाल वैश्य महासभा (रजि०), मेरठ

३८. ,, राधाकृष्ण गुप्ता—केवल राम राधाकृष्ण धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

३९. ,, भगवती प्रसाद खेतान—बम्बई

४०. ,, ज्ञान सी० वैश्य—प्रधान, अवधवाल वैश्य महासभा, कलकत्ता

४१. ,, जितेन्द्र प्रसाद जैन—मन्त्री, वैश्य एजूकेशन सोसाइटी रजि०, रोहतक

४२. ,, श्री मुरारी लाल बंसल—मन्त्री, अग्रवाल सम्मेलन, फिरोजाबाद

४३. ,, रघुबर दयाल अग्रवाल—अगरयाला, (मथुरा)

४४. ,, मोरध्वज सिंगल—मन्त्री, अग्रवाल युवा संगठन, देहरादून

४५. ,, रामेश्वर दास गुप्ता—महामन्त्री, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, नई दिल्ली

With best compliments from :

Telegram : "INDRAGY"

Telephones { Office : 320028 / Depot : 261128 / Resl. : 644495

Indra Agencies (Regd.)

Gobind Mansion & Indra Palace, New Delhi.

Block-H, Connaught Circus, New Delhi-110001

Agents, Distributors & Representatives :

1. **M/s. U S. Vitamin & Pharmaceutical Corpn. (India) Ltd., Bombay.**
2. **M/s. Standard Pharmaceuticals Ltd., Calcutta-14**
3. **M/s. Navin Flourine Industries, Chemical Divn.**
   Mafatlal Fine Spinning & Mfg. Co. Ltd. Bombay.

शोक समाचार प्रकाशन के लिये आभार

निम्नलिखित पत्र-पत्रिकाओं ने मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल जी के देहावसान के अवसर अपनो पत्रों में श्रद्धांजलि एवं समाचार प्रकाशित किये ।

१. मंगल मिलन	—	नई दिल्ली
२. वैश्य परिवार	—	मेरठ
३. कर्मठ गुरु	—	लखीमपुर, खीरी
४. अग्रमंच	—	देहरादून
५. जय महामना	—	दिल्ली
६. यशलोक	—	दिल्ली
७. पूर्वी पंजाब	—	भिवानी
८ ग्रामीण जनता	—	रुड़की
९. नया खून	—	दिल्ली
१०. अग्रवाल राजनीति	—	सोनीपत
११ महाजन समाचार	—	नई दिल्ली
१२. अग्रवाल जागृति	—	बम्बई
१३. जगत टाइम्स	—	मथुरा
१४. युवा अग्रवाल	—	नई दिल्ली
१५. नवभारत टाइम्स	—	नई दिल्ली
१६. पंजाब केसरी	—	दिल्ली
१७. हिन्दुस्तान टाइम्स	—	नई दिल्ली
१८ तेज (उर्दू)	—	दिल्ली
१९. हिन्दुस्तान टाइम्स (इंग्लिश)	—	नई दिल्ली
२०. जनता के विचार	—	चरखीदादरी
२१. सूत्रकार	—	कलकत्ता

शुभकामनाओं सहित,

बृजलाल पुरुषोत्तम दास

धागा विक्रेता

रहेजा चेम्बर, १२वीं मंजिल,

२१३-नारिमन प्वाइन्ट, बम्बई-४०००२१

टेलेक्स—०११-२७३० YSBY

दूरभाष : २२३८७४, २२३९१४, २२२५१२

मुख्य कार्यालय :

७, शम्भुनाथ मलिक लेन, कलकत्ता

दिल्ली कार्या

महाबीर बाजार, क्लाथ म

दिल्ली-११०

उद्योगपति सेठ कमल नयन बजाज (सुपुत्र स्व० श्री जमना लाल बजाज) की अध्यक्षता में सन् १९५० में अग्रोहा अधिवेशन के समय उपस्थित जनसमूह। बायें से स्व० चपतराय एडवोकेट, श्री कमल नयन बजाज, श्री तनसुख राय जैन, स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण जी एवं लाला वशेसर नाथ गोटेवाले।

सन् १९५२ में अ० भा० अग्रवाल महासभा द्वारा मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमन्त्री माननीय स्व० श्री तख्तमल जैन का स्वागत किया गया तथा चित्र में बायें से सर्वश्री दीवान चन्द बंसल, देवकी नन्दन गुप्ता, श्री बृवभान जी (भू०पू० मन्त्री, पंजाब) श्री तख्तमल जैन, श्री बाबूलाल सलमेवाले, स्व० मास्टर जी और साथ में अग्रोहा तीर्थ के परामर्शक श्री घनश्याम दास गुप्ता जो उस समय म० प्र० मुख्यमन्त्री के सचिव के रूप में कार्यरत थे।

(श्री जी०डी० गुप्ता, भोपाल के सौजन्य से प्राप्त)

अग्रसेन जयन्ती समारोह के अवसर पर ग्रुप फोटो में बायें से स्व० मास्टर जी, स्व० रघबर दयाल गोयल, अमरोहा शुगर मिल के मालिक सेठ पूरन चन्द अग्रवाल, श्री लक्ष्मी नारायण एडवोकेट, श्री लालचन्द गुप्ता, श्री जगन्नाथ रईस एवं श्री मिट्ठन लाल गुप्ता ।

एक समारोह में संतों व महात्माओं के साथ स्व० मास्टर जी, श्री मिलिन्द जी उनका स्वागत करते हुए ।

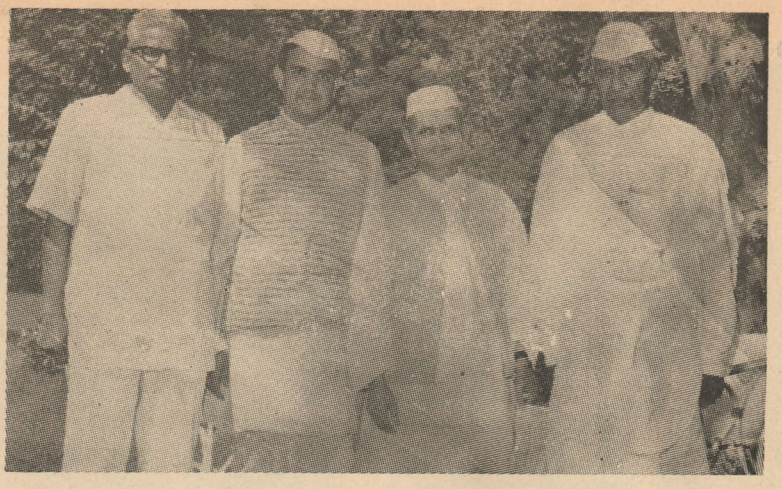

चीन भारत की लड़ाई के समय राहत कोष फंड में चैक देते हुए तत्कालीन
प्रधान मन्त्री स्व० श्री लाल बहादुर शास्त्री के साथ बायें
से सर्वश्री चन्द्र भान गोयल, श्री दीवान चन्द बंसल,
प्रधानमन्त्री जी एवं स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।

स्व० मास्टर जी अपने बचपन के मित्र स्व० लाला जगन्नाथ
गोयल कमला नगर (मुरथल निवासी) दिल्ली के साथ
मुलाकात करते हुए। जो इनकी पुत्रवधु के बाबा जी थे।

एक समारोह में स्व० मास्टर जी अपने समधी
श्री रामदेव गुप्ता के साथ (जो आजकल F.C.I. दिल्ली में
ज्वाइन्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं।)

स्व० मास्टर लक्ष्मी नारायण जी को प्राप्त सम्मान पदक

स्वर्गीय मास्टर जी को वैश्य को-आपरेटिव कर्मशियल बैंक दिल्ली की रजत जयन्ती के अवसर पर सन् १९६४ में निरन्तर मन्त्री रहने पर सम्मानार्थ पदक प्रदान किया गया

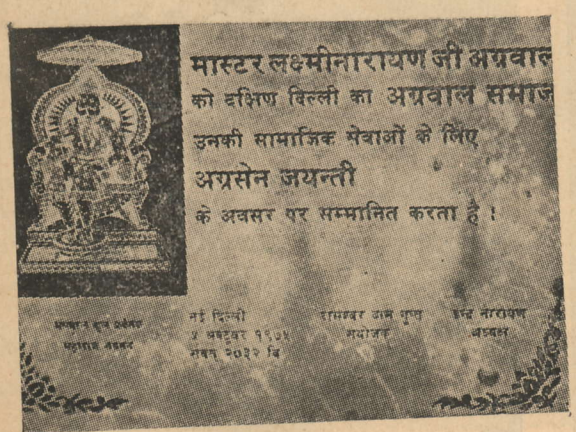

दक्षिणी दिल्ली अग्रवाल समाज द्वारा सन् १९७५ में अग्रसेन जयन्ती के अवसर पर सम्मान्नार्थ प्रदत्त ताम्रपत्र

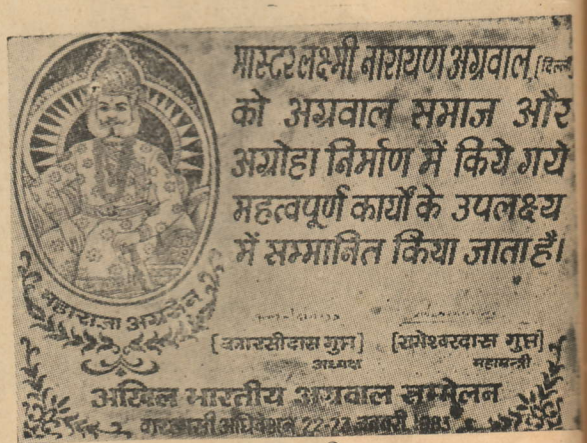

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के वाराणसी अधिदेशन में सन् १९८३ को प्रदत्त सम्मानार्थ ता.म्रपत्र

वैश्य अग्रवाल सभा, दिल्ली द्वारा आयोजित सन् १९७५ के एक समारोह में स्व० मास्टर जी को उनकी विशिष्ठ समाज सेवाओं द्वारा सम्मानार्थ पदक भेंट किया गया

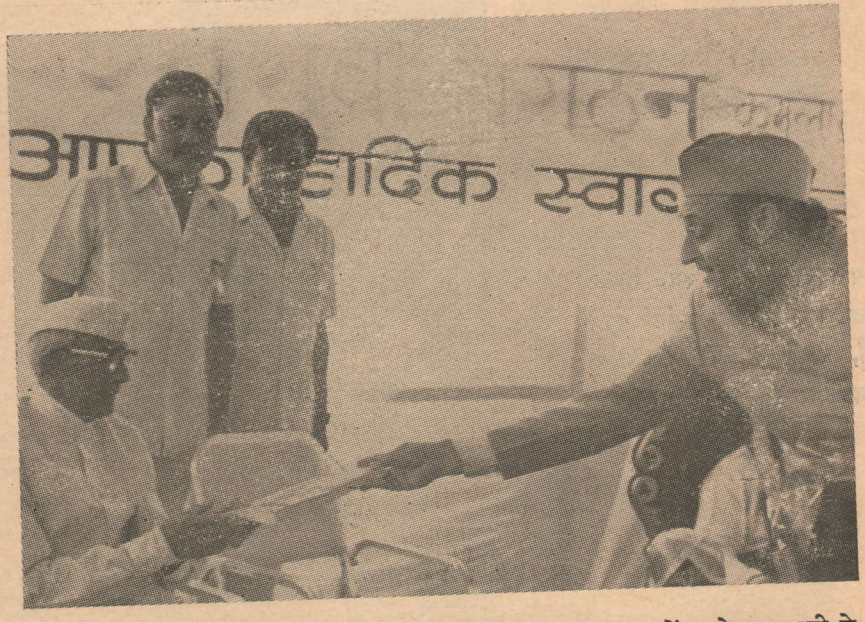

वैश्य युवा समिति कमला नगर दिल्ली द्वारा आयोजित सन् १९८२ में अग्रोहा जयन्ती के अवसर पर संसद सदस्य डॉ० कर्ण सिंह समारोह के अध्यक्ष स्व० मास्टर जी को सम्मानार्थ स्मारिका भेंट कर रहे हैं

एक समारोह में स्व० मास्टर जी के साथ
शक्ति नगर के बहुत ही निकट के
श्री छुट्टन लाल गुप्ता

होली के अवसर पर प्रसन्नमुद्रा में स्व० मास्टर जी तथा साथ में शक्ति नगर क्षेत्र के कर्मठ कार्यकर्त्ता पं० श्रीराम शर्मा, हाँसी के श्री महेन्द्रसिंह जैन तथा पीछे श्री पन्नालाल जी होजरी वाले हैं

अग्रोहा अधिवेशन २९-३०-३१ अगस्त १९८१

अग्रोहा विकास संस्थान द्वारा आयोजित

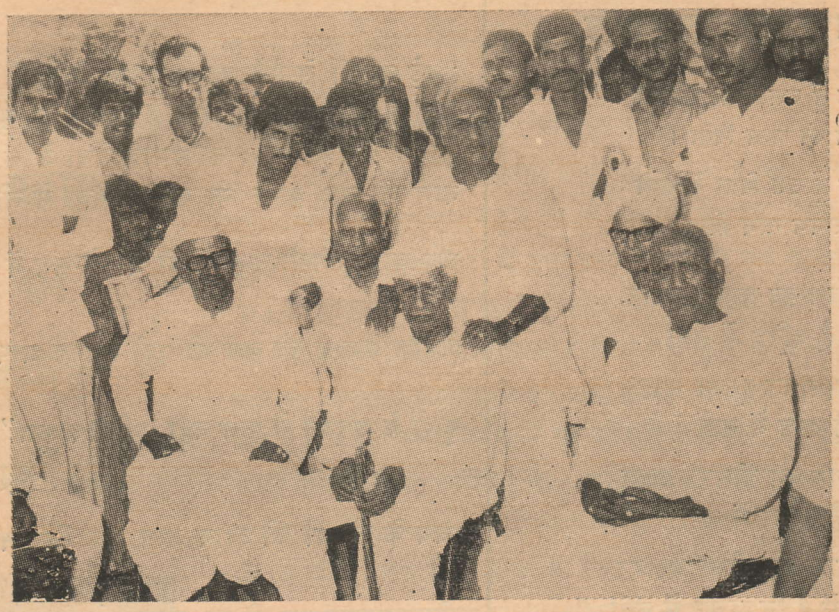

अधिवेशन के अवसर पर एकत्रित जनसमूह के बीच में बैठे हुए सर्वश्री लालमन आर्य (हिसार), बृजमोहन गुप्ता, मुन्नालाल गुप्ता (दिल्ली), स्व० मास्टर लक्ष्मीनारायण जी, सेठ तिलकराज अग्रवाल (बम्बई), सोहन लाल जी बगेले वाले एवं चन्दुलाल जी

अग्रोहा विकास संस्थान द्वारा आयोजित अधिवेशन के अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए स्व० मास्टर जी साथ में मंच पर बायें से सर्वश्री मुन्नालाल जी, श्री रामधारी मल जी, सेठ तिलक राज अग्रवाल, श्री ओम प्रकाश जिन्दल (हिसार), श्री चानन मल बंसल (हिसार), अग्रोहा के महन्त जी एवं श्री गणपतराय सिंघानिया।

नाम रूप

लक्ष्मी नारायण अग्रवाल

नत् मस्तक हूँ उस माता के आगे
जिसने मास्टर जी को जन्म दिया ।

नत् मस्तक हूँ उस पिता के आगे
जिसने लक्ष्मी नारायण नाम दिया ।

आप के नाम का पहला अक्षर
ल ● लक्ष्मी में है दरिद्र में नहीं

आप के नाम का दूसरा अक्षर
क्ष ● क्षमा में है दण्ड में नहीं

आप के नाम का तीसरा अक्षर
मी ● मीरा में है राणा में नहीं

आप के नाम का चौथा अक्षर
ना ● नारायण में है निशाचर में नहीं

आप के नाम का पांचवा अक्षर
रा ● राम में है रावण में नहीं

आप के नाम का छठा अक्षर
य ● यश में है अपयश में नहीं

आप के नाम का सातवां अक्षर
ण ● ऋण देने में है लेने में नहीं

आप के नाम का आठवां अक्षर
अ ● अमृत में है जहर में नहीं

आप के नाम का नवां अक्षर
ग्र ● ग्रन्थों में है उपन्यासों में नहीं

आप के नाम का दसवां अक्षर
वा ● वायु में है तूफान में नहीं

आप के नाम का ग्यारहवां अक्षर
ल ● ललित में है कुरूप में नहीं

—**ललित मुरारका**
खजाने वालों का रास्ता
जयपुर

मा० लक्ष्मी नारायण अमर रहे

"बड़े बुजर्गों से मैंने यह नाम सुन लिया
"श्री लक्ष्मी नारायण" ऐसे है फिर काम सुन लिया
जीवन आपका सादा था समाज सेवा में लीन रहे
नाम की चाह कभी ना की परसेवा में लीन रहे

जब चाह आपकी तन की थी आपने संग में धन भी दिया
जरुरत समाज को जब भी पड़ी सर्वस्व आपने तभी दिया
फूलों के उपवन में फूल नहीं, "विशेष फूल" कहलाते थे

स्वयं के स्वार्थों को त्याग आप, पर चिन्तन में लग जाते थे
ध्येय आपका एक ही था. समाज के लिये कुछ करना है
जीवन ही मेरा व्यर्थ यदि, है नहीं किया जो करना है
इस बात को दृष्टि गोचर रख. हर वक्त यही कहते थे

"है समाज ही मेरा घर" हर पल प्रसन्न रहते थे
ऐसे दीवाने को समाज कभी भूल नहीं सकता है
ले चिराग यदि खोजे तो भी ढूंढ नहीं सकता है
उनके पद-कमलों में मेरा भी नत मस्तक हर बार रहें

याद रहे-याद रहे "श्री लक्ष्मी नारायण" याद रहें
उनके अनुगामी बनने से रहे तो अपनी प्रखर रहें
अमर रहे-अमर रहे श्री लक्ष्मी नारायण अमर रहे।"

कृष्णमुरारी मोदी
उप सचिव
श्री वैश्य समाज सुधार समिति, नवलगढ़, (राज.)

अग्रवालों का मसीहा मास्टरजी

डा० चैतन्य स्वरूप अग्रवाल
325, रामगंज बाजार
जयपुर-3

यदि यह मालूम होता है कि मुझे मास्टरजी (श्री लक्ष्मीनारायणजी अग्रवाल जो मास्टर जी के नामसे सुप्रसिद्ध थे) की स्मृति में लिखना पड़ेगा तो मै खास तिथि, दिन और यहाँ तक कि समय भी नोट कर लेता मुझे तो कभी अहसास ही नहीं हुआ कि ऐसा महापुरुष हमें यहाँ अपने बारे में कुछ लिखने के लिए अकेला छोड़ जाएगा।

मुझे याद है (तिथि सन याद नहीं) मास्टर जी ने मेरा हट पूरा किया एक बार मुझे धुन सवार हुई कि मैं देहली में एक सेल्स गर्ल रखूंगा और अपना काजल (उन दिनों में उषा काजल नाम से एक काजल निकाला करता था) बिकाऊंगा। मैं जुरहरा (भरतपुर) का रहने वाला काजल भी निकले वह भी जुरहरा जैसे गांव से और सेल्स गर्ल जुरहरा से सम्पर्क रखे यह संभव नहीं था, इसके लिए देहली का पता होना चाहिए और देहली की ही देख रेख। मैं बड़ी चिन्ता फिक्र में था और ऐसा स्थान जो देहली के मैन मार्केट में हो लेने के लिए चिन्तित था। उन्हीं दिनों मेरे स्वर्गीय पूज्य पिता श्री वैद्य आनन्दीलाल जी का मास्टर जी से परिचय हुआ और पिताजी ने मेरा आग्रह और उसके निराकरण के लिए मास्टर जी को कहा।

मास्टर जो मुस्कराए और पिताजी से कहा—वैद्य जो आप अपने लड़के को मेरे पास भेज देना मैं सब इन्तजाम कर दूंगा पिताजी ने मुझे मास्टर जी से मिलने को कहा और इस तरह पहली बार मैं उस महापुरुष से दिल्ली में 4421, नई सड़क वाले कमरे में मिला।

मास्टर जी ने मुझसे 2-3 रोज तक बातें की मुझे हर तरह से टटोला जब उन्होंने देखा कि लड़के में उत्साह और कार्य की लग्न है तो उन्होंने का कि तुम 4421, नई सड़क का पता दो और सेल्स गर्ल देहली में रखकर यहाँ से उनकी देखरेख करो। बगैर किसी लोभ लालच के मुझे कमरे की चाबी दे दी और इस तरह मुझे उत्साहित किया। इसी तरह के और उनके मेरे व्यक्तिगत कार्यों में उन्होंने न केवल उत्साहित किया अपितु रूचि दिखाते हुए सहयोग भी दिया।

उनके मन में सदैव समाज के प्रत्येक व्यक्ति जो 'अग्रवाल' हो के लिए अपनापन था। अग्रवाल शब्द से ही उन्हें प्यार था। अग्रवाल शब्द में उनके प्राण थे। अग्रवाल जाति के उत्थान के लिए अपने आपको मिटा देने के लिए वह सदैव तत्पर रहते थे।

एक बार मुझसे कहा चैतन्य स्वरूप तुमने कभी विचारा जिस अग्रवाल जाति को लखपति बनाने का प्रचलन महाराजा अग्रसेन के राज्य में था वह प्रचलन फिर कभी हो सकेंगे। मैं क्या उत्तर देता—मेरा उत्तर था।

आप भी अग्रवाल जाति के लिए अग्रसेन के अवतार से कम नहीं हैं। आप चाहेंगे, विचार करेंगे तो अवश्य ऐसा हो सकेगा और तभी उनका ध्यान महाराज अग्रसेन की राजधानी अग्रोहा की तरफ गया उन्होंने उस राजधानी के पुर्नवास की सभी संभावनाओं का पता लगाने, उस पर काम करने, अग्रवालों का अखिल विश्व तीर्थ स्थली बनाने के लिए दृढ़ निश्चय किया और जानते हैं उसके लिए उन्होंने कितना कठिन श्रम किया उन्हें अनेक बार मैंने काफी तेज बुखार में अग्रोहा के नक्शों को लेकर आर्कीटेक्ट तथा हरियाणा के अधिकारियों के पास जाते देखा है। उनके पास साधनों की कमी होते हुए भी 'अकेला चलो' में विश्वास करते हुए वह दृढ़ विश्वासी कर्मवीर व्यक्ति आगे बढ़ता गया कभी पीछे नहीं देखा और आज वह तीर्थस्थली अग्रोहा विश्व के नक्शे पर पुनः स्थापित है।

वैश्य को-आपरेटिव बैंक की स्थापना भी इसी कड़ी में एक मनका था। उनके मन में अग्रवाल बन्धुओं को रोजगार देने-बैंक से कर्जा देकर कारखाने लगवाने की तथा इस तरह 'अग्रवाल ही अग्रवाल' ट्रेड में हों, अग्रबाल का नाम ट्रेड और ट्रेड को अग्रवाल नाम से जाना जाए ऐसी उनकी धुन—लग्न और दृढ़ निश्चय था।

मुझे याद है उनसे विचारों में अग्रसेन न केवल अग्रवंशज के अग्रज थे या एक महापुरुष थे अपितु अग्रसेन एक ईश्वर थे, एक पालक थे, एक वरदान थे, एक भगवान थे। वो कहा करते थे कि अग्रसेन जयन्ती मना लेना ही अग्रसेन महाराज की सम्पूर्ण याद नहीं होगी उनके हर जगह मन्दिर हो, उनकी मूर्ति की वहां स्थापना, पूजा और अर्चना हो और वहाँ पर औद्योगिक नगर बनाकर प्रत्येक अग्रवाल को उसकी योग्यता के अनुसार काम हो तभी मन को शान्ति मिलेगी।

उन्होंने मुझे एक बार कहा था कि तुम्हें पूरे भारत में घूमना पड़ेगा और पूरे भारत के अग्रवाल बन्धुओं के पते तथा कार्य एकत्र कर एक डायरेक्ट्री निकालनी पड़ेगी। मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया किन्तु मैं उस कार्य को पूरा न कर सकने का दोषी हूं पर वह कर्मवीर व्यक्ति मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के ऊपर न तो आश्रित था न कभी आलसी बना, उन्होंने अग्रवाल बन्धुओं की डायरेक्ट्री निकाली उसमें चाहे पूरे भारत के सभी अग्रवालों का नाम पतों का समावेश न हुआ हो। यह संभव नहीं था। पर अग्रवालों के बहुत बड़े व्यापार, व्यवसाय, उनके प्रतिष्ठानों, कार्यों का संग्रह का प्रयास स्तुल्य था।

एक बार मेरे गांव जुरहरा (भरतपुर) (जब में जुरहरा रहता था अब तो 29 साल से जयपुर में रह रहा हूं) ले चलने के लिए रूठ गया मेरा आग्रह था कि आप मेरे गांव चलकर अग्रसेन जयन्ती में शामिल होंगे, तथा अग्रवालों को संगठित करेंगे। उन्होंने मुझे बहुत समझाया कि देहली में अनेक कार्यक्रम उस रोज होते हैं मेरा यहाँ रहना जरूरी है पर मेरी जिद्द थी। आज मैं स्वयं सोचता हूं कि ऐसे महान पुरुष से मैंने ऐसी जिद्द क्यों की मैं उन्हें जुरहरा ले जाने पर अड़ गया 4421, नई सड़क वाले कार्यालय में 1-2 रोज नहीं हफ्ते भर पड़ा रहा अन्त में उन्होंने मेरे साथ चलने की स्वीकृति दे ही दी। मैं भी तभी शान्त हुआ उन दिनों हमको गाँव जाने के लिए जो देहली से मात्र 95 कि० मीटर है 12 घण्टे लगे। कच्चे-पक्के कहीं पैदल कहीं घोड़ा की सवारी करते हुए मास्टरजी मेरे गांव पहुचे और अग्रसेन जयन्ती में शामिल हुए।

किसी का विवाह, किसी की मृत्यु, किसी की खुशी, किसी का गम सभी में मास्टर जी उपस्थित रहते थे। वह निश्चय ही अग्रबालों के लिए ही पैदा हुए और अग्रवालों के लिए ही जिए और अग्रवालों के लिए ही मरे। अग्रवाल शिक्षण संस्थाऐं, अग्रवाल औद्योगिक प्रतिष्ठान, अग्रवाल औद्योगिक नगर या अग्रवाल जाति सूचक शब्द सभी में आज मास्टर जी का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है।

वो बगैर किसी प्रचार एवं नाम के 'केवल' अग्रवाल जाति की सेवा में विश्वास रखते थे उन्होंने अपने को अग्रवालों का नेता नहीं माना, अग्रवालों के सेवक के नाते ही उन्होंने अपनी पहिचान कराई। अग्रवालों के दुःख दर्द, विधवाओं की समस्या हो चाहे दहेज की समस्या, अशिक्षा, बेरोज़गारी, कुपोषण, बीमारी सभी में उन्होंने रूचि दिखाई और समस्याओं का समाधान तन, मन एवं धन से किया। वह व्यक्ति यथा योग्य यथा स्थान यथा समय अग्रवालों के लिए समर्पित था, वह व्यक्ति अग्रवालों का मसीहा था, वह व्यक्ति अग्रवालों को वरदान था, अग्रवालों की दिव्य ज्योति थी, अगुआ था, अग्रवालों का धन था, अग्रवालों का कुबेर था, अग्रवालों की प्रतिष्ठा थी, अग्रवाली की जान थी।

वह एक में अनेक था, वह ज्योति पुंज था। ऐसे महान पुरुष के लिए शत् शत् प्रणाम। उनकी याद उनके उपदेश सदैव हमारे साथ हैं। हमें आत्म निरीक्षण कर उनके आदेशों पर चलने की प्रेरणा लेनी है। ऐसा व्यक्ति 'न भूतो न भविष्यति'। ●

अग्रवाल समाज के महान पारखी

प्रहलादराय गुप्ता
1, हैली रोड,
नई दिल्ली-110001

स्व० मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल से मेरा सर्वप्रथम परिचय सन् 1964 में सेठ घनश्याम दास गोयल जी के पिता लाला छबीलदास जी द्वारा हुआ। स्व० मास्टर जी अग्रवाल समाज के एक पारखी थे। समाज कार्यों के लिए कौन सा व्यक्ति किस कार्य के लिए उपयुक्त होगा इसकी उन्हें परख थी। उन्होंने शिक्षा तथा विधवा सहायता कोष, हरिद्वार में आश्रम का निर्माण, अग्रोहा में टेक्नीकल कालेज की योजना, वैश्य बैंक की स्थापना, विवाह सहायता केन्द्र के माध्यम से समाज की बड़ी सेवा की है और अग्रवाल समाज की प्रतिभाओं को समाजसेवा के लिए प्रेरित किया। मेरे जैसे व्यक्ति को शिक्षा सहायता कोष तथा अग्रसेन इंजिनियरिंग टेकनीकल कालेज सोसाइटी का प्रधान पद देकर समाज सेवा के प्रति मेरी भावनाओं को उभारा।

उनका व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली था। उनमें समाज सेवा के लिए लोगों को प्रेरित कर सहयोग प्राप्त करने की अद्भुत क्षमता थी। ईश्वर हमें सामर्थ्य दे कि हम उनके दिखाये व बताये मार्ग पर अग्रसर होते रहें। ●

कीर्ति यस्य सः जीवति

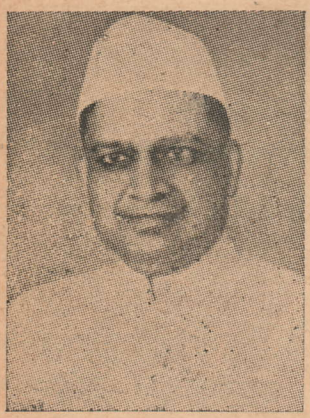

भगवती प्रसाद खेतान
198, जमशेदजी टाटा रोड,
चर्चगेट, रिक्लेमेशन
बम्बई-400020

कौन जानता था कि आज से कुछ दिनों पूर्व जिनकी बहुमुखी निर्भीक लेखनी सारे अग्रवाल ससाज को दिशा निर्देशन करती रही और नवयुवकों को प्रेरणा देती रही, आज उन्हीं के बारे में संस्मरण लिखना पड़ेगा।

स्वर्गीय प्रिय मास्टर जी मेरे बहुत ही पुराने, बहुत ही अच्छें मित्र और अग्रवाल समाज के हितैषियों में प्रमुख थे। उनको मैं 30 वर्षों से भी अधिक समय से जानता रहा हूं। मेरी अपनी दिल्ली यात्रा के दौरान उनसे सदा ही भेंट होती रहती थी। उनकी अच्छाई, कार्य, लगन, समाज सेवा, ईमानदारी, कर्मठता के बारे में जो भी लिखा जाय या कहा जाय कम ही होगा।

मेरी समझ में जितने भी अग्रोहा तीर्थ, अथवा महाराजा अग्रभेन जी के कार्य में, अग्रवाल जाति के संगठन के बारे में अग्रवाल समाज के जितने भी महान् कार्यकर्त्ता हो चुके हैं अथबा कार्य कर रहे हैं उन सब में मास्टर जी का विशिष्ट स्थान था। उनके समान अच्छी लगन, निर्लेप भावना से कार्य करने वाले व्यक्ति संसार में कम ही होते हैं।

अपने जीवन के अन्तिम वेला में वे लक्ष्मी विवाह केन्द्र की स्थापना करके एक ऐसा आदर्श कायम कर दिया जिस पर यदि तत्परता और सावधानी पूर्वक कार्य किया जाय तो न केवल अग्रवाल जाति के लोग विवाह हेतु वर वधू की तलाश जैसी प्रबल समस्या से सहज ही में छुटकारा पा सकते हैं बल्कि इसका अनुकरण कर दूसरे समाज अथवा जाति के लोग भी अपना कल्याण कर सकते हैं। ऐसे सामाजिक कार्य के लिए मुख्य संस्थापक और प्रेरणास्रोत श्री मास्टरजी सदैव याद किये जाते रहेंगे।

मैं उनके बारे में इतना ही कहना उपयुक्त समझता हूं कि सारा अग्रवाल समाज अथवा उनके सहयोगी सभी लोग उनके समाज सेवा के क्षेत्र में किये गये कार्यों और ऐतिहासिक, रचनात्मक योगदान के लिये सदैव ही ऋणी रहेंगे। यह भी कहा जा सकता है कि उनके अच्छे विचारों, महान कार्यो और उनके मधुर स्वभाव, उत्तम व्यवहार पर यदि लिखा जाय तो पूरा एक ग्रंथ तैयार हो जायगा फिर भी मास्टर जी के बारे में बहुत कुछ लिखने को शेष ही रह जायगा। क्योंकि उन्होंने इतना अधिक कार्य कर दिये जिन्हें लिपिबद्ध करना कठिन कार्य है।

जहाँ तक मेरा विश्वास है कि जब कभी भी अग्रवाल समाज की महान् विभूतियों की जीवन गाथा लिखी जायगी तो उसमें मास्टर जी का जीवन दर्शन विशेष स्थान पर अवश्य ही रखा जायगा।

अब तो उनकी स्मृतियाँ ही शेष हैं। हां, यदि हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि देना चाहें तो उनके द्वारा किये गये कार्यों का आदर्श लेकर उनके द्वारा छोड़े गये अधूरे कार्यों को पूरा करने की कोशिश करें, यही उनका पुण्य स्मरण होगा।

'कीर्तियस्य स जीवति'

●●●

स्वर्गीय मा० लक्ष्मीनारायण जी देशभक्त समाजसेवी व कर्मठ कार्यकर्त्ता

●

श्री प्रेमचन्द गुप्ता, सचिव,
विराट हिन्दू समाज,
दिल्ली

यह जानकर संतोष हुआ की अग्रोहा तीर्थ अपने संस्थापक स्व० मा० लक्ष्मी नारायण जी की स्मृति में विशेषांक प्रकाशित कर रहा है।

श्री लक्ष्मी नारायणजी देशभक्त, समाजसेवी, कर्मठ नेता व सनातन धर्मावलम्बी थे।

अनेक वर्षों से पूर्णिमा के रोज वे हर स्थिति में गंगा स्नान अवश्य करते थे।

लगभग 35 वर्ष पूर्व मैं श्री लक्ष्मी नारायण जी के सम्पर्क में आया। उस समय श्री बशेशर नाथ जी गोटे वाले मास्टर जी के अनन्य भक्तों व कर्मठ कार्यकर्ताओं में से एक थे। राजधानी दिल्ली में महाराज अग्रसेन की जयन्ती सम्पन्न करना, वैश्य का० आ० बैंक की स्थापना कर उसके माध्यम से सैंकड़ों निर्बल परिवारों को सम्पन्न करना मास्टर जी की सूझ बूझ का परिचायक था। अग्रोहा तीर्थ मासिक पत्र, लक्ष्मी विवाह केन्द्र तथा हरिद्वार में महाराजा श्री अग्रसेन जी की स्मृति में अग्रवाल आश्रम की स्थापना और अग्रवालों के निकास स्थल अग्रोहे का जीर्णोद्धार स्व० मास्टर जी की अमर कृतियां हैं।

प्रभु हमें भी बल दे की हम दिवंगत महापुरुष के अनुसार ही देश धर्म और जाति के कार्य मेंनि:स्वार्थ भाव से सेवा में रत रहें।

श्रद्धांजलि के साथ !

अग्रोहा का निर्माण अग्रवाल संगठन का आधार

शिव शंकर गर्ग
संयोजक, सोकर जिला
अग्रवाल समाज
देवीपुरा, सीकर

"हममें से अधिकांश व्यक्ति ऐसे हैं, जो प्रायः समाज की परवाह नही करते। उन्हें समाज तब यार आता है, जब वे अपनी लड़की के लिए योग्य वर ढूँढ़ने निकलते हैं। तब समाज में फैली बुराइयों पर उन्हें क्रोध आता है। वे उन्हें तत्काल दूर करने की बात सोचते हैं, पर आग लगने के बाद कुआ खोद कर आग नहीं बुझाई जा सकती। इसी तरह समाज की बुराइयाँ भी एक दिन में दूर नहीं हो सकती।' ये शब्द लगभग 18 वर्ष पूर्व मास्टर लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल ने राजस्थान अग्रवाल संघ के छठे अधिवेशन में केशरिया ध्वज फहराते हुए कहे थे, जो आज भी समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

राजस्थान के सवाई माधोपुर नगर में आयोजित इस अधिवेशन में मास्टर जी तुला चिन्ह अंकित ध्वज के नीचे मुझ से कुछ ही दूरी पर खड़े थे। पैंसठ वर्षीय उस वृद्ध की वाणी में नम्रता के साथ ओज भी था।

मास्टर जी ने कार्यकर्ताओं को परामर्श देते हुए कहा कि—'अग्रवाल समाज के कार्यकर्ता धन संग्रह के लिए तो अग्रवाल बनकर जाति वालों के पास पहुंचते हैं, पर उस धन को ऐसे कार्यो में खर्च करते हैं, जिससे परोक्ष-रूप से व्यवसायिक या राजनैतिक लाभ हो। वे समाज के पैसे के बल पर महत्वाकांक्षाएं पूर्ण करते हैं। जो नेता सार्वजनिक मंच पर अग्रवाल जाति या वैश्य समाज की निन्दा करते हैं, वे छुपकर हमसे धन और वोट की भीख मांगते हैं।'

मैंने इससे पूर्व किसी अग्रवाल समाज के कार्यकर्त्ता के मुख से ऐसे स्पष्ट विचार नहीं सुने थे। मास्टर जी उन दिनों अ० भा० अग्रवाल महा-सभा के महामंत्री थे और 'अग्रोहा' नाम से एक मासिक पत्र भी प्रकाशित करते थे। जो 'अग्रोहा तीर्थ' के नाम से बहुचर्चित है।

दूसरे दिन प्रातः रणथम्भौर गये। मैं मास्टर जी के साथ ही तांगे में बैठा। मार्ग में उन्होंने मुझसे नाम व पता पूछा और तुरन्त ही इस प्रकार घुल-मिल गये। जैसे वर्षो पुराने सम्बन्ध रहे हों।

उन्होंने अग्रोहा को फिर से बसाने की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि जब तक अग्रोहा में ऐसा कोई महत्वपूर्ण निर्माण कार्य न हो, जिसकी ख्याति सारे भारत में हो, तब तक अग्रवाल समाज संगठित नहीं हो सकता। सभी अग्रबाल अपनी जन्मभूमि से भावात्मक सम्बन्ध बना लेंगे तब अग्रवाल पुनः उन्नति के शिखर पर पहुंच जायेंगे।

मार्ग में दहेज पर भी चर्चा हुई। उनका मत था कि निकट भविष्य में इस समस्या का कोई हल निकलना कठिन है। स्त्रियों में जेवर के प्रति आकर्षण बना रहेगा तब तक दहेज प्रथा समाप्त नहीं हो सकती।

आज अट्ठारह वर्षों के बाद मैं अनुभव कर रहा हूं कि मास्टर जी के विचार वर्तमान समय में भी उतने ही महत्व के हैं, जितने उस समय थे। उनके हृदय में जाति के प्रति निश्चल प्रेम था। वे तन-मन से जाति के लिए समर्पित थे। हमारे कार्यकर्ताओं को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

जब 'अग्रोहा तीर्थ' बन जायेगा, तब ही उस महापुरुष का स्वप्न साकार हो जायेगा। उस युग पुरुष को विनम्र श्रद्धाञ्जलि।

महान अग्रवाल नेता

मुरारी लाल बंसल मंत्री, अग्रवाल सम्मेलन फिरोजाबाद

अग्रवाल क्लब फिरोजाबाद की स्थापना कर अग्रसैन जयन्ती का प्रोग्राम तय किया सोचा कि समाज के किसी बड़े नेता को फिरोजाबाद बुलाया जावे, फौरन ही लाला लक्ष्मी नारायणजी बंसल को पत्र लिखा तथा लालाजी फौरन ही दिल्ली से फिरोजाबाद आ गये। मेरा छोटा सा मकान था माताजी पिताजी, बहन-भाई सभी मिलाकर 8 आदमी घर में निवास करते थे। लालाजी मानो अपने घर में आ गये हों, सभी के साथ मिलना-जुलना व दाल रोटी घर में खाना शाम हो गई घर के सभी लोग चारपाई पर बैठे थे, मैने लाला जो से कहा कल सुबह प्रभात फेरी निकलेगी आप कहे तो हम लोग अग्रवाल धर्मशाला में जाकर सोयें। लालाजी बोले अरे भई यहीं सोवेंगे सुबह होते ही उठकर चले जावेंगे।

रात को हम और लाला जी एक तखत पर सो गये, मानो कोई घर का मुखिया अपने घर में सो रहा हो।

सुबह 4 बजे लाला जी बोले बंसल जी क्या सोते रहोगे 4 बज चुके हैं, प्रभात फेरी में चलना है। 4 बजे उठे 1 घटे में सोच इत्यादि से तैयार हो हम लोग एक लालटेन लेकर अग्रवाल धर्मशाला आ गये। फीरोजाबाद में पहली अग्रसेन जयन्ती थी, बड़ी भीड़ प्रभात फेरी में निकली लाला जी का जै जयकार हम सब बोल रहे थे, महाराजा अग्रसैन की जै जयकार हो रही थी दूसरे दिन समाज की एक विशाल सभा अग्रवाल धर्मशाला में थी। लालाजी का ओजस्वी भाषण सभा में हुआ, लाला रमनलाल जी आगरा से पधारे थें, गुलाबराय जी एम०ए० भी सभा में पधारे थे।

'लालाजी की बदौलत दिल्ली व अग्रोहा देखा। लालाजी हो हम को कह गये कि एक विशाल अधिवेशन अग्रोहा में होगा सन् 50 में ऐसा ही हुआ एक विशाल अधिवेशन अग्रोहा में हुआ फीरोजाबाद से मेरे साथ 5 कार्यकर्त्ता सबसे पहले अग्रोहा अधिवेशन में आये इसके बाद महासंघ का अधिवेशन दिल्ली हुआ तब लाला जी से मुलाकात हुई। अ०भा० अग्रवाल सम्मेलन की दिल्ली बैठक में लालाजी कई बार मिले। लालाजी का स्नेह और प्यार वैसा ही था, जो सन् 48 व 50 में हम लोगों के साथ फीरोजाबाद बैठक में था।

स्व० मास्टर लक्ष्मीनारायण जी का स्वप्न अग्रोहा निर्माण

राधाकिशन महाजन, सम्पादक—'अग्रोहा जन्मभूमि' हिसार

स्व० मास्टर जी का सम्पूर्ण जीवन समाज सेवा में ही व्यतीत हुआ। अग्रोहा को वे एक शानदार नगर के रूप में विकसित करने का स्वप्न संजोये हुए थे, इसी लालसा के फलस्वरूप उन्होंने आज से लगभग 30 वर्ष पूर्व से ही अपना प्रयास आरम्भ कर दिया था और बड़े 2 प्रमुख समाज सेवियों एवं उद्योगपतियों से यही आग्रह करते रहे कि अग्रोहा का पुनर्निर्माण कराया जाऐ क्योंकि यह अग्रवालों की जन्मभूमि है और देश में अग्रवाल समाज धनाढय कहलाता है अतः अग्रोहा खंडहरों के रूप में ही पड़ा रहना यह समाज के लिए कलंक है।

स्व० मास्टर जी जब भी अग्रोहा आते थे तब हमारे ही निवास स्थान अग्रोहा में विश्राम करते थे, मेरे चाचा स्व० दुर्गाप्रशाद सरपंच से उनका विशेष प्रेम भाव था। मास्टर जी ने सन् 1964 में मुख्य 2 व्यक्तियों की एक बैठक देहली में बुलवाई जिसमें प्रस्ताव रखा गया कि अग्रोहा में इंजिनियर एण्ड टेक्नीकल कालेज की स्थापना करवाई जाए, इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार करते हुए 'श्री अग्रसेन इंजिनियरिंग एण्ड टेकनीकल कालेज सोसायटी' के नाम से सोसाइटी रजि० करवाई गई तत्पश्चात् कालेज हेतु स्व० दुर्गाप्रशाद सरपंच के सहयोग से लगभग 70 एकड़ भूमि गांव के निकट खरीद ली गई और सन् 1965 में पंजाब व हरियाणा संयुक्त राज्य के तत्कालीन मुख्यमन्त्री कामरेड रामकिशन जी के करकमलों द्वारा कालेज का शिलान्यास भी करवा दिया गया था परन्तु कालेज का निर्माण ना होना गांव का दुर्भाग्य ही कहा जाऐगा, सरकार ने यह कहते हुए स्वीकृति देने में टालमटोल कर दी थी कि जो लड़के कालेज से इंजिनियर बनकर आऐंगे उन्हें हम सर्विस देने में असमर्थ होंगे।

स्व० मास्टर जी तथा अन्य समाजसेवी इस भूमि पर विकास कार्य करने हेतु निरन्तर प्रयास करते रहे और सन् 1976 में अ० भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के मुख्य 2 पदाधिकारीगण की एक बैठक देहली में आयोजित की गई थी, जिसमें प्रधान श्री कृष्णजी मोदी, श्री रामेश्वर दाप गुप्त श्री मास्टर लक्ष्मीनारायण, श्री तिलकराज अग्रवाल बम्बई, श्री देवकीनन्दन गुप्त देहली, श्री राधाकिशन महाजन सम्पादक हिसार तथा अन्य 5-7 महानुभावों ने भाग लिया, और निर्णय लिया गया कि उपरोक्त खरीदी गई कुल भूमि में से अगोहा के विकास हेतु 23 एकड़ भूमि 'अगोहा विकास ट्रस्ट' को परिवर्तित की जाऐ तत्पश्चात् 23 एकड़ भूमि ट्रस्ट को परिवर्तित कर दी गई।

स्व० मास्टरजी तथा अन्य समाजसेवियों के सहयोग स्वरूप जो उक्त भूमि उस समय गांव के निकट और बिलकुल नाममात्र कीमत में क्रय कर ली गई वह इस समय क्रय करना बिल्कुल ही असम्भव हो जाता अतः उस भूमि को अगोहा प्रगति का एक बीज व पौधा ही कहा जाए तो प्रतिश्योक्ति न होगी स्व० मास्टर लक्ष्मीनारायण अपने स्वास्थ्य की चिन्ता ना करते हुए वृद्धावस्था के बावजूद भी अपनी जन्मभूमि के प्रेमस्वरूप सदैव अग्रोहा आते रहते तथा वहां हो रहे निर्माण कार्यो को देखने में उत्सुकता रखते थे, अब यह पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि उनके द्वारा लगाया गया वह पौधा शीघ्र ही पेड़ बनेगा तथा हमें फल भी प्राप्त होंगे, बीज से पौधा, पौधे से पेड़ तथा पेड़ तथा पेड़ से फल प्राप्त होने में आखिर समय तो लगता ही है। भगवान से प्रार्थना है कि उनके द्वारा सजोंये गए स्वप्न को शीघ्र ही साकार बनाएं और मास्टर जी को सदैव अपने चरण कमलों में स्थान दें। ●

मूर्तिमान संस्था मास्टर लक्ष्मीनारायणजी अग्रवाल

देवकी नन्दन गुप्त
महामंत्री—श्री अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नीकल कालेज सोसायटी
अग्रोहा (रजि०)

28, बाजार लेन, बंगाली मार्केट नई दिल्ली-110001

किसी भी संस्था का सुचारु रूप से संचालन निश्चय ही एक बड़ा गुण है, परन्तु किसी नई संस्था को जन्म देकर उसे अच्छी संस्थाओं की पंक्ति में ला खड़ा करना अथवा किसी मृत प्रायः संस्था में पुनः प्राण फूंक कर उसे फिर अपने पैरों पर खड़ा कर देना और भी बड़ा गुण है। सदा खादी की धोती, कुरता और टोपी की सादी वेशभूषा में रहने वाले मा० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल में उक्त दोनों ही ण प्रचुर मात्रा में थे।

स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मीनारायण जी इतनी संस्थाओं से सम्बद्ध थे कि वे स्वयं एक जीवन्त संस्था होकर रह गए थे। संस्थाएं उनके रक्त में रचपच गई थी।

अपने आप में इस तरह की जीवंत संस्था मास्टर लक्ष्मीनारायण जी से मेरा पहला परिचय एक संस्था के माध्यम से ही हुआ। 1954 में अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा—इन्दौर जब मृत प्रायः सी हो गई थी तो मास्टरजी ने उसे अपने हाथों में लिया और उसे दिल्ली लाकर फिर से पंजीकृत कराया। मुझ पर उनकी कृपा थी और वे मुझे एक उत्साही कार्यकर्त्ता मानते थे। उन्होंने महासभा का संस्थापक उपप्रधान बनाया। उसे सुदृढ़ करने के लिए जो भागदौड़ उन्होंने स्वयं की और जो हमसे कराई, उसे याद करके आज भी रोमांच हो आता है।

मास्टर जी में जबरदस्त संगठन प्रतिभा थी और उससे भी अधिक अपने अग्रवाल होने पर गौरव था। उनमें एक सच्चे अग्रवाल की तरह अग्रवाल समाज को निरन्तर ऊँचा उठाने की जोरदार ललक थी। इसी लिए उन्होंने पहले अग्रवाल समाज से जुड़ी संस्थाओं को ही जन्म दिया अथवा नए प्राण दिए।

मुझ पर उनकी कृपा दृष्टि जीवनपर्यन्त बनी रही। 1964 में जब उन्होंने अग्रवालों की जन्मस्थली अग्रोहा में जमीन लेकर वहां श्री अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नीकल कालेज की स्थापना की योजना पूरी करने के लिए एक सोसाइटी की स्थापना की तो मुझे फिर उस सोसायटी के संस्थापकों में रखा।

यह उनकी लगन और हम जैसे उत्साही व्यक्तियों को प्रेरणा देकर हमसे काम लेने की प्रतिभा ही थी कि जल्दी ही इस सोसाइटी ने अग्रोहा में 70 एकड़ जमीन खरीद डाली।

यह हमारा दुर्भाग्य रहा कि हरियाणा बन जाने और हममें पर्याप्त प्रयास तथा कई बार की चण्डीगढ़ यात्रा के बावजूद अग्रोहा में इंजीनियरिंग कालेज खोलने की अनुमति हमें नहीं मिल पाई। फिर भी मास्टरजी

स्व० मास्टर लक्ष्मीनारायण जी का स्वप्न अग्रोहा निर्माण

राधाकिशन महाजन, सम्पादक—'अग्रोहा जन्मभूमि' हिसार

स्व० मास्टर जी का सम्पूर्ण जीवन समाज सेवा में ही व्यतीत हुआ। अग्रोहा को वे एक शानदार नगर के रूप में विकसित करने का स्वप्न संजोये हुए थे, इसी लालसा के फलस्वरूप उन्होंने आज से लगभग 30 वर्ष पूर्व से ही अपना प्रयास आरम्भ कर दिया था और बड़े 2 प्रमुख समाज सेवियों एवं उद्योगपतियों से यही आग्रह करते रहे कि अग्रोहा का पुनर्निर्माण कराया जाऐ क्योंकि यह अग्रवालों की जन्मभूमि है और देश में अग्रवाल समाज धनाढय कहलाता है अतः अग्रोहा खंडहरों के रूप में ही पड़ा रहना यह समाज के लिए कलंक है।

स्व० मास्टर जी जब भी अग्रोहा आते थे तब हमारे ही निवास स्थान अग्रोहा में विश्राम करते थे, मेरे चाचा स्व० दुर्गाप्रशाद सरपंच से उनका विशेष प्रेम भाव था। मास्टर जी ने सन् 1964 में मुख्य 2 व्यक्तियों की एक बैठक देहली में बुलवाई जिसमें प्रस्ताव रखा गया कि अग्रोहा में इंजिनियर एण्ड टेक्नीकल कालेज की स्थापना करवाई जाए, इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार करते हुए 'श्री अग्रसेन इंजिनियरिंग एण्ड टेकनीकल कालेज सोसायटी' के नाम से सोसाइटी रजि० करवाई गई तत्पश्चात् कालेज हेतु स्व० दुर्गाप्रशाद सरपंच के सहयोग से लगभग 70 एकड़ भूमि गांव के निकट खरीद ली गई और सन् 1965 में पंजाब व हरियाणा संयुक्त राज्य के तत्कालीन मुख्यमन्त्री कामरेड रामकिशन जी के करकमलों द्वारा कालेज का शिलान्यास भी करवा दिया गया था परन्तु कालेज का निर्माण ना होना गांव का दुर्भाग्य ही कहा जाऐगा, सरकार ने यह कहते हुए स्वीकृति देने में टालमटोल कर दी थी कि जो लड़के कालेज से इंजिनियर बनकर आऐंगे उन्हें हम सर्विस देने में असमर्थ होंगे।

स्व० मास्टर जी तथा अन्य समाजसेवी इस भूमि पर विकास कार्य करने हेतु निरन्तर प्रयास करते रहे और सन् 1976 में अ० भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के मुख्य 2 पदाधिकारीगण की एक बैठक देहली में आयोजित की गई थी, जिसमें प्रधान श्री कृष्णजी मोदी, श्री रामेश्वर दाप गुप्त श्री मास्टर लक्ष्मीनारायण, श्री तिलकराज अग्रवाल बम्बई, श्री देवकीनन्दन गुप्त देहली, श्री राधाकिशन महाजन सम्पादक हिसार तथा अन्य 5-7 महानुभावों ने भाग लिया, और निर्णय लिया गया कि उपरोक्त खरीदी गई कुल भूमि में से अगोहा के विकास हेतु 23 एकड़ भूमि 'अगोहा विकास ट्रस्ट' को परिवर्तित की जाऐ तत्पश्चात् 23 एकड़ भूमि ट्रस्ट को परिवर्तित कर दी गई।

स्व० मास्टरजी तथा अन्य समाजसेवियों के सहयोग स्वरूप जो उक्त भूमि उस समय गांव के निकट और बिलकुल नाममात्र कीमत में क्रय कर ली गई वह इस समय क्रय करना बिल्कुल ही असम्भव हो जाता अतः उस भूमि को अगोहा प्रगति का एक बीज व पौधा ही कहा जाए तो प्रतिश्योक्ति न होगी स्व० मास्टर लक्ष्मीनारायण अपने स्वास्थ्य की चिन्ता ना करते हुए वृद्धावस्था के बावजूद भी अपनी जन्मभूमि के प्रेमस्वरूप सदैव अग्रोहा आते रहते तथा वहां हो रहे निर्माण कार्यो को देखने में उत्सुकता रखते थे, अब यह पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि उनके द्वारा लगाया गया वह पौधा शीघ्र ही पेड़ बनेगा तथा हमें फल भी प्राप्त होंगे, बीज से पौधा, पौधे से पेड़ तथा पेड़ तथा पेड़ से फल प्राप्त होने में आखिर समय तो लगता ही है। भगवान से प्रार्थना है कि उनके द्वारा सजोंये गए स्वप्न को शीघ्र ही साकार बनाएं और मास्टर जी को सदैव अपने चरण कमलों में स्थान दें।

मूर्तिमान संस्था

मास्टर लक्ष्मीनारायणजी अग्रवाल

देवकी नन्दन गुप्त
महामंत्री—श्री अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नीकल कालेज सोसायटी
अग्रोहा (रजि०)

28, बाजार लेन, बंगाली मार्केट नई दिल्ली-110001

किसी भी संस्था का सुचारु रूप से संचालन निश्चय ही एक बड़ा गुण है, परन्तु किसी नई संस्था को जन्म देकर उसे अच्छी संस्थाओं की पंक्ति में ला खड़ा करना अथवा किसी मृत प्रायः संस्था में पुनः प्राण फूंक कर उसे फिर अपने पैरों पर खड़ा कर देना और भी बड़ा गुण है। सदा खादी की धोती, कुरता और टोपी की सादी वेशभूषा में रहने वाले मा० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल में उक्त दोनों ही ण प्रचुर मात्रा में थे।

स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मीनारायण जी इतनी संस्थाओं से सम्बद्ध थे कि वे स्वयं एक जीवन्त संस्था होकर रह गए थे। संस्थाएं उनके रक्त में रचपच गई थी।

अपने आप में इस तरह की जीवंत संस्था मास्टर लक्ष्मीनारायण जी से मेरा पहला परिचय एक संस्था के माध्यम से ही हुआ। 1954 में अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा—इन्दौर जब मृत प्रायः सी हो गई थी तो मास्टरजी ने उसे अपने हाथों में लिया और उसे दिल्ली लाकर फिर से पंजीकृत कराया। मुझ पर उनकी कृपा थी और वे मुझे एक उत्साही कार्य-कर्त्ता मानते थे। उन्होंने महासभा का संस्थापक उपप्रधान बनाया। उसे सुदृढ़ करने के लिए जो भागदौड़ उन्होंने स्वयं की और जो हमसे कराई, उसे याद करके आज भी रोमांच हो आता है।

मास्टर जी में जबरदस्त संगठन प्रतिभा थी और उससे भी अधिक अपने अग्रवाल होने पर गौरव था। उनमें एक सच्चे अग्रवाल की तरह अग्रवाल समाज को निरन्तर ऊँचा उठाने की जोरदार ललक थी। इसी लिए उन्होंने पहले अग्रवाल समाज से जुड़ी संस्थाओं को ही जन्म दिया अथवा नए प्राण दिए।

मुझ पर उनकी कृपा दृष्टि जीवनपर्यन्त बनी रही। 1964 में जब उन्होंने अग्रवालों की जन्मस्थली अग्रोहा में जमीन लेकर वहां श्री अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नीकल कालेज की स्थापना की योजना पूरी करने के लिए एक सोसाइटी की स्थापना की तो मुझे फिर उस सोसायटी के संस्थापकों में रखा।

यह उनकी लगन और हम जैसे उत्साही व्यक्तियों को प्रेरणा देकर हमसे काम लेने की प्रतिभा ही थी कि जल्दी ही इस सोसाइटी ने अग्रोहा में 70 एकड़ जमीन खरीद डाली।

यह हमारा दुर्भाग्य रहा कि हरियाणा बन जाने और हममें पर्याप्त प्रयास तथा कई बार की चण्डीगढ़ यात्रा के बावजूद अग्रोहा में इंजीनियरिंग कालेज खोलने की अनुमति हमें नहीं मिल पाई। फिर भी मास्टरजी

के नेतृत्व में हमने अपनी सोसाइटी की खाली पड़ी 23 एकड़ जमीन अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन से सम्बद्ध 'अग्रोहा विकास ट्रस्ट' को दान कर दी, जिस पर आज वहाँ एक विशाल धर्मशाला बन चुकी है तथा मन्दिर बन रहा है। उस समय मैं सोसाइटी का महामन्त्री तथा तिलकराज जी प्रधान थे, परन्तु हमारी प्रेरणा शक्ति मास्टरजी ही थे।

मास्टर जी की शक्ति क्षीण हो गई थी, हाथ पैर हिलने लगे थे, परन्तु फिर भी सोसाइटी की हर बैठक में किसी न किसी का सहारा लेकर अवश्य पहुंचते थे।

जीवन के अन्तिम वर्षों में उन्होंने अपनी सेवाएं मात्र अग्रवाल समाज तक सीमित न रखकर समस्त मानव समाज के लिए अर्पित कर दी थी। इसी कारण उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष हरिद्वार में वृद्ध आश्रम की स्थापना के लिए होम कर दिए थे।

उनके द्वारा स्थापित संस्थाएं ही उनका जीवन्त स्मारक है। हम लोगों की, जिन्होंने उनके हाथों से विभिन्न संस्थाओं का कार्यभार अपने हाथों में लिया है, उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके द्वारा स्थापित संस्थाएं सदा फलती-फूलती रहें। इन्हीं संस्थाओं में उनकी स्मृति सदा जीवित रहेगी।

With Best Compliments From :

Phone : 2522234

Remember

LAKSHMI SWEETS

for

Quality-Cleanliness-Reliability

Special Attraction :

- Panir ki Jalebi
- Fruit Burfi
- Green Burfi
- Rasmalai
- Dossa
- Chat

Manufacturers of

Pure Desi Ghee Sweets & Namkins

149/150-E, KAMLA NAGAR, DELHI-110007

अपने मिशन में अग्रसर मास्टर जी

जौहरी लक्ष्मीनारायण सिंघल
सिंघल सदन,
22 हवामहल मार्ग,
भोपाल-462001
दूरभाष : 75437

स्व० श्री मास्टर लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल महामन्त्री अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा से मेरा प्रथम परिचय सं० 1930 में उज्जैन में अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा के अधिवेशन में हुआ था। इस अधिवेशन में मैंने एक प्रस्ताव रखा था कि इस संस्था के नाम में 'मारवाड़ी' शब्द के स्थान पर 'बीसा' शब्द रखा जावे जिससे यह जो एक संकुचित क्षेत्र की परिचायक है वृहत् रूप में परिणित हो जावेगी। उस समय के हिसाब से यह एक क्रांतिकारी प्रस्ताव था। वर्षों से चले आ रहे एक संस्था के नाम में इस प्रकार का परिवर्तन आसानी से स्वीकार करने के लिए लोग कैसे तैयार हो सकते थे। बहुत तर्क वितर्क का सामना करना पड़ा उसमें मुझे आदरणीय मास्टर साहब का भी सहयोग मिला और अन्त में वह प्रस्ताव पास हो गया। उस दिन से इस संस्था का नाम 'अखिल भारतीय बीसा अग्रवाल महासभा' हो गया।

श्री मास्टर साहब ने अपना जीवन ही समाज सेवा में अर्पण कर दिया था। समाज के संगठन और उत्थान के लिए वे आजीवन सतत प्रयत्नशील रहे और उस नाम से संस्था का संचालन करते रहे।

लगभग सन् 64-65 में आप एक बार भोपाल पधारे थे और उस समय समाज के मध्यवर्गीय व्यक्तियों को आर्थिक सहायता देने के लिए एक बैंक की स्थापना पर भी विचार विमर्श हुआ था उस समय मेरा उनका पुनः मिलन हुआ। उनके हृदय में समाज के हर क्षेत्र में परिवर्तन लाने की अटूट भावना विद्यमान थी।

संस्था के नाम में पुन परिवर्तन कब हुआ और उसमें से 'बीसा' शब्द भी हटा दिया गया और उसका नाम केवल 'अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा' रख लिया गया। जब मुझे इस बात का पता चला तो और भी प्रसन्नता हुई। जैसे कि एक मछली को कुएं से निकाल कर तालाब में हिलोरें लेने को छोड़ दिया जावे और फिर उसे उससे निकालकर समुद्र की गहराइयों में गोते लगाने का अवसर प्रदान कर एक स्वच्छन्द विचरण का आनन्द लेने को छोड़ दिया जावे। यही भावना मास्टर साहब के मन में भी रही उसे उन्होंने मूर्त रूप दिया और अपने मिशन में अग्रसर होते रहे।

मास्टर साहब में एक विशेष गुण यह भी था कि उनमें एक विशुद्ध सेवा भावना थी, नेता गिरी जैसी अनेक फोटो खिचवाना और हारफूल पहनने की लालसा नहीं थी वे एक मूक सेवक की तरह समाज सेवा में रत रहे। उनके निधन से समाज को एक लगन शील समर्पित भावना के व्यक्तित्व की क्षति हुई है जिसकी निकट भविष्य में पूर्ति होना कठिन है।

श्री भगवती प्रसाद खेतान ट्रस्ट

खेतान भवन, 6 माला, 198 जमशेदजी
टाटा रोड, चर्चगेट, बम्बई-20
टेलीफोन : 221645, 221559 तार : खेतान सन्स बम्बई
टेलेक्स : 011-4803 केबीसी

इन की ओर से

समस्त बुद्धिजीवियों, छात्रों, शिक्षित समुदाय और पाठकों से विनम्र निवेदन

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषतायें :

1. सारे विश्व में सृष्टि संवत् की गणना केवल भारत में 1,95,29,49,084 वर्षों से चली आ रही है। जिसका उदाहरण सारे भारत में फैले करोड़ों पंचागों में पाया जाता है।
2. भारत देश के सर्वमान्य ग्रन्थ ऋगवेद को पाश्चात्य विद्वान् मैक्समूलर ने विश्व की सर्वाधिक प्राचीन पुस्तक माना है।
3. विश्व के अनुपम आदर्श प्रजातन्त्र व्यवस्था रामराज्य को राष्ट्रपिता बापू ने भी स्वीकार किया था।
4. इसी देश के आदर्श ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता को इण्टरनेशनल कृष्णा कौन्सियनेस ने 50 भाषाओं में 8 करोड़ पुस्तकें तैयार कराकर सारे विश्व में फैलाया है। जिसकी रूस, चीन, इसराइल, अमरीका, आदि देशों में भारी मांग है।
5. इसी देश के महाराज श्री अग्रसेन जी का जीवन्त समाजवादी राज्य विख्यात है। जो आज से 5 हजार वर्ष पूर्व पंजाब हरियाणा सीमा पर अग्रोहा में था। वहाँ पर नवागंतुक को वहाँ के निवासी एक लाख परिवार एक-एक रुपया और एक-एक ईंट देकर अपने समान बना लेते थे। इशसे सारे विश्व में बैंकिंग, सराफे के धन का केन्द्र अग्रोहा में था। किन्तु वहाँ के धनपतियों से किसी को कोई ईर्ष्या, विरोध नहीं था। जबकि आज बड़े देशों के लोग अपनी तरफ धन को खींचने में लगे हैं।
6. भारत में आज भी करोड़ों मानव जो प्राणिमात्र की भलाई पर विचार व काम कर रहे हैं जैसे वैष्णव, जैन, संतमत, सूफीमत, गाधीवादी विचारधारा वाले इत्यादि काम कर रहे हैं। जबकि अपने आपको आज के वर्तमान में वैज्ञानिक, विद्वान, बड़े समझदार, ऊँचे पढ़े लिखे हुए देश निवासी अपने आपको मानव मात्र के भलाई की बातों का दंभ तो भरते है। दूसरी तरफ घातक से घातक हथियार, एटम, बम, रसायन बनाकर प्राणिमात्र को समाप्त करने की होड़ में लगे हैं।
7. हमारी युवा पीढ़ी से अपील है कि वह अपनी संस्कृति को समझें, जाने और उचित लगे तो उसके अनुरूप आचरण करे जिससे भारत पुनः विश्वगुरु बन सके। इसका श्रेय भी आप की ही पीढ़ी को प्राप्त होगा। धन्यवाद !

स्वाभिमान

प्रहलाद भगत अग्रवाल
4585, गली नत्थन सिंह, पहाड़ी धीरज,—दिल्ली

नाथ ट्रेडिंग दिल्ली में प्रदीप को कार्य करते अभी छः महीने ही बीते थे और उसने अपने पिताजी के ऊपर जो 20 हजार का कर्जा था उसमें से 9 हजार लाला बनवारी लाल (कानपुर वालों) का उतार दिया था। प्रदीप पहले अपने स्वर्गीय पिता लाला हुक्म चन्द और पत्नी आशा के साथ कानपुर ही रहता था। उसके पिताजी और लाला बनवारी लाल साझीदार थे। लाला बनवारी लाल ने फर्म में बेईमानी से घाटा दिखाकर उसके पिता पर 20 हजार का कर्जा दिखा दिया। इस सदमे से उनकी हार्ट फेल से मृत्यु हो गई। प्रदीप की नई-नई शादी हुई थी और अभी उसने M.Com पास कर नौकरी की तलाश शुरू की थी कि तभी बनवारी लाल ने प्रदीप को घर दबोचा और उसको अपने पिता पर चढ़े कर्ज को लौटाने का जोर डालने लगा। प्रदीप हमेशा कहता कि लाला मेरा काम लगते ही मैं आपका पैसा-पैसा चुकता कर दूंगा।

सौभाग्य से दो महीने बाद ही उसको दिल्ली में नाथ ट्रेनिंग क० में मनेजर की पोस्ट पर 2000 रु० महीने की नोकरी मिल गई तथा रहने को फ्लैट भी फ्री। लाला बनवारी लाल उससे हर महीने 1500/=रु० ऐठ लेते और 500 रु० में प्रदीप अपने घर के रहन-सहन का, खाने का और अपने पद की गरिमा के अनुसार स्तर बनाने में ना जाने क्या-क्या करता। दोपहर को दफ्तर का चपरासी खाना लेने घर आता, चार खानें वाला टिफीन उसके लिए जाता और वह उसको अपने केबिन में बैठ कर बड़े ढ़ंग से खाता। दफ्तर में पूरी शान से रहता कोई कमी नजर ना आती मलिष से उसने कभी कुछ नहीं मांगा काम खूब मन लगाकर और सुचारु रूप से करने के कारण वह मालिक के मन जरूर चढ़ गया था।

एक बार बनवारीलाल अपने भानजे प्रेमचन्द (मालिक) नाथ ट्रेनिंग कं० से मिलने उसके दफ्तर चले गए वहां उसको पता चला कि कानपुर बाला प्रदीप यहीं काम करता है उनके भानजे ने उसकी काफी बढ़ाई की। दोपहर को चपरासी खाना लेकर जब प्रदीप केबिन की तरफ जा रहा था तब बनवारी लाल ने उसका टिफीन देखकर भानजे से कहा भई दाल में कुछ काला है फिर लाला-बनवारी लाल ने प्रदीप के पिता पर कर्ज और बेइमानी का इल्जाम लगाकर कहा कि प्रदीप भी तुम्हें धोखा दे रहा है। 1500/ रु० तो यह मुझे दे देता है फिर ऐसा ऐशो आराम। प्रेमनाथ सुनकर भौचक्का रह गया और उसे अपने आप पर गिलानी हुई और प्रदीप के बारे में अनेको प्रश्न पर प्रश्न दिमाग को बजाने लगे। मामा से कहा मैं देखूँगा और टाल दिया।

अगले दिन दोपहर को लंच से कुछ समय पहले प्रदीप को अपने कमरे में किसी काम के बहाने से बुला लिया और उनकी इधर-उधर की बातें करते रहे। चपरासी प्रदीप का खाना लेकर आ गया और उसका भी। उसने प्रदीप से साथ खाने को कहा, प्रदीप नहीं माना पर मालिक प्रेमनाथ ने जबरदस्ती प्यार से अपने टिफीन के साथ उसका भी खोल लिया। खाना देखकर एक दम चौंक गया प्रेमनाथ की आँखों से आँसू तैरने लगे। चार खाने वाले टिफीन में से चार रुखी रोटियाँ, एक प्याज, थोड़ा सा नमक और थोड़ी मिर्च थी।

एकदम सारा किस्सा खुद ही समझ में आ गया उसको और वह यह भी जान गया कि जालिम मामा ने ही इसके बाप के साथ बेइमानी की होगी और कल जो प्रदीप पर उसने लांछन लगाये वह उसकी कुत्सित मनोदशा की तस्वीर थी। वह उठा उसने प्रदीप को गले से लगाया और माँफी मांगी कहा कि ला० बनवारी लाल मेरे मामा हैं मुझे कहते हुए शर्म आ रही है और प्रदीप तुम इतने स्वाभिमानी हो कि आज तक तुमने मुझ से अपनी परेशानी और इस हालत का जिक्र तक न किया। तुम्हारे चेहरे पर इसकी झलक तक नहीं देखी। खैर मामा के सारे बकाया पैसे कल उनके पास पहुंच जाएगे, पर एक शर्त है कि तुम मुझे कभी छोड़ोगे नहीं, कुछ मुझसे छिपाओगे नहीं, मुझे अपना भाई मानोगे।

शुभ कामनाओं सहित :

(स्थापित 1939 ई०)

फोन : 266206

वैश्य कोआपरेटिव कमर्शियल बैंक लि०

4421, नई सड़क, दिल्ली-110006

यह बैंक आपका अपना बैंक है

निम्न योजनाओं में रुपया जमा करायें और लाभ उठायें ।

डिपाजिट पर ब्याज की दरें निम्न प्रकार हैं :

(क) फिक्सड डिपाजिट

1 वर्ष के लिए	9 प्रतिशत वार्षिक
2 वर्ष के लिए	10 प्रतिशत ,,
3 वर्ष के लिए	11 प्रतिशत ,,
5 वर्ष के लिए	12 प्रतिशत ,,

(ख) सेविंग बैंक डिपाजिट 6 प्रतिशत ,,

ब्याज अर्ध वार्षिक दिया जाता है ।

(ग) विवाह योजना :—

प्रत्येक मास रुपया जमा कराया जाता है । 3 वर्ष या अधिक समय तक रुपया जमा कराने पर 11 प्रतिशत वार्षिक ब्याज दिया जाता है ।

(घ) 6 वर्ष के लिए जमा राशि दुगनी दी जाती है ।

दीवानचन्द बंसल
प्रधान

मनोहरलाल गुप्ता
मन्त्री

समाचारजगत

घनश्याम दास गुप्ता, भोपाल (म०प्र०)

नृत्य एवं मद्यपान पर प्रतिबन्ध लगाओ

विदिशा (म. प्र.)—श्री पी० डी० मंगल, एडवोकेट, मंत्री, अग्रवाल सेवा समिति, विदिशा ने सूचित किया है कि अग्रवाल पंचायत द्वारा बारात आदि अवसरों पर नृत्य एवं मद्यपान पर लगाने का प्रस्ताव पारित किया गया है। उन्होंने सभी अग्रवाल संस्थाओं से अपील की है कि इस समस्या पर विचार कर ऐसे अशोभनीय एवं अग्रवाल समाज की गरिमा के प्रतिकूल कार्यों पर अंकुश लगाने हेतु आवश्यक कार्यवाही करें।

स्व० हनुमान प्रसाद पोद्दार स्मारक समिति द्वारा श्री राधाकृष्ण साधना मन्दिर योजना का श्री गणेश

गोरखपुर (उ० प्र०)—'कल्याण' के प्रवर्तक एवं सम्पादक, गीता प्रेस के कर्णधार स्व. हनुमान प्रसाद पोद्दार की पावन स्मृति में उनकी तट स्थलीय, गीता वाटिका में उनकी गरिमा के अनुरूप एक भव्य 'साधना' मन्दिर निर्माणाधीन है। गर्भ गृह का शिलान्यास पूज्यनीया माँ के कर कमलों द्वारा हो चुका है। भाई जी के जीवन दर्शन के अनुरूप तथा उनके द्वारा बताई गई साधना-प्रणाली के अनुसार एक शाश्वत प्रकाश स्तम्भ के रूप में इस मन्दिर की परिकल्पना की गई है।

मन्दिर उत्तर भारत की शैली में संगमरमर से निर्मित होगा जिसमें गर्भ गृह, प्रदक्षिणापथ, अर्द्धमंडप, महा मंडप, तोरण द्वार आदि होंगे। क्षेत्रफल दस हजार वर्ग फुट तथा शिखर की ऊँचाई ध्वज सहित 79 फुट रहेगी। निर्माण कार्य में कम से कम 10 लाख व्यय का अनुमान है।

पूज्य भाई पोद्दार के प्रति श्रद्धा रखने वाले सभी धर्म प्रेमियों से सहयोग की अपील की गई है। यह कार्य हनुमान प्रसाद पोद्दार स्मारक समिति के तत्वाधान में हो रहा है। सहयोग चेक। मनीआर्डर। डाक द्वारा समिति के मंत्री के पास परे गीता वाटिका, गोरखपुर के पते पर भेजा जा सकता है।

अग्रवाल सभा के चुनाव

ग्वालियर—गत अप्रैल मास में अग्रवाल सभा मुरार द्वारा आयोजित साधारण सभा की बैठक में श्री भगवान दास अग्रवाल (रिहौली वाले) सवे सम्मति से अध्यक्ष चुने गये। उन्होंने अपनी कार्य समिति में सर्व श्री मोहन-लाल सराफ, भगवादास, मुंशी तथा श्रीलाल टांकोली वालों से उपाध्यक्ष, विनोद चन्द्र सराफ महामन्त्री, श्री श्याम गोयल, कैलाश अग्रवाल और प्रहलाद अग्रवाल को मन्त्री मनोनीत करते हुए 29 सदस्यीय कार्य कारिणी का गठन किया है।

सुभाष अग्रवाल ने विश्व बिलियर्ड चेम्पियन को पछाड़ा

बम्बई—तीन बार विश्व विलियर्ड का खिताब जीतने वाले माइकल फरेश कोलम्बो अंतराल के बाद सुभाष अग्रवाल के हाथों दादर क्लब में खेले गये ब्रहन विलियर्ड टूरनामेंट के फायनल मे 218 : 115, 226 : 145 से पराजित हो गये हैं।

म० प्र० अग्रवाल महा सभा के बढ़ते चरण

भोपाल—समाज के सभी घरों की एक जटिल समस्या को सरल बनाने हेतु म० प्र० अग्रवाल महा सभा के अध्यक्ष श्री विशम्वर दयाल अग्रवाल ने 'अग्रवाल वैवाहिक केन्द्र' की स्थापना कर महा सभा की प्रगति में चार चाँद लगा दिए हैं। महामन्त्री श्री डी० पी० गोयल ने सूचित किया है कि फार्म्स छप गए हैं और सभी सदस्यों को डाक से भेज दिए गए हैं। अग्र बंधु विस्तृत जानकारी हेतु श्री जी० डी० गुप्ता, प्रान्तीय संयोजक, अग्रवाल वैवाहिक केन्द्र, 23 वेनजीर क्वाटर्स, परी बाजार, भोपाल से सम्पर्क कर सकते हैं।

छिन्दवाडा में अग्रसेन भवन

छिन्दवाडा (म० प्र०)—गत अप्रेल मास में श्रीराम प्रसाद जी अग्रवाल ने भूमि पूजन कर लगभग 5 लाख की लागत से निर्मित होने वाले अग्रसेन भवन की आधार-शिला रखी। यह भवन अग्रवाल युवक मंडल द्वारा बन-वाया जा रहा है। अग्रवाल समाज के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल ने बताया है कि भवन में एक बड़ा हाल 7 कमरे

होंगे जो आधुनिक सभी सुविधाओं से सुसज्जित रहेंगे। स्थानीय अग्रवाल समाज से दो लाख रुपये और शेष राशि अन्यत्र स्रोतों से एकत्रित की जावेगी। भवन शादी विवाह बारात ठहराने आदि कार्यों में तो आवेगा ही साथ ही समाज की सांस्कृतिक गतिविधियों व खेल-कूद के लिए भी एक उपयुक्त स्थान बन जावेगा। भवन निर्माण एक वर्ष में पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है ; किन्तु समाज के सभी वर्गों; वृद्ध, नवयुवकों एवं महिलाओं में भारी उत्साह को देखते हुए ऐसा लगता है कि यह समय से पूर्व ही बनकर तैयार हो जावेगा।

श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर-प्राण प्रतिष्ठा

भोपाल—हाल में ही अरेरा कोलोनी 11 नम्बर बस स्टाप के पास सुरम्य पहाड़ी पर नव निर्मित श्री लक्ष्मी-नारायण मन्दिर में प्राण-प्रतिष्ठा समारोह सम्पन्न हुआ। प्रदेश के मुख्यमन्त्री, श्री अर्जुन सिंह ने इस अवसर पर कामना की कि यह पवित्र स्थल भक्ति और साधना का केन्द्र बने। समारोह में सिंचाई मन्त्री श्री दिग्विजय सिंह तथा महापौर डा० बिसरिया भी उपस्थित थे। श्री लालचन्द जी आग्रवाल तथा श्री वेदप्रकाश गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत किया।

महाराजा अग्रसेन पर फिल्म

नई दिल्ली—भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय ने आ० भा० अग्रवाल सम्मेलन के महामन्त्री श्री रामेश्वरदास गुप्त को 29 मार्च 1984 को पत्र भेजकर सूचित किया है कि सूचना प्रसारण मंत्रालय के फिल्म प्रभाग ने महाराजा अग्रसेन पर एक वृतचित्र तैयार करने का निर्णय लिया है।

उन्होंने पत्र में सम्मेलन से अनुरोध किया है कि महाराजा अग्रसेन से सम्बन्धित चित्र, उनके विषय में लिखित पुस्तक, परिपत्र, समाचार पत्र तथा अन्य सामग्री शीघ्र उपलब्ध कराई जाय ताकि वृतचित्र के लिए "स्क्रीप्ट" लिखा जा सके।

पत्र में यह भी अनुरोध किया गया है कि महाराजा अग्रसेन और उनके सिद्धांतों के सम्बन्ध में सही जानकारी दे सकने वाले व्यक्ति का नाम एवं पता सूचित किया जाय।

अनुकरणीय उदाहरण

नई दिल्ली—मद्रास की "श्री अग्रवाल सभा" ने एक प्रस्ताव के द्वारा बारात में नाचने पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। उनके इस प्रस्ताव का सभी अग्रवाल परिवार शत प्रतिशत पालन करते हैं और अपने लड़के के विवाह के निमन्त्रण पत्र के साथ एक "स्लिप" छाप कर लगा देते हैं।

हाल ही में श्री आशाराम पित्ती ने अपने सुपुत्र चि० नरेन्द्र के विवाह के निमन्त्रण पत्र के साथ निम्नलिखित 'स्लिप" छपवाकर लगाई थी।

"हाथ जोड़कर विनती है कि श्री अग्रवाल सभा मद्रास का सम्मान करते हुए हम दूल्हे के आगे नाचना अशोभनीय मानते हैं। कृपया आप भी सहयोग करें।"

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष एवं महामन्त्री ने अनेक अवसरों पर बारात में इस प्रकार के नाच भर्त्सना की है। उन्होंने देश के सभी अग्रवाल बंधुओं से अपील की है कि वे मद्रास की "श्री अग्रवाल सभा" के निर्णय को अपने क्षेत्रों में भी कार्यान्वित करें।

कर्नाटक प्रादेशिक सम्मेलन

दिल्ली—अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन के महामन्त्री श्री रामेश्वरदास गुप्त ने सूचित किया है कि कर्नाटक प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन आगामी 29, 30 दिसम्बर, 1984 को बंगलौर में होगा।

पंजाब में विस्फोटक स्थिति

नई दिल्ली—पंजाब अग्रवाल सभा के महामन्त्री श्री वेदप्रकाश गुप्त एवं लुधियाना अग्रवाल समाज के अध्यक्ष श्री बलदेव कुमार 1 मई 1984 को दिल्ली आकर अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष श्री बनारसी दास गुप्त तथा मन्त्री श्री रामेश्वर दास गुप्त से मिलकर पंजाब की विस्फोटक स्थिति से उन्हें परिचित कराया।

पंजाब के नेताओं ने कहा कि अब व्यापारी समाज ही आतंकवादियों का लक्ष्य बनता जा रहा है। आए दिन उनकी दुकानों एवं कारखानों पर हमले किए जा रहे हैं और निर्दोष व्यक्तियों को गोलियों से उड़ाया जा रहा है।

अग्रोहा का प्राचीन वैभव

डॉ० चमनलाल अग्रवाल चण्डीगढ़-160014

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। इसका आधार व्यक्ति-विशेष की विचारधारा नहीं अपितु अनेकों ऋषियों, मुनियों और चिन्तकों की विचारधारा और सामाजिक आचार-व्यवहार का सार है। मूलतः यही कारण है कि समय-समय पर विधर्मियों के अपिव आघातों को सहन करती हुई भी यह सदा नवीन रूप धारण करती रही है, मगर दुर्भाग्य है जब इसे अपने श्रेष्ठतम रूप को प्राप्त करने का अवसर उपलब्ध हुआ, तभी से यह गर्त्त में जाने लगी। अतः विद्वानों, मीमांसकों, विचारकों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं और राष्ट्रनायकों को संकीर्ण दृष्टिकोण का परित्याग कर गूढ़ तत्त्व के इस अवस्था-जन्य स्वरूप की ओर विशेष ध्यान देते हुए मनसा, वाचा और कर्मना इसके उत्थान में योग देना चाहिए। इस दिशा में अग्रवाल जाति का ही योग अपेक्षित नहीं है। यह उन सभी का परम कर्त्तव्य है जो भारतीय अन्न-जल का भोग कर पोषण एवं संवर्धन पाते हैं।

भारतीय इतिहास सैंकड़ों वर्षों का नहीं अपितु सहस्रों वर्षों का है। पौराणिकता के अनुसार तो यह करोड़ों नहीं अरबों वर्षों का सिद्ध होता है। वेद-काल से ब्राह्मण-आरण्यक और फिर उपनिषद्-गीता काल में भारतीय सभ्यता-संस्कृति अपने चरम को छू रही थी। आर्यावर्त की शस्य श्यामल धरा **सप्त सैन्धव** सम्पूर्ण एशिया में अपनी धवल कीर्तिपताका फहरा रही थी। दुर्भाग्य है भारत का गांधार और वैदिक विचारधारा में सूक्ष्मरूपेण बहने वाली सांस्कृतिक भिन्नता की धारा ने कौरवों-पाण्डवों में कुरुक्षेत्र का युद्ध करवा कर सम्पूर्ण विश्व की इस अग्रणी सभ्यता को न केवल पीछे धकेल दिया अपितु आगामी वर्षों के लिए विदेशियों और विधर्मियों द्वारा पदाक्रान्त होने के कपाट भी खोल दिए।

पौराणिक अनुश्रुति तथा सनातन विश्वास के अनुसार **अग्रोहा** के संस्थापक और अग्रवालों के आदि (पुरुष) राजा **महाराज अग्रसेन** का सम्बन्ध क्षत्रिय जाति से था जो तत्कालीन सप्त सैन्धव प्रदेश की (आज) विलुप्त नदी सरस्वती के दुआब (हरियाणा में) के शासक थे। 'अग्रसेन महाराज' का विस्तृत विवेचन तो उपलब्ध नहीं होता मगर उन्हें महाभारत काल से जोड़ा जोता है। पश्चिम सीमा-क्षेत्र में रेगिस्तान के प्रभावाधीन तथा समयान्तराल के कारण यह पवित्र स्थान विस्मृत-सा हो गया। इस शताब्दि के आरम्भ में कर्मठ स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने इस ओर ध्यान आकर्षित कर इस विभूति को वास्तविक स्थान दिलाने की दिशा में कदम रखा। यह उन्हीं सदृश्य महानुभावों के प्रयासों का फल है कि एक विस्तृत टीला आज पुनः प्राचीन नागरिक गौरव को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हो रहा है।

अग्रवालों का सम्बन्ध 'अग्रसेन महाराज' से है। इस सन्दर्भ में इस तथ्य का ध्यान रखा जाना चाहिए कि 'अग्रसेन महाराज' शासक (क्षत्रिय) थे। उस समय के समाज में मुख्यतः वैश्य का कार्य वाणिज्य-व्यापार तथा कृषि-कर्म था। दूसरे शब्दों में इस जाति में न केवल आत्म-रक्षा की भावना थी अपितु अपेक्षित बल भी था। वे आत्म और पद-पोषण का सामर्थ्य भी रखते थे। आज अग्रवाल जाति सामान्यतः अपने इस द्विविध रूप को भुला कर मात्र वैश्य-कर्म के अनुरूप ही समाज में अग्रसर हो रही है। सम्भवतः तभी उसे उचित स्थान तथा प्राप्य सम्मान नहीं मिल रहा। जो ब्रह्मा-पुत्र 'ब्राह्मण' और जाति के प्राण (पैर) रूप शूद्र आज हरिजन को प्राप्त हो रहा है।

हमें 'अग्रोहा' के विस्मृत गौरव को याद करते हुए केवल धन-एकत्र कर धर्मार्थ संस्थाएं स्थापित करके आत्म-

तोष नहीं करना चाहिए। अग्रोहा की आवाज है और 'महाराज अग्रसेन' का निर्देश है कि सुनियोजित नीति-निर्धारक समाज चेताओं का एक मंच तैयार कर अपने विस्मृत और विस्तृत साहित्य का अनुशीलन कर पत्र-पत्रिकाओं तथा स्वयं इस नव स्थापित मंच की सशक्त पत्रिका द्वारा अग्रवालों को अपने प्राचीन जातीय गुणों को तथा राष्ट्रीय हितों को समझने और तदनुरूप कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का भेद कर अपने प्राप्य की ओर बढ़ने की भावना का संस्कार करना चाहिए। मेरे विचार में यही 'अग्रोहा का प्राचीन गौरव' का वास्तविक लेखन, उसके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि और उसके सही विकास का ठोस आधार बनेगा। मात्र 'हम क्या थे क्या हो गए, क्या होंगे अभी' की बात न कहकर हमें पुरुषार्थ से काम लेना चाहिए। यह पुरुषार्थ क्या-क्या कौशल दिखा सकता है यह बात नीचे लिखे कविता के रूप में निबद्ध कर रहा हूँ :—

नियति, नियति कह बैठ जाते हो,
पुरुषार्थ का क्यों त्याग करते हो ?
पुरुषार्थ तो जीवन-मूल है,
जगती में जय-पराजय का मूल है ।।

पुरुषार्थ से जग बना था,
इसी से सेतु-बन्धन हुआ था।
द्रौपदी का उद्धार हुआ था,
दुर्योधन का संहार हुआ था ।।

पुरुषार्थ का खेल खेला था,
बुद्धि बल से भुज-बल मेला था।
नन्द का उन्मूलन किया था,
सिल्युकस को पराभूत किया था ।।

●

'खुशी रहे फूलो-फलो जियो वर्ष हजार

चि० मानसी पौत्री श्री जी० आर० मालेगांवकर सुपुत्री श्री अरुण मालेगांवकर अमरावती की दिनांक 26 जून 1984 को जन्मदिवस की प्रथम वर्षगांठ पर समस्त अग्रोहा तीर्थ परिवार की ओर से सुदीर्घ जीवन की मँगल कामनाएँ।

●

महाराज अग्रसेन अग्रवाल आश्रम ट्रस्ट के मन्त्री तथा समाजसेवी श्री जगदीशप्रसाद सर्राफ की पौत्री अ यु० रुचिका (सुपुत्री श्रीमती एवं श्री राजकुमार मित्तल) का जन्मोपलक्ष कार्यक्रम दिनांक 13-5-84 को बहुत ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। पधारे हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा बच्चे को आशीर्वाद दिया।

पता : 32-ए, कमला नगर, दिल्ली-7
दूरभाष : निवास-2520735, कार्यालय-2529950

अग्रोहा तीर्थ परिवार की ओर से नवजात शिशु को शुभ आशीर्वाद

अग्रवाल इतिहास पर एक नई दृष्टि

महाराजा अग्रसेन के शिलालेख व ताम्र-पत्र

चौधरी वृन्दावन कानूनगो श्री कृष्ण नगर, सफीदों रोड़, जीन्द-126102

मुधोल ताम्रपत्र (सारांश)

बीजापुर दक्षिण में ब्राह्मी लिपि में लिखा छठी शताब्दी के चौथे चरण का मिला है। इसमें उग वर्मन पुत्र श्री पृथ्वी वल्लभ का ग्राममाला व केटक बारहदेव मंदिर को उपहार स्वरूप देने का विवरण है।

नोट—उग वर्मन को ऐलन पुग वर्मन पढ़ता है वाजपाई अग्रवर्मन पढ़ता है।

(प्रोग्रैस रिपोर्ट आफ R. R. in Bombay)

गोवा ताम्रपत्र (सारांश)

गोवा (दक्षिण) में ब्रह्मी में लिखा ताम्रपत्र मिला है। जो कि माघ पूर्णिमा शक संवत 532 में महाराजा श्री पृथ्वी वल्लभ मंगलेश्वर की अनुमति से सत्यश्रय राजा ध्रुव इन्द्राग वर्मन अधिपति वैश्य मण्डल रेवती द्वीप ने ग्राम केरोलका व खेतर देश शिवाचार्य को शासन पत्र शंकर के पुत्र दुर्गनाथ द्वारा लिखा दिया गया।

नोट—माघ पूर्णिमा शक संवत् 532 तदनानुसार 5 जनवरी 610 है।

(JBBRAS-P. 348—67)

महाकूट शिलालेख

बादामी बीजापुर संस्कृत दक्षिणी कथन—बैसाखी पूर्णिमा सिद्धार्थ संवत 5.4 मंगलेश ने अपनी माता दुलभ देवी (बातपुरा) के बनाये मुकटेश्वर नाथ मंदिर की साध्यता को बढ़ाने के लिए दस ग्राम उपहार में दिये। राजा मंगलेश्वर के पुत्र ने उत्तरी भारत को विजय किया और भागीरथी नदी के तट पर विजय स्तम्भ स्थापित किया।

नोट—उपरोक्त लेख से प्रतीत होता है कि संवत 594 में मंगलेश्वर के पुत्र उग्रवर्मन ने उत्तरी भारत का कुछ भाग विजय किया और गंगा तट पर विजय स्तम्भ स्थापित किया क्योंकि मंगलेश्वर जीवितथे। इस कारण दस ग्राम दान किये। अतः मंगलेश्वर का नाम लिखा गया है।

वैश्य घटकों की सूची

(अ)

1. अग्रवाल
2. आगसूंड
3. आगवाल
4. अमेठी
5. अमेठी
6. आगरावाल
7. अग्रहारी
8. अढय
9. आमरवाल
10. आईरवाल
11. आगली

(इ)

12. इन्द्रपति

(उ)

13. उनिया
14. उदौरा
15. उनाया
16. उरवाल
17. उसमार
18. उमर
19. उजवला
20. उरवट
21. उगावाल

(ओ)

22. ओसवाल
23. ओजक
24. अयोध्यावासी
25. औचरवाल

(क)

26. कसुधन
27. कुसता
28. कोजटीवाल
29. कोटरावाल
30. कोमटी
31. कसौधा
32. कानसर
33. कलहार
34. कोलड़ी
35. काकड़ा
36. कुंवर वैश्य
37. केसरवानी
38. कान्ह
39. काण
40. कपाडिया
41. कुरुवार
42. कपोला
43. कमललिया
44. कमवणिया
45. कमाठी

(ख)

46. खण्डेलवाल
47. खोरटा
48. खेतरवाल
49. खेसो
50. खुरबरा
51. खेदरवाल

(ग)

52. गौरी
53. गुडिया
54. गौरतवाल
55. गन्धवणिक
56. गहोई
57. गुजरवाल
58. गौभुन
59. गाटे

(घ)

60. घोसीवाल

(च)

61. चित्तौड़

(ज)

62. जयसवाल
63. जाटी
64. जैलवाल
65. जाहरा
66. जोटन
67. जैमवार

(त)

68. तरोचिया

(ट)

69. टोलीवाल
70. टकोरटा
71. टोपरा
72. टीलोटा

(ड)

73. डगाली
74. डिडुरा

(ढ)

75. ढोलीवाल
76. ढुमर
77. ढीढु

(द)

78 देसवाल
79. दस्सा
80. दुरवरवाल
81. दरबनी
82. द्वादस श्रेणी

(ध)

83. धुनक

(प)

84. पुरवाल
85. पालीवाल
86. पटेल
87. पोरवाल
88. पटवा
89. पंचाल
90. पदभौरा
91. पुतली बंगाल
92. पटोलिया
93. पंचमवाल
94. पुष्करवाल

(ब)

95. बन्दरवाल
96. विष्णोई
97. बरुआ
98. बरोटी
99. बहोरा
100. वैद्य
101. बम्बरवाल
102. बदनौरा
103. बाहुहर
104. ब्राह्मणिया
105. बघेरवाल
106. बीरपाल
107. बन्धुमती

(भ)

108. भिरजा
109. भोजभिरावाल
110. भाटिया
111. भट्टमेवाड़ा
112. भम्मवाल
113. भीमवाल

(म)

114. मोहरी
115. महेश्वरी
116. मिन्टवाल
117. माड़
118. मारवाड़ी
119. मधुकर
120. मिसरी
121. मेवाड़ा
122. म्हौड़
123. म्हौड़ मण्डिलया
124. मजगौरा
125. मोहरवाल
126. महुलिया
127. महोरिया
128. मोध
129. मेडतावाल
130. महताब
131. महाजन

(र)

132. रैनियार
133. रस्तोगी
134. रोहतगी
135. राजवंशी
136. राणा बरादरी

(ल)

137. लोहिया
138. लाट
139. लाई
140. लडियाना
141. लौहाना
142. लाडे
143. लाटकमल

(व)

144. वर्णलाल

(स)

145. सिलवाल
146. सौजक
147. सौरड़ा
148. सोराडिया
149. सोनी
150. सरुरवाल
151. सोहरवाल
152. सोरया
153. सरालिया
154. सरकारियां
155. सोखी
156. सरभौरा
157. सौनिया
158. साध

(श्री)

159. श्रीमाल
160. श्री श्रीमाल

(न)

161. नागर
162. नागरोज
163. नरमन गौरा
164. नगौरा
165. नुकड़

(ह)

166. हरसरु
167. हुनरवाल
168. हरसौरा

(क्ष)

169. क्षेत्रपाल

इन घटकों में आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, मैसूर एवं केरल के वैश्य घटक शामिल नहीं हैं क्योंकि अभी तक हम इन प्रदेशों का दौरा नहीं कर सके। अतः शेष घटकों का विवरण हम अगले भाग में देंगे। ●

सम्मेलन अध्यक्ष ने विचार विमर्श के अनन्तर कहा कि इन घटनाओं से घबराना उचित नहीं है। जन साधारण में उत्साह बनाए रखने के लिए जन सम्पर्क किया जाय, प्रदेश के कार्यकर्त्ताओं की बैठक आयोजित कर परीक्षा की घड़ी में धैर्य बनाए रखने के लिए कहा जाए। जब तक स्थिति साधारण नहीं होती, तब तक सम्मेलन के सभी स्तरों पर चुनाव स्थगित रखे जाएं। उसी प्रकार लुधियाना में नये धर्मशाला के उद्घाटन एवं चौराहे पर महाराज अग्रसेन की मूर्ति का अनावरण कार्यक्रम भी स्थगित रखा जाए।

अग्रवाल परिवारों की जनगणना

वाराणसी—पूर्वी उत्तर-प्रदेश प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन के मंत्री श्री गोविन्द के दास ने संपूर्ण प्रदेश की सभी अग्रवाल संस्थाओं को एक परिपत्र भेजकर अनुरोध किया है कि वे अपने-अपने क्षेत्र के अग्रवाल परिवारों की जनगणना कर शीघ्र भेजें। पत्रक में यह भी सूचित करने को कहा गया है कि विभिन्न पेशों में अग्रवालों की संख्या कितनी है। जनगणना के फार्म भरते समय किन मुद्दों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक होगा, यह भी बताया गया है। इसी अवसर पर सम्मेलन के प्रतिज्ञा-पत्र भी भरवाने के लिए सूचित किया गया है।

इसके साथ एक और पत्र भेजकर जिला शाखाओं को सुझाया गया है कि समाज सेवा की दृष्टि से ठंडे पानी की मशीन द्वारा निःशुल्क पेय जल की व्यवस्था कराये।

गोयनका को डी० लिट्

दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में रीडर डा० कमलकिशोर गोयनका, रांची विश्वविद्यालय द्वारा अप्रैल 1984 में आयोजित डी० लिट् हिन्दी (कला संकाय) की परीक्षा में उत्तीर्ण घोषित किए गए हैं।

डा० गोयनका के शोध का विषय था "प्रेमचन्द का जीवन"।

रांची विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्रो० डा० बचनदेव कुमार के निर्देशन में डा० गोयनका ने अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया था। उल्लेखनीय है कि प्रेमचन्द के जीवन पर इतनी प्रमाणित जानकारी इसके पूर्व और किसी ने नहीं उपलब्ध कराई है। साथ ही इन्होंने प्रेमचन्द पर ही दिल्ली वि० वि० से पी० एच० डी० हासिल किया था। प्रेमचन्द पर पी० एच० डी० और डी० लिट् करने वाले देश में गोयनका पहले व्यक्ति हैं।

पटना में महाराज अग्रसेन पथ

बिहार प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष श्री उमाप्रसाद अग्रवाल ने सूचित किया है कि पटना एक्शन रेलवे स्टेशन से प्रधान डाकघर तक की सड़क का नाम बिहार सरकार ने महाराजा अग्रसेन पथ रखना स्वीकार कर लिया है।

स्मरण रहे कि इसकी मांग पिछले कई वर्षों से लगातार की जा रही थी।

सम्मेलन की ओर से यह सुझाव दिया गया है कि पटना जंक्शन स्टेशन के सामने या प्रधान डाकघर के सामने के चौराहे पर महाराजा अग्रसेन की मूर्ति की स्थापना की जाय।

अग्रसेन जयन्ती को अवकाश दिवस घोषित करने की मांग

सीकर जिला अग्रवाल समाज—सीकर जिला अग्रवाल समाज ने नीम का थाना में हुए अग्रवाल सम्मेलन में एक प्रस्ताव पारित कर राजस्थान सरकार से मांग की है कि समाजवाद का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करने वाले महाराजा श्री अग्रसेन का जयन्ती महोत्सव राजस्थान के सभी नगरों एवं कस्बों में उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। अतः राजस्थान की समाजवादी सरकार से निवेदन है कि श्री अग्रसेन जयन्ती को सार्वजनिक अवकाश घोषित करे।

नीम का थाना में अग्रवाल सम्मेलन

सीकर जिला अग्रवाल समाज के तत्वाधान में एक दिवसीय अग्रवाल सम्मेलन नीम का थाना (जिला सीकर) के विधायक श्री सोहनलाल मोदी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में सीकर, दाँता रामगढ़, दाँत, रींगस, श्री माधोपुर, खण्डेला, सिरोही, झाड़वा, गुहाल, अजीतगढ़ झाड़ली, टोड़ा, नीम का थाना आदि स्थानों के अनेक प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

अध्यक्ष द्वारा महाराजा श्री अग्रसेन के चित्र को माल्यार्पण के बाद स्वागताध्यक्ष श्री रामनिवास गुप्ता ने

स्वागत भाषण में स्त्री शिक्षा प्रसार एवं दहेज उन्मूलन के उपाय ढूंढ़ने पर बल दिया।

इस अवसर पर अग्रवाल समाज प्रन्यास सीकर के मंत्री श्री परशुराम अग्रवाल ने कहा कि "राष्ट्रोन्नति में अग्रवालों ने हर क्षेत्र में योगदान दिया, फिर भी हमारे समाज को निन्दा व हानि सहन करनी पड़ती है। इसका कारण संगठन का अभाव है।" भू० पू० सांसद एवं आ० भा० अग्रवाल समाज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री श्रीकिशन मोदी विवाहोत्सवों में होने वाले अपव्यय को समाप्त करने एवं सामूहिक विवाह कार्यक्रम का आयोजन करने की सलाह दी।

इस अवसर पर बिना दहेज विवाह करने वाले युवक श्री मुरारी लाल गुप्त, सी० ए० का अभिनन्दन भी किया गया।

मूर्तिप्रतिष्ठा समारोह

नरेला—हरनारायण चैरिटबेलट्रस्ट, नरेला के तत्वावधान में 5 मई को शोकायात्रा निकाली गई तथा 6 मई को प्रातः 11 बजे मूर्तिप्रतिष्ठा का कार्य श्रीकण्ठ शास्त्री जी द्वारा सम्पन्न हुआ। उद्घाटन समारोह सूचना एवं प्रसारण मन्त्री श्री एच० के० एल० भगत द्वारा किया गया। श्री बुलानन्द भारतीय व श्री बंशी लाल चौहान कार्यकारी पार्षद विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे थे। नरेले वाले अग्रवाल बधाई के पात्र हैं।

दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन

दिल्ली—दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन ने अगवाल संगठन को सबल बनाने तथा सम्मेलन द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों को गति प्रदान करने हेतु दिल्ली प्रदेश को पाँच क्षेत्रों में विभाजित किया है। प्रत्येक क्षेत्र में तदर्थ समितियों का गठन किया जा रहा है।

इसी संदर्भ में दक्षिण दिल्ली स्थित संस्थाओं की एक संयुक्त बैठक 20 मई. 1984 को सम्पन्न हुई, जिसमें अनेक विषयों पर विचार हुआ और उपस्थित प्रतिनिधियों ने संगठन को शक्तिशाली बनाने, परस्पर मेलजोल बढ़ाने से संबंधित उपयोगी विचार रखे। इस बैठक में दिल्ली प्रदेश के किसी उपयुक्त स्थान पर "महाराजा अग्रसेन जी की प्रतिमा स्थापित करने, महाराजा अग्रसेन मार्ग पर नाम-पट्ट लगवाने तथा प्रशासन द्वारा महाराजा अग्रसेन जयन्ती पर सार्वजनिक / वैकल्पिक छुट्टी घोषित कराने सम्बन्धित विषयों पर भी विचार किया गया।

बिना दहेज के सामूहिक विवाह

इलाहाबाद—यहाँ से निकट जसरा में 13 एवं 14 अप्रैल को आयोजित सामूहिक विवाह महायज्ञ में बिना दहेज की 101 शादियां हुईं। लगभग एक लाख वर्ग फुट क्षेत्रफल में आकर्षक ढंग से शामियाना लगा कर यह शादियाँ की गईं। सम्मेलन का आयोजन केसर वानी वैश्य समुदाय की ओर से किया गया था। उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के विभिन्न जिलों से आये हुए युवकों एवं युवतियों ने बिना दहेज के शादियाँ कीं।

समारोह के प्रारम्भ में हवन तथा ध्वजारोहण का कार्यक्रम जसरा प्रखंड प्रमुख तथा स्वागताध्यक्ष श्री महादेव प्रकाश गुप्त ने किया। उपराह्न सम्मेलन में इनकी शोभा यात्रा में शामिल लोग वैवाहिक कुरीतियों से संबंधित पोस्टर तथा तखतियाँ लिए हुए थे तथा दहेज विरोधी नारे लगा रहे थे। शोभा यात्रा में महिलाएं भी बड़ी संख्या में थीं।

अग्रवाल समाज सेवा संघ के तत्त्वाधान में अगला सामूहिक विवाह महायज्ञ प्रयागराज में 12, 13, 14 अक्तूबर 1984 को आयोजित किया गया है। इस सामूहिक विवाह में अग्रवाल समाज के अलावा समस्त हिन्दू जाति के लोग भी भाग ले सकेंगे। सभी लोगों के आवास तथा भोजन की व्यवस्था समाज की ओर से होगी। सेवा संघ की ओर से सभी आवश्यक सामग्री एवं सुविधाएं निःशुल्क प्रदान की जाएगी। सभी विवाह हिन्दू धर्म के वैदिक नियमों के अनुसार होंगे।

वाराणसी में राष्ट्र रत्न बाबू शिवप्रसाद गुप्त की प्रतिमा का महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा अनावरण

वाराणसी— 24 मई को बाबू शिवप्रसाद गुप्त अस्पताल के प्रांगण में बाबू जी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में आयोजित विशाल समारोह में तालियों की गड़गड़ाहट और बाबू शिवप्रसाद गुप्त के जयकारों के साथ

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी ने बाबू शिवप्रसाद गुप्त की प्रतिमा का अनावरण किया।

बाबू शिवप्रसाद गुप्त जन्मशताब्दी एवं प्रतिमा अनावरण समारोह, श्री काशी अग्रवाल समाज के तत्वाधान में, आयोजित किया गया था। राष्ट्रपति जी के साथ मंच पर काशी अग्रवाल समाज के अध्यक्ष श्री बृजपालदास जी, दैनिक आज के संपादक श्री शार्दूल विक्रम गुप्त, कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष पं० कमलापति त्रिपाठी, राज्य सभा के उपाध्यक्ष श्री श्याम लाल यादव, उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री लोकपति त्रिपाठी, बिहार के मुख्यमन्त्री श्री चन्द्रशेखर सिंह आदि विराजमान थे।

श्री काशी अग्रवाल समाज की ओर से राष्ट्रपति जी को इस अवसर पर एक स्मरण चिन्ह भी भेंट किया गया। इस अवसर पर प्रकाशित राष्ट्ररत्न शिवप्रसाद गुप्त शताब्दी वर्ष एवं मूर्ति अनावरण समारोह नामक स्मारिका का राष्ट्रपति जी ने विमोचन भी किया। समारोह के संयोजक श्री श्रीकृष्णदास (मूनजी) ने इस अवसर पर प्राप्त हुए सन्देश पढ़ कर सुनाए।

काशी अग्रवाल समाज के महामन्त्री श्री श्रीकृष्णदास जी ने श्री श्री शिवप्रसाद गुप्त की स्मृति और सम्मान में डाक टिकट जारी करने का अनुरोध किया। श्री शार्दूल विक्रम गुप्त ने आभार व्यक्त किया।

महिलाओं द्वारा पुरुषों को चुनौती

काला पीपल (म० प्र०)—भोपाल-उज्जैन के बीच म० प्र० के शाजापुर जिले में कालापीपल एक अच्छी अनाज मण्डी है। यहां अग्रवाल वैश्य समाज के लगभग 30 परिवार हैं। 1—2 को छोड़कर शेष सभी व्यापारी भाई हैं जिनका प्रमुख व्यवसाय अनाज का है। हमारे प्रतिनिधि श्री घनश्यामदास गुप्ता ने हाल ही में 2-3 घंटे वहाँ रुक कर पं० विद्याधर शर्मा के सहयोग से मै० बिहारीलाल हरिनारायण, श्रीकृष्ण गोपालदास, घनश्याम दास जी गर्ग, फर्म छोटेलाल विरधी चंद, श्री राजेन्द्र कुमार गर्ग व फर्म रामप्रसाद वंशीधर आदि से संपर्क स्थापित किया। यहाँ के भाइयों में समाज के प्रति उत्साह तो है किन्तु जिले के बाहर की सामाजिक गतिविधियों से वे अनभिज्ञ पाए गए हैं। यहां एक धर्मशाला व एक देवी जी के सुन्दर मंदिर का निर्माण हो चुका है। एक और धर्मशाला निर्माणाधीन है।

अग्रवाल परमार्थिक ट्रस्ट—वर्तमान धर्मशाला श्री विरदी चन्द गर्ग की धर्मपत्नी श्रीमती गुलाबबाई द्वारा वर्ष 1975 के आस-पास प्रदत्त 21001 - रुपया के दान से "बिरदी चंद भोगीलाल अग्रवाल परमार्थिक ट्रस्ट" की स्थापना की गई है। धर्मशाला 175×40 के प्लाट पर निर्मित है। प्रारम्भ दान के पश्चात् लगभग 20,000 रु० और परिवार के समाज प्रेमी बन्धुओं ने एकत्रित कर इसमें एक बड़ा हाल, चार कमरे, स्नान घर, शौचालय आदि निर्माण करा दिए हैं। इससे कस्बे की एक बड़ी कमी पूरी हो गई है। 24 घंटे बिजली पानी की व्यवस्था है। ट्रस्ट द्वारा आगे चलकर इसमें एक शिशु मन्दिर खोलने की योजना विचाराधीन है। हमारे प्रतिनिधि ने सुझाव दिया है कि धर्मशाला में शादी-विवाह के अवसरों पर काम में आने वाले बर्तन, फर्श आदि सामान की व्यवस्था भी करलें तो अच्छा रहेगा।

पार्वतीबाई अग्रवाल धर्मशाला—स्व० श्री जुम्मालाल जी अग्रवाल सीहोर वाले की धर्मपत्नी श्रीमती पार्वतीबाई सीहोर ने सन् 1965 के आस-पास अपने कालापीपल स्थित 55×85 भूखण्ड पर निर्मित पुराने मकान को जिसमें पहले पुलिस थाना था, अपने पति की स्मृति में, स्थानीय अग्रवाल समाज को दान कर दिया था। कालापीपल के सभी अग्रवाल परिवार प्रति वर्ष कुछ रुपया इसे सामाजिक धर्मशाला में परिवर्तित करने हेतु एकत्रित करते रहे और 35-40 हजार लागत से इस पर 2 बड़े हाल, तीन-चार कमरे, स्थानागार, शौचालय आदि का निर्माण हो गया है। छत पड़ना शेष है। कंपाउंड वाल निर्मित हो चुकी है। धनाभाव के कारण निर्माण कार्य अधूरा पड़ा है। इसे भी पूर्ण करने के प्रयास चल रहे हैं।

ग्रामीण अंचल तक की हमारी महिलायें सामाजिक कार्यों में इस प्रकार आगे आकर पुरुषों को चुनौती दे रही हैं।

समता एवं सहायता की ओर अग्रसर हों

रोशन लाल दीवान
प्रधान-अग्रवाल नवयुवक मण्डल, जींद

कोई भी तीर्थ स्थान केवल मन्दिर आदि बनाने से नहीं बनता। स्थान को तीर्थ बनाने के लिए संतजन महा-पुरुष या स्थान में गुणों का होना आवश्यक है। जैसे कि अमृत सर में गुरु रामदास ने धर्म प्रचार किया। छुआछूत जो कि उस समय की सबसे बड़ी बुराई थी को समाप्त करने के लिए गुरु का लंगर चलाया। ताकि ऊंच-नीच का भेदभाव समाप्त हो सके। तभी अमृतसर को तीर्थ स्थल माना जाने लगा है। अग्रोहा को अमृतसर जैसी प्रतिष्ठा केवल महाराजा अग्रसेन या अन्य किसी के मंदिर बनाने से प्राप्त नहीं होगी। जब तक कि अग्रोहा से समाज के उत्थान के लिए कार्य न किया जाये। इसके लिए अग्रवाल नेताओं को अपनी मान, बड़ाई और राज-नैतिक इच्छाएं छोड़कर केवल एक ध्येय समाज उत्थान' का रखना होगा। यहां तक कि अपने परिवार का ध्यान छोड़कर समस्त समाज को परिवार मानने की धारणा करनी होगी। महाराजा अग्रसेन ने एक रुपया तथा एक ईंट सबको बराबर करने के लिए चलाया था। अग्रसेन समाज में 90% भाई सम्पन्न हैं और 10% भाई निर्धन हैं। इनमें अनाथ बच्चे, बे सहारा विधवायें और कई ऐसे व्यक्ति भी हैं जो धनाभाव के कारण अपनी लड़कियों के हाथ भी पीले नहीं कर सकते। कर तो सकते हैं मगर उन्हें प्रेरणा नहीं मिली। समाज के नेता तीर्थ बनाने के लिए मन्दिरों और तालाबों की ओर तो ध्यान देने लगे हैं परन्तु अपने वास्तविक कर्त्तव्य से विमुख हैं। ध्यान दें भी कैसे ? मन तो मान प्रतिष्ठा और राजनैतिक पदों की ओर है। इस ओर ध्यान कैसे आये ? समाज के सम्पन्न भाई अपने लड़के लड़कियों की शादी में लाखों रुपया खर्च करते हैं यदि उस खर्च का 10वां अंश भी गरीब अग्रवाल भाई की लड़कियों को अपनी मानकर या अनाथ बच्चों और बेसहारा विधवाओं को अपनी जानकर उनकी सहायता में लगायें तो उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा। और उनका उत्थान हो सकता है और महाराजा अग्रसेन के कार्य **'सबको बराबर करना'** को फिर से चालू किया जा सकता है। यह सत्य है कि कोई भी अग्रवाल भाई अन्य जातियों की तरह किसी के सामने हाथ नहीं फैलायेगा। मगर वे न मांगे हमारा तो फर्ज है कि हम उनका ध्यान रखें और अपने भाईयों को ऊपर उठाने का कार्य करें। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए अखिल भारतीय अग्रवाल सभा द्वारा धन एकत्र करके एक कोष बनाया जाये। फिर नगर-नगर में बनी अग्रवाल सभा द्वारा अपने नगर या गांव के जरूरत मंद भाइयों की सूची तैयार करके अखिल भारतीय अग्रवाल सभा के पास पहुंचाई जाए और फिर इस कोष से उन गरीब अग्रवाल भाइयों की सहायता की जाए।

बैंक की सरकारी नीति को अपनाते हुए अग्रवाल भाइयों की ऋण से या अन्य किसी भी तरीके से सहायता की जाये। इस कार्य के पूरा होने से समाज में समानता आयेगी। इस तरह से महाराजा अग्रसेन का सबको बराबर करने का कार्य भी पूरा हो जायेगा। तभी हम उनकी सन्तान कहलाने का हक रख सकेंगे।

धारावाहिक सामाजिक कहानी····· (नौवीं किश्त)

"जलती-दुल्हन"

—मोहन गौड
दादरी गाजियाबाद

राधा को किशन की बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था। पलटकर बोली—"अ···ऽ···आ··· आप···आप सच कह रहे हो भैया।"

किशन ने हाँ में सिर हिलाया—"भला में अपनी बहन से झूठ बोलूंगा।"

खुश्क होठों पर जीभ फेरती हुई बोली राधा —"मेरा कुसूर क्या था भैया।"

'जी लेकिन किस जगह!' दूसरी ओर से जबाब मिला।

'रामपुर रोड़ पर बने कृपा-भवन पर।' जवाब में बोले आई. जी. साहब।

वायर लैस को बन्द करके धीरज तीनों बाप बेटों की ओर हिकारत भरी नजरों से देखकर बोले—'आप लोगों ने हमारे खानदान ही नहीं अपितु सारे समाज के माथे पर कालिख पोत डाली।···कितने कमीने हो तुम लोग। मैंने अपना सिर कभी नहीं झुकने दिया। ···धोखा दिया तुमने मेरे स्वाभिमान को।·· धोखा दिया तुमने मेरे विश्वास को।···आज तुम्हारे कारनामों की बदौलत ··मुझे नीचा देखना पड़ रहा है।···कैसे जाऊँ आज में दुनियाँ वालों के सामने।···क्या जवाब दूँगा, मैं अपने डिपार्टमेन्ट को।

मनोज की आंखों में आँसू थे। लजाती सी नजरें धीरज की ओर उठाकर फफकते हुये बोला—"भैया! ···खानदान को बचाओ भैया अपने खानदान को बचाओ भैया! ···खानदान को बचाओ।"

भोले-भाले चेहरे को व्याकुल देख धीरज कराह उठा। अपने आपको संभालते हुए रुख बदल कर चीखा —'आप सभी जीप में बैठो। मुझे क्या करना है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ।'

तभी राधा की तीखी चीख उभरी—'ठहरो।···अ ···आप···आप अपने कानून का गलत इस्तेमाल नहीं कर सकते।'

धीरज चौकन्ने अन्दाज में उसकी तरफ देखकर अवाक्-सा रह गया।

राधा के चेहरे का रंग बदल गया। बहसी अन्दाज में तड़क कर बोली—'आपका मुज्जिम में हूँ।···सजा मुझे मिलनी चाहिये।···मैं इस खानदान को अपने जीते जी···मिटने नहीं दूंगी।'

धीरज को समझते देर न लगी। तुरन्त राधा की ओर मुड़े और जोरदार झांपड़ राधा के गाल पर जमाते हुये दहाड़े—"शर्म करो राधा शर्म। तुम जैसी पढ़ी लिखी लड़की···और इन हवसी भेड़ियों के साथ।"

राधा गाल सहलाती रह गई। भीगी पलकें ऊपर करती हुई दबी जबान से बोली—'मुझे कमजोर जानकर आपने···आपने एक औरत पर बिना कुसूर हाथ उठाया है भैया।'

राधा की ना समझी पर झुंझलाहट में एड़ी रगड़ कर दहाड़ा धीरज—'राधा!···तुम्हें मैं कैसे समझाऊँ।'

वार्तालाप के ताने बाने को तोड़ धीरज ने रुख बदला—'मेरी एक शर्त है।··अगर आप लोग उसे मान लोगे तो···।"

"क्या शर्त है आपकी।" बीच में मृदु वाणी उभरी कमला की।

"आप सभी यह कसम खाओ कि हम अपने जीवन डैडी से कोई रिश्ता नहीं रखेंगे।' दृढ़तापूर्ण कहा धीरज ने।

सभी ने अपनी गर्दन झुकाकर धीरज के प्रस्ताव पर स्वीकृति दी। धीरज ने कृपाराम की ओर घृणित दृष्टि डालते हुये प्रश्न किया—'आप हमारे फैसले से खुश हो डैडी।'

कृपा राम की अचल दृष्टि शून्य में स्थिर थी। सभी बेटे बहू उसकी ओर घृणा से देख रहे थे।

धीरज के आदेश पर सभी अपने घर चलने के लिए तैयार हो गये।

अपनी जीप में डैडी कृपा राम को लेकर कृपा भवन की ओर रवाना हो गये।

आज कृपा भवन के चारों ओर पुलिस फोर्स मंडरा रही थी। अपने आफीसर की अगवानी के लिए सभी ने सैल्यूट मारा।

तभी एस० पी० किशन ने आदाब बजाया—'मुझे क्या हुक्म है सर।'

धीरज ने उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए मुस्कुराकर कहा—'आप अब जल्दी में कुछ मत करो।···जरा उधर चलो, कमरे में।'

एक सोफे पर निढाल से बैठते हुए धीरज ने सरसरी नजर चारों ओर घुमाई। गहरी श्वांस छोड़ते हुये बोले 'तुम अपनी कार्यवाही शुरू करो।'

"मैं बजाय राधा के·····कृपाराम जी को अरेस्ट करूंगा।" दृढ़तापूर्ण कहा किशन लाल ने।

गम्भीरता से बोले धीरज—"यह कदम ईर्ष्यापूर्ण है।"

"ईर्ष्या !··· कैसी ईर्ष्या।" हकलाया किशन।

"चोरी राधा ने की है।····· रिपोर्ट भी उसी के नाम से हुई है·····फिर सजा किसी और को मिले, यह कैसे हो सकता है।" जबाब तलब किया धीरज ने।

किशन विचारणीय मुद्रा में नीची गर्दन करके बैठ गया।

धीरज ने उसकी तरफ देखा, और फिर उठ खड़ा हुआ। किशन भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।

धीरज रुककर आहिस्ता से बुदबुदाया—"तुम्हारी नजर में राधा बेकुसूर है?"

उसी लहजे में किशन ने जवाब दिया—"न···जी ! बिल्कुल बेकुसूर।"

तड़क कर बोले आई० जी० साहब—"और कानून की नजर में।"

किशन विकट संकट में पड़ गया। अवाक् चेहरा धीरज की ओर उठाकर ताकता रह गया।

धीरज बाबू फिर धीमे स्वर में बोले—"मैं तुम्हारे जजबात की कद्र करता हूँ, मिस्टर किशन लाल।····· लेकिन यह कभी नही होने दूंगा, कि तुम कानून से खिलवाड़ करो।"

विस्मय भरे भाव से पूछा किशन ने—"फिर हमें क्या करना होगा।"

"राधा को गिरफ्तार।" दृढ़ता से कहा धीरज ने।

किशन सकते में पड़ गया। काफी सोच-विचार के उपरान्त जिज्ञासावश बोला—"क्या राधा को इस बदनामी से नहीं बचाया जा सकता।"

धीरज ने जवाब दिया—"हां, उसे बचाया जा सकता है।"

"कैसे !" तत्परता दिखाई किशन ने।

"इस केस को यहीं दबा कर।" दो टूक जवाब दिया धीरज ने।

किशन तिलमिला उठा—"यह कानून की हिफाजत नहीं होगी।"

"तो फिर आप अपने आपको संभालिए मिस्टर किशन लाल !·· और राधा को गिरफ्तार कीजिए।" समझाया धीरज ने।

किशन ने अपना भला-बुरा सोचकर गम्भीरता से कहा—"आप मेरे आफीसर हैं, दया मुझे कोई सही रास्ता नही बता सकते।"

धीरज की कठोर दृष्टि उसके मस्तिष्क पर जम गई—"आप राधा को तुरन्त गिरफ्तार कर लें।"

× × ×

आज राधा को जेल गए तीन वर्ष हो गए। इस बीच एक बार भी उसका पति राजा उससे मिलने नहीं आया। किशन लाल राधा से रोजाना मिलते रहे।

राधा ने अपने पति के बारे में कुछ जानना चाहा—"भैया !·····क्या कभी वो नहीं आ सकते।·····कहाँ रहते हैं वो।"

किशन वे लापरवाही से कहा—"वह लालची बाप का लालची बेटा है बहन।·····उसने दूसरी शादी कर ली है।"

राधा का दिल कांप उठा। आंखों के सामने अंधेरा

छा गया। एक क्षण के लिए वह अचेत हो गई।

किशन ने उसे पानी के छींटे मारते हुये झिझोरा। राधा ने बुझी-बुझी आंखें खोलीं।

किशन को अपलक देखती हुई बोली—"वह रहते कहाँ हैं।"

"अपने डैडी के साथ।" कहा किशन ने।

राधा को किशन की बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था। पलट कर बोली—"अ···ऽ आ·· आप · आप सच कह रहे हो भैया।"

किशन ने हाँ में सिर हिलाया—'भला मैं अपनी बहन से झूठ बोलूंगा।"

खुश्क होंठों पर जीभ फेरती हुई बोली राधा—"मेरा कुसूर क्या था भैया।"

"यही, कि तुम नारी हो! ···तुम्हारे आंचल पर चोरी का दाग जो लग गया है।" जवाब में बोला किशन।

राधा सिसकियाँ भरकर रोने लगी। किशन ढाढस बंधाता हुआ बोला—"आपका स्वास्थ्य पहले ही काफी खराब है। जरा हिम्मत से काम लो बहन।"

राधा अपनी साड़ी के पल्लू से आंसू पोछती हुई निढाल हो बैठ गई। किशन ने उसे सहारा देते हुए उठाया—"चलो! ·····आज तुम्हें रिहा कर दिया गया है।"

कान्ती विहीन चेहरा ऊपर उठाकर कहा राधा ने—"अब मैं जाऊंगी कहाँ भैया।·····अब तो मुझे जीने का अधिकार ही नहीं।"

किशन ने ढाढस बंधाई—"आपको अपने बच्चे के लिए जीना है बहन।"

तभी छोटे बच्चे ने दौड़कर उसकी साड़ी थाम ली—"मम्मी।"

राधा भाव विह्वल हो अपने बेटे को सीने से लगाकर प्यार-दुलार करने लगी। उसे गोद में लेकर वह जेल से बाहर आई, तो सामने खड़े मनोज और अनीता को देखकर हल्की मुस्कुराहट में बोली—"अरे, आप!·· आप लोग भी आये हैं।"

अनीता उसके नजदीक आई। आते ही दोनों हाथों को जोड़कर नमस्कार करके गोली—"कैसी हो दीदी।"

एक मुद्दत के बाद चांदी की खनखनाहट जैसे स्वर राधा के कानों में पड़े, तो मन-मुग्ध हो उठी।

कुछ देर की गुफ्तगू के बाद चारों कार में सवार हो गए। अब कार फर्राटे से वीरान सड़क पर दौड़ रही थी।

कार को रामपुर रोड़ पर चलते देख राधा ने आश्चर्य से पूछा—"आप लोग कहाँ जा रहे हैं।"

मनोज ने हल्की मुस्कान में जवाब दिया—'कृपा भवन!·····अपने डैडी के पास।"

राधा झल्ला उठी—"लेकिन क्यों!····· अब वहाँ जाने से क्या फायदा। वहाँ मेरा है क्या।"

इस पर जबाब दिया किशन ने—"दहेज की वापसी।"

राधा अटपटा उठी—"दहेज!·····कैसा दहेज।"

किशन चीख पड़ा—"जिसके लिए तुम्हें चोरी करनी पड़ी दीदी!"

इसी बातचीत के दौर में कार कृपा-भवन के सामने थी। सभी अपनी सीट छोड़ चुके थे।

गाड़ी के रुकते ही आई॰ जी॰ धीरज ने स्वागत किया। एक बड़े हाल में सभी ने अपने-अपने स्थान ग्रहण किए।

आज कृपाराम को चार बेटों ने घेर रखा था। जब कृपाराम ने अपने सामने सभी को गुमसुम बैठे देखा, तो तड़ककर बोले—"क्यों आये हो तुम सब।"

शुरुआत की धीरज ने—"मुझे अपनी शादी में आये दहेज का हिसाब चाहिए।"

कृपाराम की आंखों में खून उतर आया। बौखलाकर बोला—'कैसा हिसाब।"

धीरज ने उसी अन्दाज में जवाब दिया—"पचास हजार!····· मय ब्याज।"

तभी उनका वह लड़का, जो आज एक मजिस्ट्रेट था। उभर कर बोला—"मेरी शादी का एक लाख!"

राधा ने भी सुर में सुर मिलाया—"दो लाख मुझे पहले दे दो, क्योंकि मेरा अब आपसे कोई रिश्ता भी नहीं है।"

कृपाराम ने निकलने की लाख कोशिशें कीं, मगर उसकी एक न चली।

(क्रमशः···)

आधुनिक युग में नारी

सुशीला अग्रवाल

कहते हैं महाप्रतापी रावण ने स्त्री का अपमान किया था, इसके बदले में उसका ही नही सम्पूर्ण लंका का सर्व नाश हुआ था। रावण ने तो सिर्फ अपमान ही किया जिससे उसकी ऐसी दशा हुई। इस बात के मेरे हृदय में बार-बार विचार उठते हैं कि अग्रवाल समाज का क्या होगा जो कि स्त्री समाज के साथ अन्याय कर रहा है।

अग्रवाल समाज, जिसमें हम पैदा हुए, हमें गर्व होना चाहिए, सभी समाजों में हमारा समाज अग्रणीय माना जाता था, किन्तु आज वह बात नहीं, आज सभी समाज अपनी उन्नति में तत्पर हैं किन्तु अग्रवाल समाज इससे परे है। इसका मूलत: कारण है हमारे समाज द्वारा अपनाया गया मार्ग जो कि लज्जास्पद होने के साथ ही घृणित भी है, और वह मार्ग है स्त्री वर्ग की उपेक्षा, उसके प्रति अन्याय था उसके हृदयों पर कुठाराघात जो उसके लिए असह्य होते हुए भी सहन करना पड़ता है।

स्त्री जाति को पुराणों में सबसे बड़ा रूप दिया गया है, उसे माता कहकर विभूषित किया गया है और यहाँ तक कि "जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" माता पृथ्वी से भी बड़ी कह कर सम्मानित किया गया है किन्तु आज उसी स्त्री वर्ग के प्रति हमारे समाज ने कितना पक्षपात पूर्ण मार्ग अपनाया है कि उसे नोटों (कगज के टुकड़ों) से भी तुच्छ समझा जाता है। इन्ही टुकड़ों के अभाव में बहुत से गरीब माता-पिता को अपनी फूल सी सुकुमारियों को किसी पचास साल के वृद्ध, अयोग्य या अन्य वर्ग के वर को देना पड़ता है। जिस समय यह कार्य होता होगा वह क्षण कितना दुःख पूर्ण होने के साथ ही लज्जास्पद भी होता होगा। उस पिता को भी लज्जा का अनुभव होता है किन्तु वह भी क्या करें क्योंकि उसके पास आज की प्रचलित प्रथा के अनुसार टीके में देने के लिए नोटों की गड्डियाँ और आज के नवयुवकों की फैशने बल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्कूटर, टेलीविजन, वीडियो, कार और गोदरेज की अलमारियाँ नहीं हैं। और यह चीजें आये भी कहाँ से जबकि आज के युग में एक गृहस्थी को चलाना भी एक समस्या बना हुआ है। इसमें माता-पिता का कोई दोष नहीं। यह दोष सिर्फ समाज में फैली प्रवृत्तियों का है। यह हमारे समाज की प्रगति का भ्रष्ट और क्रूरता पूर्ण नमूना है।

स्त्री जाति के प्रति ऐसा अपमान जनक और क्रूरता पूर्ण मार्ग समाज को त्यागना आवश्क है। इसी में समाज का कल्याण है। इसके लिए समाज को एक छत्र होकर सख्त कदम उठाना अनिवार्य होगा। ●

शुभ कामनाओं सहित:

दूरभाष : 75460

ओडियन सिनेमा
ईश्वरपुरी, मेरठ (उ०प्र०)

दूरभाष : 8745

जी.एस. आयरन इन्डस्ट्रीयल वर्क्स
टार सरिया व टार राउन्डस के निर्माता
भोला रोड, मेरठ (उ०प्र०)

प्रेषक : सरिश चन्द्र गुप्ता

दूरभाष : निवास 8370

व्यक्ति-परिचय

दिल्ली निवासी श्री सुरेन्द्र प्रकाश आर्य का जन्म 10 जून सन् 1960 को समाजसेवा, मृदुभाषी लाला रामनिवास गुप्ता के यहाँ हुआ। बचपन से ही आप कुशाग्रबुद्धि वाले व्यक्ति रहे है। सन् 1968 में आप अपने ताऊ जी जो महावर वैश्य समाज के अखिल भारतीय स्तर के महामंत्री हैं, के यहाँ गोद चले गये। बी० काँम की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त आप अपने पैत्रक व्यवसाय में संलग्न हो गये। आपका चांदनी चौक में रेडीमेड गारमेन्ट का व्यापार है। इसके अलावा आप कई संस्थाओं में सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में समाज सेवा का कार्य कर रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधी सभा दिल्ली — सदस्य
आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली — प्रतिष्ठित सदस्य
महावर युवा संघ — ,, ,,
महावर ग्रुप हाउसिंग सोसायटी — कार्यकारिणी ,,
एवं भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख कार्यकर्त्ता

पता :—मैं महावर ब्रादर्स
4794-95 चांदनी चौक (नजदीक बिल्ली मारान) दिल्ली—110006
दूरभाष : दुकान 235481 निवास 267409

शास्त्रीनगर निवासी श्री रामकिशन जिन्दल का जन्म 15 नवम्बर 1948 को सोनिपत जिला के ग्राँम भैंसवाल कला में ला० मनोहर लाल जिन्दल के यहाँ हुआ। श्री जिन्दल जी धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में विशेष रुची लेते हैं। आप एक भूतपूर्व सैनिक हैं अतः अनुशासन आपके जीवन का एक अंग है। अग्रवाल सभा शास्त्री नगर एवं ईस्ट शास्त्री नगर प्लाट होल्डर वैलफेयर एसोशियेसन के माध्यम से समाज सेवा में साक्रिय हैं।

पता : ए-687 शास्त्री नगर, दिल्ली—110052
दूरभाष : 527045 पी० पी०

मृदुभाषी, मिलनसार, सौम्य स्वभाव श्री सुरेश चन्द बन्सल का का जन्म 23 जून 1945 को लाला त्रिलोक चन्द बन्सल सीताराम बाजार, दिल्ली के यहाँ हुआ। आप एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं तथा धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में सहायक रहते हैं। आप बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल सभा तथा शाहदरा मैन्युफैक्चरिंग एसोशियेसन के सदस्य हैं। आपका एल्युमिनियम वायर तथा सर्कल का व्यवसाय है।

पता : महेश मेटल इन्डस्ट्रीज
278-ए, जी० टी० रोड़, श्री रामनगर, दिल्ली—32
दूरभाष : 203151

अग्रोहा तीर्थ के आजीवन सदस्य

गतांक से आगे

अ-718 श्री चतुर्भुज गर्ग
एस-35, पंचशील पार्क,
दिल्ली-110016

अ-719 श्री तेलूरामजी मैं अमर दाल मिल
2647, गली रघुनन्दन, नया बाजार,
दिल्ली-110006

अ-720 श्री हरीशंकर गोयल (चावल वाले)
मैं. कृष्णा ट्रेडिंग कं. गुर्री वालों का बाड़ा
दाल बाजार, लश्कर-ग्वालियर (म.प्र.)

अ-721 मैं. ओमप्रकाश सुरेन्द्र कुमार
524-ए लाहोरी गेट, नया बाजार,
दिल्ली-110006

अ-722 मैं. मोहन ट्रेडिंग कम्पनी
2146, तिलक बाजार, खारी बावली
दिल्ली-110006

अ-723 मै. कैमीकल डे. इन्टरप्राइजेज
180-ए, तिलक बाजार, खारी बावली
दिल्ली-110006

अ-724 श्री रामकिशन दास गुप्ता
2464, छोटा रंग महल, तिलक बाजार,
खारी बावली, दिल्ली-110006

अ-725 श्री सुरेशचन्द बंसल मैं. महेश मेटल इन्ड.
278-ए, जी. टी. रोड, श्रीराम नगर,
शाहदरा, दिल्ली-110032

अ-726 श्री श्यामा चरण गुप्ता
2-रामचन्द्र लेन, शंकराचार्य मार्ग,
सिविल लाइन्स, दिल्ली-110054

अ-727 श्री मनीराम गोयल
WZ-1, धर्मशाला बिल्डिंग,
पालम कालोनी, नई दिल्ली-110045

अ-728 श्री लाल चन्द गोयल
बी-II/7, मदनगीर
दिल्ली-110062

अ-729 श्री नन्दलाल हकीमजी
4/58, रूपनगर
दिल्ली-110007

अ-730 श्री गिरधारी लाल गुप्ता
गली सरेस वाली, तिलक बाजार,
खारी बावली, दिल्ली-110006

अ-731 मै. ओरेल रबड़ प्रा. लि.
155, तिलक बाजार, खारी बावली,
दिल्ली-110006

अ-732 श्री राजेश अग्रवाल
सुपुत्र श्री एस. एस. अग्रवाल,
19, राजपुर रोड, दिल्ली

अ-733 श्री रामसरन चन्द मित्तल, एडवोकेट
मोहल्ला फराशखाना,
नारनौल (हरियाणा) 123001

अ-734 श्री रोशन लाल अग्रवाल
मैं. अनन्त राम लक्ष्मणदास अग्रवाल
6692/1 खारी बावली, दिल्ली-110006

अ-735 श्री अशोक कुमार गुप्ता
21/20, शक्ति नगर,
दिल्ली-110007

अ-736 श्री विशम्भर दयाल अग्रवाल
21, बैतवा अपार्टमेंट, रोशनपुरा नाका
भोपाल (म. प्र.)

अ-737 श्री प्रबोध कुमार सुपुत्र श्री लक्ष्मीनारायण
सिंघल "सिंघल सदन" 22 हवामहल मार्ग
भोपाल (म.प्र.)

चुनाव सम्पन्न

दिल्ली : महाराजा अग्रसेन अग्रवाल आश्रम ट्रस्ट (रजि०) हरिद्वार का चुनाव 28/5/84 को अग्रवाल भवन शक्तिनगर दिल्ली में निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान	: श्री प्यारेलाल गोयल 20/11 शक्तिनगर दिल्ली-7
उप-प्रधान	: ला० इन्द्राजसिंह अग्रवाल श्रीश्याम गुप्ता श्री तिलकराज अग्रवाल (बम्बई) एवं श्री श्यामलाल गुप्ता
महामन्त्री	: श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल 19/7 शक्तिनगर, दिल्ली-7
मन्त्री	: श्री चन्द्रमोहन गुप्ता, श्री जे.एम. अग्रवाल श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता एवं श्री सन्तलाल ग्ता
कोषाध्यक्ष	: श्री रामसरन दास जिन्दल
कार्यालय सचिव	: श्री छुट्टन लाल गुप्ता
कार्यकारिणी सदस्य	: सर्वश्री रोशनलाल गुप्ता, राम तीर्थ गुप्ता, राम अवतार गुप्ता कीर्ति चन्द अग्रवाल, अमरनाथ दीवान, त्रिलोकचन्द बन्सल, पुरूषोत्तम गर्ग, रामकिशोर गोयल, जय नारायण मित्तल, काशीराम गुप्ता, दयाल चन्द गर्ग, जय भगवान, बाबूराम, ईश्बर चन्द, हरिशंकर गुप्ता ज्योति प्रसाद अग्रवाल, गोकल चन्द जी, ईश्वर चन्द गोयल, गोपी राम जी (मेरठ), एवं किशन चन्द जी

दिल्ली : श्री घीसासन्त धर्मार्थ ट्रस्ट (पं), शास्त्री नगर दिल्ली का चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी व सदस्य चुने गये।

श्री-श्री 108 स्वामी रघुबर दयाल, शास्त्रीजी ऋषिकेश		—अध्यक्ष
,, राजकुमार मित्तल	दिल्ली	—महामन्त्री
,, सूरजभान बंसल	,,	—उपाध्यक्ष
,, रामनिवास गुप्ता	,,	—सहसचिव
,, रूलिया राम जी	,,	—कोषाध्यक्ष
,, गोवर्धनदास सिंघल	,,	—सदस्य
,, लक्ष्छी राम गुप्ता	,,	—सदस्य

वैश्य सभा दक्षिण दिल्ली (पंजी०) का द्विवार्षिक अधिवेशन 27 मई 1984 वार रविवार प्रातः 8-30 बजे श्री दीनदयाल गोयल के निवास स्थान एम-20, ग्रेटर कैलाश-1 पर श्री रतनलाल गर्ग प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में सभा के अगामी दो वर्ष 1984-86 के लिये निम्नलिखित सदस्य, पदाधिकारी और कार्यकारिणी के सदस्य चुने गये।

संरक्षक	श्री मोहनलाल गर्ग
,,	,, अयोध्या प्रसाद अग्रवाल
,,	,, बिशन लाल गुप्ता
प्रधान	,, रतन लाल गर्ग आर-7 नेहरू इन्क्लेव कालकाजी
उपप्रधान	,, श्रीचन्द गर्ग डा० एन० सी० सिंघल
महामन्त्री	श्री देव कुमार जैन सी-74, ग्रेटर कैलाश न. दिल्ली
मन्त्री	,, बिशन स्वरूप गुप्ता
कोषाध्यक्ष	,, सतीशकुमार मित्तल
लेखा निरीक्षक	,, कृष्ण चन्द अग्रवाल

कार्यकारिणी सदस्य—सर्वश्री जगदीश गर्ग, शेरसैन गुप्ता, गोपीराम गुप्ता, चन्दुलाल गुप्ता प्रकाशचंद एडवोकेट, जयभगवान गोयल, बलवन्तराय मित्तल विनोद गुप्ता, जगन्नाथ गुप्ता, डा.वी. पी. गोयल, चेतराम गुप्ता, जयरामदास, करनल हरगुलाल, दिनेश कुमार अग्रवाल, रामेश्वरदास गुप्ता।

विशेष मनोनीत सदस्य—श्री कृष्णकुमार बंसल श्री प्रकाश चन्द, श्री बनारसी दास गुप्ता।

स्वास्थ्य चर्चा

सेहत के लिए गुणकारी ककड़ी व खीरा

डा० बिमला रानी
बिमला अस्पताल बुलन्दशहर
203009

1. ग्रीष्म ऋतु में ककड़ी व खीरा सेहत के लिए परम हितकारी हैं क्योंकि इनमें तरल पदार्थों की मात्रा अधिक रहती है इसलिए गर्मी में यह विशेषकर सेहत के लिए लाभप्रद है।

2. इनमें जल खनिज पदार्थ प्रोट्रान आयरन कैलसियम गन्धक, कार्वोहाइट्रेट विटामिन ए, बी, सी व आयोडीन रहता है।

3. चर्म रोगों के विनाश में इन दोनों का विशेष सहयोग रहता है। शरीर से विजातीय द्रव पदार्थों का निष्कासन करके शरीर के अन्दर सफाई रखते है और रक्त को साफ करते हैं।

4. खाने में ककड़ी, खीरे का प्रयोग सलाद के साथ किया जा सकता है। इनका पानी जो सलाद से निकल जाता है पीना भी बहुत हितकारी है यह मूत्र अधिक लाते हैं जो जरूरी है गर्मी की ऋतु में मूत्र का अधिक निष्कासन सेहत के लिए अच्छा है। ककड़ी खीरा नमक व नींबू मिलाकर बिना सलाद भी खा सकते हैं। खाने के बाद खायेंगे जो खाना कुछ खायेंगे जल्दी पचेगा और शीघ्र पचने से शरीर को शक्ति भी जल्दी मिलेगी।

5. कोष्ठ बद्ध यानि कब्जीयत् को भी खीरा ककड़ी दूर करते हैं उनका सेवन नित्य करने से आप स्वस्थ व निरोगी रहेंगे।

छपते-छपते

अग्रोहीतीर्थ के आजीवन सदस्य श्री सत्य नारायण सराफ, 23—बनारसीदास स्टेट तीमारपुर दिल्ली-7 का 30-32 वर्ष की अल्प आयू में गुर्दे में खराबी हो जाने के कारण दिनांक 4-7-84 को स्वर्गवास हो गया। आप बहुत ही सज्जन, मिलनसार व धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आप अपने पीछे दो छोटे भाई, पत्नि व एक पुत्र को छोड़ गये हैं। आपका लोहे का व्यापार था। आपके इस आकस्मिक निधन से परिवार को जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति असम्भव है।

अग्रोहातीर्थ परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं परिवार जनों को यह आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

श्री बनवारी लाल गुप्ता का तबादला

इलाहबाद बैंक सिन्धिया हाउस न.दिल्ली के चीफ मैनेजर श्री बनवारीलाल गुप्ता का मेरठ (उ०प्र०) शहर में तबादला हो गया है। वहाँ पर वह इलाहाबाद बैंक के मेरठ जोन के चीफ मैनेजर नियुक्त हुए हैं। □

अ. भा. अग्रवाल सम्मेलन नई दिल्ली का चुनाव

अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन नई दिल्ली की दिनांक 1/7/84 को वार्षिक साधारण सभा की बैठक में चुनाव अधिकारी श्री श्रीकिशन मोदीजी की देख रेख में निम्न पदाधिकारी अगामी वर्ष के चुने गये।

अध्यक्ष	—श्री बनारसी दास गुप्ता, भिवानी (हरियाणा)
वरिष्ठ उपाध्यक्ष	—श्रीमती स्वराज्यमणी अग्रवाल जबलपुर (म०प्र०)
महामंत्री	—श्री रामेश्वर दास गुप्त नई दिल्ली
उपमहामंत्री	—श्री विश्वबन्धु गुप्ता गुलावठी (उ०प्र०)
कोषाध्यक्ष	—श्री बलदेव कुमार गुप्ता लुधियाना (पंजाब)

शिक्षा का महत्व

एक जहाज हिन्दुस्तान से जापान जा रहा था। सभी लोग अपने आप में मस्त थे कोई खेल रहा था, कोई स्वीमिंग पुल में तैरने का आनंद ले रहा था तो कोई धूप सेक रहा था, इस प्रकार सभी अपनी यात्रा को सुखद एवं आनंददायी बनाने की कोशिश कर रहे थे।

किन्तु ऐसे उमंग और उत्साह भरे वातावरण में एक वृद्ध व्यक्ति दूर एकान्त में बैठा पुस्तक पढ़ रहा था। जब लोगों का ध्यान उस वृद्ध की ओर पड़ा तो उन्होंने देखा की वृद्ध अपनी एकांगो दुनिया में अपनी पुस्तक में ही मगन है। ऐसा लग रहा था जैसे उसे किसी से ताल्लुक ही नहीं है। जब लोगों को यह जानने की उत्सुकता बढ़ी की आखिर वह वृद्ध क्या पड़ रहा था तो वे सब उसके करीब गये एवं वृद्ध से बोले की आखिर आप ऐसा क्या पढ़ रहे है जो इतना रोचक और मनोरंजन है। वृद्ध व्यक्ति ने बताया कि में कोई रोचक या मनोरंजक बात नहीं पड़ रहा बल्कि इस पुस्तक के माध्यम से चीनी भाषा सीख रहा हू। वृद्ध की इस बात पर लोगों को और आश्चर्य हुआ की यह व्यक्ति इतना वृद्ध होते हुए भी चीनी भाषा सीख रहा है। अब इसके जीवन के कुछ ही वषं शेष है। लोगों ने वृद्ध से पूछा अब आप कुछ ही वर्ष और जी सकते है। फिर चीनी भाषा सीखने में समय क्यों नष्ट कर रहे है। वृद्ध ने बताया की जीवन में जितनी भी अच्छी और उपयोगी शिक्षा ग्रहण की जाय उतनी कम है। यह किसी को नहीं मालूम कि कौन-सी शिक्षा कब काम आ जाय। इतना कह कर वह वृद्ध व्यक्ति सबसे बेखबर होकर पुनः अपनी पुस्तक में खो गया।

मनीष अग्रवाल, नई सड़क
शाजापुर (म०प्र०)

अ० भा० अग्रवाल महासभा पंजी० द्वारा सेवा तथा सहायता कार्य

1. गत मई मास में अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा (पंजीकृत) दिल्ली-32 की ओर से दो सिलाई मशीनें जिला मुजफ्फरनगर निवासी दो अग्रवाल महिलाओं को आजीविका उपार्जन के लिये सुविधा जुटाने के कार्यक्रम के अन्तर्गत भेंट की गई।

2. एक अग्रवाल कन्या के विवाह में सहायता रूप में लगभग 2000/- की आर्थिक सहायता दिलाई गई।

3. एक विद्यार्थी को छात्रवृत्ति देने का विषय आगामी कायकारिणी के बिचाराधीन है।

वैद्य निरंजन लाल गौतम,
महामन्त्री
अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा (पंजीकृत)
दिल्ली-32।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित :

संस्थापित-1978

श्री अग्रसेन कोआपरेटिव अरबन थ्रिफ्ट एंड क्रेडिट सो. लि.

4/11, जय देव पार्क, नई दिल्ली-110026

बचत की आदत डालिए

अपनी बचत अपनी ही सोसायटी में जमा कराइये तथा आकर्षक ब्याज के साथ-साथ सोसायटी की उन्नति में सहयोग दीजिये।

सोसायटी की उन्नति एक दृष्टि में

वर्ष	सदस्य संख्या	शेयरमनी	ऋण की रकम	अनिवार्य जमाराशि	मियादी अमानत
30-6-82	520	2,32,350	9,08,950	93,925	3,41,430
30-6-83	1133	4,36,550	17,09,659	2,32,685	7,24,420
31-5-84	1684	6,38,420	23,60,320	3,04,255	9,94,478

□ एक वर्ष की जमा राशि पर 12% ब्याज प्राप्त कीजिए तथा ब्याज का भुगतान छमाहीं चक्रवृति दिया जाता है।

नन्दकिशोर गर्ग — प्रधान

रामेश्वरदास गुप्ता — महामन्त्री

बृजभूषण गुप्ता — कोषाध्यक्ष

शुभ कामनाओं सहित :

दूरभाष : 529103, 518654

टैण्ट, तिरपाल, कपड़ा एवं निवाड़ के विशेषज्ञ

हरियाणा टैक्सटाईल कारपोरेशन

तथा

हरियाणा निवाड़ एण्ड जनरल मिल्स

समस्त प्रकार के वस्त्र तथा निवाड़ के निर्माता एवं विक्रेता

□

६३, मालल बस्ती नई, दिल्ली-११०००५

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित :

संस्थापित-1978

श्री अग्रसेन कोआपरेटिव अरबन थ्रिफ्ट एंड क्रेडिट सो. लि.

4/11, जय देव पार्क, नई दिल्ली-110026

बचत की आदत डालिए

अपनी बचत अपनी ही सोसायटी में जमा कराइये तथा आकर्षक ब्याज के साथ-साथ सोसायटी की उन्नति में सहयोग दीजिये।

सोसायटी की उन्नति एक दृष्टि में

वर्ष	सदस्य संख्या	शेयरमनी	ऋण की रकम	अनिवार्य जमाराशि	मियादी अमानत
30-6-82	520	2,32,350	9,08,950	93,925	3,41,430
30-6-83	1133	4,36,550	17,09,659	2,32,685	7,24,420
31-5-84	1684	6,38,420	23,60,320	3,04,255	9,94,478

□ एक वर्ष की जमा राशि पर 12% ब्याज प्राप्त कीजिए तथा ब्याज का भुगतान छमाहीं चक्रवृति दिया जाता है।

नन्दकिशोर गर्ग — प्रधान

रामेश्वरदास गुप्ता — महामन्त्री

बृजभूषण गुप्ता — कोषाध्यक्ष

शुभ कामनाओं सहित :

दूरभाष : 529103, 518654

टैण्ट, तिरपाल, कपड़ा एवं निवाड़ के विशेषज्ञ

हरियाणा टैक्सटाईल कारपोरेशन

तथा

हरियाणा निवाड़ एण्ड जनरल मिल्स

समस्त प्रकार के वस्त्र तथा निवाड़ के निर्माता एवं विक्रेता

□

६३, मालल बस्ती नई, दिल्ली-११०००५

अनन्त में लीन हो गये

☐ वाराणसी : पूर्वी उत्तर प्रदेश प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष श्री श्याम मोहन अग्रवाल की पुत्री का 25/3/84 को अकस्मात स्वर्गवास हो गया।

☐ दिल्ली : अग्रोहातीर्थ के सदस्य श्री महेन्द्र कुमार अग्रवाल के पूज्य बाबाजी लाला मनोहर लाल जी का 23/5/84 को स्वर्गवास हो गया।

☐ नई दिल्ली : महाराजा अग्रसेन अग्रवाल आश्रम ट्रस्ट, हरिद्वार के महामंत्री श्री लक्ष्मी नारायण अग्रवाल एडवोकेट के पूज्य पिताजी लाला चन्द्र भान जी का 93 वर्ष की आयु में 28/5/84 को स्वर्गवास हो गया।

☐ नई दिल्ली : अग्रोहातीर्थ के आजीवन सदस्य, अ० भारतीय अग्रवाल महासभा के कोषाध्यक्ष एवं वैश्य कोआपरेटिव कमर्शियल बैंक के उप-

प्रधान डा० श्री इन्द्र सेन जी गुप्ता का निधन 29 मई 1984 को प्रातः 6 बजे अपने निवास स्थान, 535- मल्टोला पहाड़गंज, दिल्ली-55 पर हो गया। वे 72 वर्ष के थे। आपका संपूर्ण जीवन पीड़ित जनो की सेवा में व्यतीत हुआ। वे मिलनसार और सेवाभावी भद्र पुरुष थे।

डा० श्री इन्द्र सेन जी निम्नांकित संस्थाओं से आजीवन सम्बद्ध रहे और समाज सेवा में अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते रहे।—

1. सेन्ट जोन्स एम्बूलेंस एसोसियेशन, दिल्ली
2. इन्द्रप्रस्थीय वालन्टियर बोर्ड,
3. श्री धार्मिक लीला कमेटी,
4. नागरिक सुरक्षा
5. वैश्य कोआपरेटिव कोमर्शियल बैंक, दिल्ली
6. अ० भा० अग्रवाल महासभा, दिल्ली
7. बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल सभा दिल्ली
8. शिक्षा तथा विधवा सहायता कोष ट्रस्ट, दिल्ली

डा० श्री इन्द्र सेन जी गुप्त के आदर्श थे :—

1. मानव-मानव के काम आये,
2. मानव समाज में सद्भाव, देश प्रेम, और भाईचारा उत्पन्न हो,
3. स्वयंसेवक वह जो निस्वार्थ, अनुशासित, रह कर जन सेवा करे,
4. समाज से कुप्रथाएं दूर हों।
5. असहाय की सेवा ही धर्म है।

डा० इन्द्र सेन जी इन आदर्शों पर आजीवन अडिग रहे।

☐ दिल्ली : कार्यकारी पार्षद (स्वस्थ्य) श्री बंशी लाल चौहान के पौत्र चि० भानु सुपुत्र श्री राजेन्द्र चौहान का एक दुर्घटना में एक्सीडेन्ट हो जाने से 3/6/84 को स्वर्गवास हो गया।

अग्रोहातीर्थ परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह दिवगंत आत्माओं को शान्ति प्रदान करे तथा उनके परिवार जनों को यह आघात सहन करने की शक्ति देवे।

हरियाणा स्वास्थ्य मंडल

2/26, पूर्वी पंजाबीबाग, नई दिल्ली-110026
अग्रवाल बगीची ट्रस्ट (रजि०) दिल्ली

शपथ-पत्र

हम हरियाणा स्वास्थ्य मण्डल के सदस्य अपनी अन्तर्आत्मा की आवाज पर निम्न नियमों पर चलने की शपथ लेते हैं :—

1. हम अपने पुत्रों तथा पौत्रों का रिश्ता लेते समय वधू-पक्ष से किसी प्रकार के दहेज की मांग नहीं करेंगे।

2. हम वधू की गोद भरने की रस्म के लिए पच्चीस व्यक्तियों से अधिक नहीं ले जाएंगे।

3. अपने पुत्रों तथा पोत्रों की बारात में एकसौ से अधिक बाराती नहीं ले जाएंगे।

4. हम बारातियों को मदिरा आदि पेश नहीं करेंगे।

5. वधू-पक्ष की ओर से आए सामान का दिखावा नहीं करेंगे।

जहाँ हम उपरोक्त पंचशील पर चलने का पूरी ईमानदारी से प्रण लेते हैं। वहां अपने अन्य बन्धुओं, सम्बन्धियों एवम् मित्रों से भी इस पंचशील पर चलने का निवेदन करते हैं।

प्रण एवं निवेदन कर्ता सहाचरण हरियाणा स्वास्थ्य मंडल

ईश्वर चन्द गोयल
ओम प्रकाश गर्ग
कली राम बन्सल
कशतुरी लाल सिगंल
चौ० केहर सिह
कृष्ण लाल बन्सल
जय भगवान
दयाल चन्द गर्ग
धर्मपाल गर्ग
चौ० धर्म सिह
नन्द किशोर
धनश्याम दास गोयल
नेमी चन्द जैन
पाती राम
प्रीतम चन्द गोयल
प्रेम प्रकाश
फूल चन्द गर्ग
बजरंग लाल डालमिया
वीर भान गर्ग
बसन्त लाल जैन
भगत राम
मनसा राम मित्तल
मनी राम गर्ग
मौजी राम जैन
मांगे राम गर्ग
मोहन लाल गुप्ता
चौ० विमल कुमार
सत्यदेव गोयल
सुखबीर सिह जैन
सुमेर चन्द जैन
सुलेख चन्द जैन
हुकम चन्द
हरी किशन गर्ग
हरी नारायण

नृत्य व मद्यपान रहित आदर्श विवाह

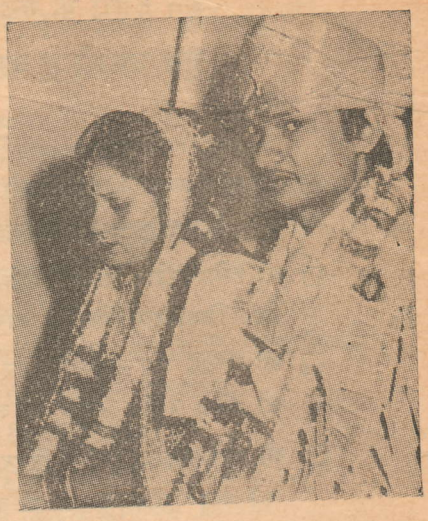

लाला हुकमचन्द गुप्ता के पौत्र एवं अग्रोहातीर्थ के अतिथि सम्पादक, सुप्रसिद्ध समाज सेवी तथा अग्रवाल कवि श्री विष्णु चन्द्र गुप्त के सुपुत्र चि० महेशचन्द गुप्ता का पाणीग्रहण संस्कार आयु० सत्या सुपुत्री श्री गौरी शंकर गुप्ता माउन्ट आबू निवासी के साथ दिनांक 22/4/84 को सम्पन्न हुआ। वैवाहिक कार्यक्रम में श्री गुप्त जी की कथनी और करनी में सामंजस्य दिखाई देता था। शोभा यात्रा में मद्यपान, नृत्य व भंगड़ा बिल्कुल भी नहीं था। बाजों में केवल शहनाई और ताशा सम्मिलित था। उसके साथ बड़ी शालीनता से बाराती शहनाई की धुनों का आनन्द लेते हुए चल रहे थे। भंगड़ा एवं मद्यपान रहित इस विवाह की लोगों ने प्रशंसा की।

●

☐ लाला हुकमचन्द गुप्ता के पौत्र एवं श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, त्रिनगर के सुपुत्र चि० रवीन्द्र कुमार गुप्ता का शुभ विवाह आयु० ललिता सुपुत्री श्री मनिराम गोयल, पालम निवासी के साथदि० ६ मई ८४ को सम्पन्न हुआ। ○

अग्रोहा तीर्थ परिवार उनके सफल दाम्पत्य जीवन के दीर्घायु की कामना करता हुआ नव दम्पत्ति को आशीर्वाद प्रदान करता है।

बाल मंडल

राष्ट्रीय पुष्प

देश	राष्ट्रीय पुष्प	देश	राष्ट्रीय पुष्प
भारत	कमल	बंगला देश	शप्ला
इंगलैंड	गुलाब	ईरान	लिन्डेन
चीन	नरगिस	हालैन्ड	टुलिप
जापान	एडेलवीस	मैक्सिको	कैवटस
कनाडा	सेंपल लीफ	स्विटजरलैंड	किथेमम
फ्रान्स	लिली	स्पेन	रेड कार्नसं
अमेरिका	गोल्डन राड	यूनान	लौरल

संग्रहकर्त्ता--सूरज अग्रवाल, भोपाल (म०प्र०)

वैश्य अग्रवालों द्वारा संचालित पत्र-पत्रिकाओं की सूची

गतांक से आगे

२१. श्री कृष्ण गोपाल मित्तल, सम्पादक
"प्रायश्चित" (मासिक)
३०७२, प्रताप स्ट्रीट, दरिया गंज, नई दिल्ली-२

२२. श्री भरत गुप्ता, सम्पादक
"जन-सनजीवन" (मासिक)
जे-५३, अशोक विहार फेस-I, दिल्ली-५२

२३. श्री कल्याण चन्द गुप्ता, सम्पादक
"समिति" (मासिक)
११-ए, राउज एवेन्यु, नई दिल्ली-१

२४. श्री निरंजन लाल गौतम, सम्पादक
"अग्रोहा ज्योति" (मासिक)
७/२८ ज्वाला नगर, गौतम मार्ग, शाहदरा
दिल्ली-३२

२५. श्री रमेश कुमार गुप्त, सम्पादक
'वैश्य जागृत ज्योति' (मासिक)
१८९३, बेहराम बेग स्ट्रीट, लाल कुआँ, दिल्ली-६

२६. श्री सुशील अग्रवाल, सम्पादक
'श्रोतावाणी' (मासिक)
१७०/ए-२ मोतिया बाग, दिल्ली-५४

२७. श्री दुर्गा प्रसाद अग्रवाल, सम्पादक
'संसार के गौरव महाराजा अग्रसेन' (मासिक)
५/२७४ आर. के. पुरम, नई दिल्ली-२२

२८. श्री सुरेश कुमार गुप्ता, सम्पादक
'आप के विचार' (मासिक)
२२३७, गली अनार, दरीबा, दिल्ली-६

२९. श्री ओम प्रकाश गोयल, सम्पादक
'दया धर्म' (मासिक)
४, हरिजन बस्ती, न्यू रोहतक रोड, नई दिल्ली-५

३०. श्री विनोद गुप्ता, सम्पादक
'दिल्ली प्रगति' (मासिक)
४४१८, मन्दिर वाली गली, पहाड़ी धीरज,
दिल्ली-६

३१. श्री प्रवीण प्रकाश सिंघल, सम्पादक
'हर एक' (मासिक)
६०३५, गली समोसन, फ़ाशखाना, दिल्ली-६

३२. श्रीमती शकुन्तला गुप्ता, सम्पादिका
'क्रीडा लोक' (मासिक)
१९०१, गली लेसुआ, बाजार सीताराम, दिल्ली-६

३३. श्री एस. एन. महाजन, सम्पादक
'महाजन मित्र' (मासिक)
जे-५/२ कृष्ण नगर, नई दिल्ली-५

३४. श्री विनय बिन्दल, सम्पादक
'युवा प्रवतन' (मासिक)
जी-१७७, सर्वोदय एन्कलेव, नई दिल्ली-१७

३५. श्री गोविन्द राम अग्रवाल, सम्पादक
'अग्रवाल समाचार' (मासिक)
२४/९, शक्ति नगर, दिल्ली-७

३६. श्री पदम सिंह जैन, सम्पादक
'जायसवाल जैन' (मासिक)
एम-६५, आब्जवेटरी कम्पाउन्ड, लोदी रोड,
नई दिल्ली-३

३७. श्री बाबू राम बंसल, सम्पादक
'श्याम परिवार पत्रिका' (मासिक)
११३६, छत्ता मदन गोपाल, दिल्ली-६

३८. श्रीमती ऊषा सिंघल, सम्पादक
'विवाहिक दुनिया' (मासिक)
जे-३२, लाजपत नगर-III, नई दिल्ली-२४

३९. श्री द्वारका प्रसाद विजय, सम्पादक
'युवा विजयवर्गीय' (मासिक)
४२१२, तेल मन्डी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-५५

४०. श्री मोहन लाल गुप्ता, सम्पादक
'सरचना' (मासिक)
४२२६ ए/१ अन्सारी रोड, दरिया गंज
नई दिल्ली-२

४१. श्री गौरी नन्दन सिंघल, सम्पादक
'समग्र' (द्वि-मासिक)
१६५५-५६, हरगोविन्द नगर, बहादुर गढ़ रोड
दिल्ली-६

४२. श्री सुरेन्द्र अग्रवाल, सम्पादक
'श्री हरिकथा' (त्रै-मासिक)
१५, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड,
नई दिल्ली-३

४३. श्री सम्पादक
'समाज ज्योति' (त्रै-मासिक)
न्यू मारवाड़ी कटरा, नई सड़क, दिल्ली-६

४४. श्री सम्पादक
'अग्रवाल पत्रिका' ( )
ए-३/१५८ पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३

४५. श्री केसरवानी वैश्य सभा
'केसर' ( )
४०६, कटरा मेदग्रान, दिल्ली-६

४६. श्री शिव कुमार गोयल, सम्पादक
'हिन्दुस्तान समाचार'
नई दिल्ली-१

४७. श्री राम भरोसे गर्ग, सम्पादक
'अग्रवाल पत्रिका' (मासिक)
एन. डी. १८, पीतमपुरा, दिल्ली-३४

४८. श्री कैलाशचन्द गुप्ता, सम्पादक
"नगर दर्शन" (साप्ताहिक)
१५, ट्रांसपोर्ट सेन्टर, रोहतक रोड,
जनरल स्टोर, दिल्ली-११००३५

४९. श्री गिरधारी लाल जालान, सम्पादक
"कुलपालि" (साप्ताहिक)
५७६४-जोगी वाड़ा, नई सड़क
दिल्ली-६

(अगले अंक में हरियाणा व पंजाब)

शुभ कामनाओं सहित--

उत्तम प्रकाश बंसल

(प्रोपर्टी डीलर्स)

एवं

परिवार

निवास :
24, श्री राम मार्ग,
दिल्ली-1 0054
दूरभाष : 235294

कार्यालय :
15, टौपीटल बिल्डिंग,
कनाट सर्कस
नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 322153, 322081

घूस का घूँसा

राधा रानी, विमला भवन, बुलन्दशहर

आज रिश्वत का हर ओर बोलवाला है। हर काम बिना पैसे नहीं होता चाहे जायज ही क्यों ना हो। हर इन्सान की रगों में पैसे का मोल बट गया, हो भी क्यों न महंगाई पर जब रोक नहीं तो घरके खर्च चलाने के लिए हम लोग कहाँ से रुपया लायें। अगर महंगाई रुक जाती तो पैसे का मूल्य घटता भी नहीं इतना, जितना हो गया है सभी परेशान हैं फिर भी काम नहीं चलता।

1. न्याय बिक रहा है अन्याय खरीदा जा रहा है।

2. मरडर डकौयती के केश पैसा देकर छूट जाते हैं।

3. असली जुर्म करने वालों पर पुलिस भी पैसा पाकर नजर नहीं डालती, निर्दोष फँसते हैं।

4. अस्पतालों की अच्छी दवायें स्टोरों पर बिक जाती हैं। मरीजों को क्या मिलेगीं।

5. डाक्टर लोग बड़ी-बड़ी सेलरी पाने वाले बेल-गाँव कर्मचारी कर्तव्यों को भुला बैठे पैसे के लिए।

6. विभागों में टैन्डर खोलकर कम मूल्य के बनवा कर पास कर दिये जाते हैं पैसा लेकर तभी इमारतें लिफाफा बनती हैं। ये भारत में देन हैं।

7. डाक विभाग वाले ओवर टाइम के चक्कर में रहते हैं तार भी पत्रों से देर में पहुँचते हैं।

8. अधिक टेलीफून करने वालों के बिल कम और कम करने वालों का बिल ज्यादा कमाल है।

9. पैसा दो इम्तहान के नम्बर बढ़वा लो और मेह-नती छात्र पीछे रह जाते हैं पैसे की जीत है।

10. बिजली विभाग में बिजली की कटौती बढ़ती जा रही है किन्तु मिनिमम चार्ज उतना ही है। अधिक बिजली खर्च करने वालों के बिल कम रहते हैं।

11. मेरे मामा जी जज हैं उनके यहां 302/307 का केस था जिस दिन फैसला होना था पहले दिन फोन आया साहब 50 हजार ले लो या फिर जान से हाथ धो बैठोगे। मामा जी ने केस ट्रान्सफर करा दिया ये रिश्वत का घूंसा बड़ी ताकत रखता है।

मेघावी छात्र

अग्रोहा तीर्थ ने अगस्त अंक में अग्रवाल मेघावी छात्र-छात्राओं के चित्र उनकी संक्षिप्त जानकारी सहित प्रकाशित करने का निश्चय किया है अत: सम्बन्धित विद्यार्थी निम्न कूपन भरकर 14 जुलाई तक निम्न पत्ते पर भेजने की कृपा करें।

मेघावी छात्र कूपन

नाम..... सुपुत्र/सुपुत्री.....

कक्षा जो उत्तीर्ण की .....

स्कूल जहाँ से उत्तीर्ण की.....

प्राप्तांक का प्रतिशत.....

कक्षा/शाला/प्रेवीण सूची के स्थान.....

विशेष योग्यता के विषय.....

सम्पर्क पता : .....

.....

.....

भेजने का पता—

घनश्याम दास गुप्ता
23, बेनजीर क्वाटर्स, परिबाजार
गोलधर, भोपाल (म० प्र०)

दहेज दिखावा बन्द कीजिए !

शुभकामनाओं सहित :-

Phone : 770775, 773251 Grams : OPTIKINDA

सब प्रकार के अत्युत्तम क्वालिटी के

SUPROL ®

OPHTALMIC LENSES

उचित मूल्यों पर उपलब्ध हैं

- White and Tinted A_2, B_1, B_2, Calobar, Sp_2, Sp_4, Sp_9, Sp_{10} etc. Planos. Sphero-Cylindricals Plano-Cylindricals, Comsound in 50 to 70 mm dia with complete series.
- Photo-Gray Extra, Photo-Brown Extra, Photogry, Photo-Sun brown & latest shades in photo-Chromatic Plano & Powered Lenses up to 70 mm in complete range.
- White, Pink, Photosun Photography, and Photo-Brown Extra, Fused Biofocals Stright—top 'D' Bifocals Trifocals,

निर्माता :—

इण्डियन आप्टीकल कं.

मालिक—राधाकृष्ण गुप्ता

१११-माडल बस्ती, नई दिल्ली-११०००५

●●

सहयोगी संस्थान

इण्डियन ट्रेड इन्टरनेशनल

निर्यात सम्बन्धी जानकारी के लिए हमारे निर्यात विभाग से सम्पर्क करें।

D(DN) 1067 RN/16412

With Best Compliments From :

Phone : Offi. 511523
Resi. 514710
514454

Factory : RAI, SONEPAT
Gram : ALUMINIUM

JOTI PARSHAD OM PARKASH

MANUFACTURERS & EXPORTERS

BANKERS, METAL MERCHANTS & COMMISSION AGENTS

STAINLESS STEEL, BRASS & COPPER ART WARES MANUFACTURERS

365, SADAR BAZAR, DELHI - 11 00 06.

卐

Associates :

Phones : 344512, 561159
332373. 572937

Cable : SHIVLEHRI

JOTI PARSHAD OM PARKASH

METAL DISTRIBUTORS

159, KATARIA BUILDING GULALWADI, BOMBAY - 4

Phone : 5216 - 6222

Grams : ALUMINIUM

JOTI PARSHAD OM PARKASH

Brass Art Wares Manufacturers

A-95, GANDHI NAGAR, PRINCE ROAD, MURADABAD (U.P.)

Phone : 514454

JOTI STEELS (INDIA)

Manufacturers of : STAINLESS STEEL FANCY WARES

20th Mile, Jatheri Road, RAI. Distt. SONEPAT (Haryana)

अग्रोहा तीर्थ के सम्पादक व प्रकाशक चन्द्र मोहन गुप्ता द्वारा कमल प्रिन्टर्स, १८६२-६४/१९, कन्हैया नगर, त्रिनगर, दिल्ली-३५ से मुद्रित कराकर अपने कार्यालय ४४२१, नई सड़क, दिल्ली-६ से प्रकाशित किया।

मूल्य : प्रति कापी रु० १-५०